

प्रकाशक

महिला मण्डल

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावर्क संघ,

बारह गनगोर का रास्ता, जयपुर ।

रचनाकार

रिय महासती श्री जडावकरजी महाराज

मूल्य सवा रुपया

मुद्रक

जिनवाणी प्रिंटर्स
कोटे वालों का रास्ता,
जयपुर

अथ प्रारम्भ

[illegible]

श्री जैन धर्म उपदेशमाला

‘जीपरै नू सील्ल तयो बर सग ’बह एग

जीवै तू आप ज्यो नवकरा । और मत्र सब देखतारै मंत्र बहो
 नवकर । मान सहित मवीयस मजोरै खरदै पूरारो सार ॥ जीव
 १ ॥ और रंग फंगनारै एह किर्माबी रंग । गुण अनेक बला
 क्षियारै । म्यानी पांचमै अंग ॥ जीव २ ॥ सिवकर समपत
 सैरै ॥ सीसबंदी सुरसास ॥ मूषे मन समरस कर्योरै ॥ सप
 पद फुल-मास ॥ जी ३ ॥ अगनी बल गज सीपनोरै ॥ मूठ प्रेठ
 मय आप ॥ दुममस से सजन हूबैरे । बिप अमरत सम बाया । ४ ॥
 रोग सोग मय आपारै । दूर टहै ततकर ॥ बिद्वडिया बासा
 मिसेरै ॥ बंजर भोग रसास ॥ जी ५ ॥ मगता गुगता सीसता
 रै । आतम उजल बाए । तूटै बसू कर्म जैगनारै । अजर अमर

पद पाए ॥ जी. ६ ॥ इण लोकै मुख संपदारै ॥ परभव देव
विमाण । उत्कृष्टी भगति करै तो । पावै पद निरवाण ॥ जी. ७ ॥
इत्यादिक गुण छै गणारै । कया कठालग जाए । गावै निज मुख
सरस्वतीरै ॥ तोपिण पार न पाए ॥ जी० ८ ॥ १६ सैं ६३
भलो रै ॥ जैपर मे वरमाल ॥ जाप जपै जडावजीरै । कार्तिक
दीपकमाल ॥ जी. ९ ॥ इति ॥

चोर्वीमी का २४ पद

दोहा ॥ अरिहंत मिद्ध समरुं मदा । आचारज उवइभाय ।
गुण गाऊ जिनराजना । विघन हरो महाराज ॥ १ ॥ ढाल ॥
रसीयाना गीतनी ॥ पद १ ॥ अ तरजामी हो आढ जिणंद तूं,
तो सम अर न कोय हो ॥ सोभागी ॥ तू सिवदाता हो भिराता
जगतैमै दीज्यो दर्शण मोय हो । मो. । अ : २ ॥ आकडी : मा
मरुदेवा रो ओदर उपन्या । नाभि रायजीरा नंद हो । सो० ।
जुगल निवारण जननी तारै मा । प्रगत्या पूनम चढ हो । सो० ।
अ. २ ॥ कचनवरणी हो धनुष्य पांचसौ । दिप २ करती देह
हो ॥ सो ॥ लाखचौरासी रो पूरव आउखो । जाणै देखे तेह हो ॥
सो० ॥ अ. ३ ॥ प्रथम परण्या हो पढमणि प्रेमसू । प्रथम
बैठा राज हो ॥ सो ॥ एकसौ पुत्र दोए पुत्री भली । सार्या
आतम काज हो ॥ मो. ॥ अ ४ ॥ भोग तजीनै हो संजम
आढर्यो । कीनो पर उपगार हो । मो. । आढ करी जिन धर्म
दीपावियो ॥ तीरथ थाप्या चार हो० । मो. ॥ अ ॥ ५ ॥
बीस हजार हो मुनि मुगतै गया ॥ समणी मैस चालीस हो । सो

कवल सेन हो करअ सीव कर्पा । जग तरख जगदीस हो ।
 सोमाः अतर ६ ॥ सोत्रीस अतिशय हो । मासी ३५ से ॥
 इन्द्रय गुण मरपुर हो । सो । नित २ होज्यो हमारी दंशा । पोह
 उगते घर हो । सो अतर ७ ॥ प्रथम रात्रा हो प्रथम मुनिकर
 । इक्ष्वाकु भरत मोमर हो ॥ सो ॥ प्रथम तीर्थ कर प्रथम केवली ।
 सोम्या मुगत द्वापर हो ॥ सो ॥ अतर ८ ॥ सुमत १६ से हो ।
 माहा सुच १३ नै । जैपुर सपकल हो ॥ सो ॥ बे कर बोड़ी
 हो बंदै अडावजी । करज्यो हमारी सार हो ॥ सो ॥ अतर ९
 ॥ इति ॥

॥ पद २ ॥

जंघुडीप रा भरतमे ॥ अशोण्या विन्यात ॥ अजत नमो जित-
 सभू राय तु मै पिता । विजिपादे तु म मात । अत्र धार्कडीः १ ॥
 तीन म्यान साथ लिया ॥ उदग्बस्या नर मातै । बीत करी
 बननी तखी । नरपत दीस्या बासी ॥ अत्र २ ॥ जनम ययो
 जिनराजनो । अजतै दीया तख नांमै ॥ अ ॥ मोग तखी संजमै
 लियो । पोहोत्या अविचल ठामै ॥ अत्र ३ ॥ मुखदछ साबे
 दुषा । सारै रया दुखदाए । अ ॥ धर्मनै फन छेपियो । पापी
 दिया छिद्रअय ॥ अत्र ४ ॥ तु म सरिखा मोए टालसी । ता क स
 तारबाहर ॥ अ ॥ बिरद विधारी आपरो । मारी बेगीन्योसर ॥
 ॥ अ ५ ॥ कै म्हासायत सांपडी कै मुअ करम फठेर । अ दिबडा
 ज्यो अबसर नहीं । तो राखीज्यो बाडीसी ठोर ॥ अ ६ ॥
 मपिएछू अफवा नहीं । सो तुम देवो बताय ॥ अ धीरअ घर
 करखी कर । मनको अम मिटाय ॥ अ ७ । तीर्थकर दीबडा

नहीं । इण दुपमी आरा मांय ॥ अ. अतिसै नाणी छे नही । मैं
किणनै पूछू जाय ॥ अ. ८ ॥ १६ सै वरसे ५३ नै ॥ वद पद
कागण मास ॥ अ. ॥ जैपुर मांए जडावजी ॥ एम करै अरदास ॥
॥ अज ॥ ६ ॥

पद ३ ॥ राग पिचकारी नी

रे जिन संभव साचो ॥ वा प्रभूकूँ अब जांचोरै ॥ जी. आ. १ ॥
लेवो सरण मरण नहीं आवै किम नट थडने नाचोरै ॥ जि. २ ॥
नरय जितारथ । सैन्या राणी । तम सुत चरण चित राचोरै ॥ जि.
३ ॥ इंद्र जालरा ख्याल जगतमै ॥ ते किम जाण्यो सांचोरै ॥ जि.
४ ॥ अल्प दिनाकी है जिनग्यानी ॥ क्याने करमरस पाचोरै ॥
जि. ५ ॥ सब स्वारथ के न्याती गोती ॥ मोए ममत मत माचोरै ॥
जि० ६ ॥ ओ सी जाण आण मन समता छोड कूटंमको लांचोरै ॥
जि. ७ ॥ तज अग्यान नैत्रसूँ ॥ करम कागद तुम बांचोरै ॥ जि.
८ ॥ अब ही चेत देत गरु हेला ॥ जाण जगत सुख काचोरै ॥ जि.
९ ॥ ५३ नै साल जडाव जैपुर मे । प्रभूजी मुज कर बांचोरै ॥ जि.
१० ॥ इति ॥

पद ४ ॥ लावणी

धन ४ जवूकवरजी जोवन मे समता । नगरी अजोध्या भली
विराजै । कचन कोटकी ओट सही । सुंदर मंदिर बाग
वावडी । चौरामी बाजार कही ॥ सम्वर राजा इडकदीवाजा ॥
सिधारथ पटनार भइ । श्री अभिनदण नाथ निरजण । भव
दुख भजण आप सही ॥ आकडी. १ ॥ तसू कूखै तुम आण

उफन्या तीन म्यान से लार मही ॥ अउके सुपना रखनी अतै दखी
 अननी हरप मई ॥ तेढ़ाया पंडित परमात ॥ सुपन अर्थ सब बात
 कही ॥ भी २ ॥ तुम कुल मंडण अगि कुल खंडख ॥ अष्ट कर्महु
 जीत सही ॥ रात्र कज्र कर संजम लेसी ॥ डेरा दसी मुगत मई ॥
 सुख सुख पाया बोल बघाया ॥ दान मान द साख दई ॥ भी ३ ॥
 गरम अकड़ पूरा कर अन्मा ॥ तुम बला तुम बार सही ॥ चोपठ
 इद्र क्यन कु वारी ॥ हिंस मिल मंगल गाय रही ॥ पांच रुपकर
 मरु ऊपर ॥ जिगमिग बोली लाग रही ॥ भी ४ ॥ बाल प्याल
 कर बोवन बपमें, परण्या पदमख नार सही ॥ रात्र पात्र बिहसी
 अग लीला, भोग रोग नम आंस सई ॥ कर डिडवाइ रीष
 छीटकरई ॥ एक बरस लग दान दई ॥ भी ५ ॥ चोयै ग्यान लियो
 जब संजम ॥ प्रम नरम होय करम दई ॥ कवल ग्यान ने केवल
 दशख ॥ लोखलोक प्रकस मई ॥ तीरय थाप्या कर्मते अप्या ॥
 सन्म जरा कोई मरख नहीं ॥ भी ६ ॥ ३४ स अतिशय
 पैंतास बाखी तुम सम नाखा अवर नहीं । संशय छेद कियो
 पित निरमल । समकित जोत प्रकस मई । कई अनारी पार
 उवारी कजर सारी मुगत सई ॥ भी ७ ॥ उगार वार निज
 आतम ॥ साध साखी लार छत्र मुगत पचायो कजर साया ।
 अजर अमर पद धान सही । तीन लोक के मस्तक ऊपर । जोत
 में जोत प्रकस मई ॥ भी ८ ॥ समत १६ से बरस ५३ नै ।
 । प्रभू मझिना शुख पार नहीं ॥ पिब सबसेस देस जैपुर में ॥
 जाइ लाखी अड़ा कइ । फागख बइ १२ स रविवारै । दर्शन
 दीजो आप सही ॥ भी ८ ॥

पद ॥ ५ ॥ देसी सहेल्यांए आंबो मोडीयो

श्री सुमत जिनेसर बंदीए । कर जोडी हो नीचो कर सीस कै-
 विघन टलै ममपत मिलै । सुखसाता हो पामै सूं जगीस कै ॥
 सुं. १ ॥ आंकडी ॥ कुसलपुरी नगरी भली तिहां सोमै हो मेघ-
 रथ राजान कै । आंण अखडत तेहनी । प्रजा पालै हो । निज पूत्र
 मान के ॥ सूं. २ ॥ तस राणी मंगलावती, जिन जायो हो त्रिलोकी
 नाथ कै । सुरनर नित पाए पडै । अ ग मोडी हो जोडी दोए हाथ
 कै ॥ सूं. ३ ॥ दिन उ गै हरष बधावणा ज्यारै सायकहो । श्री
 सुमत जिणदके । दूजा देव मनावैता । किम भटको हो भूख
 मतिमद कै ॥ सूं. ४ ॥ आगै कदे देख्या नहीं । जो देख्यां तो नहीं
 पायो मर्म कै ॥ सुगुरुसे डरतो रयो कुगुरु घाल्यो हो । मिथ्यात्वरो
 भ्रम कै ॥ सू. ५ ॥ काल अनता भटकतां ॥ अवकै मिलिया हो ।
 तू साचो देव कै । चर्ण ममीपे राखज्यो । कर जोडी हो सारुं
 नीतसेव कै ॥ सू. ६ ॥ जगतना देव डरावणा । केड वैठा हो स्त्री ले
 मग के ॥ शस्त्र विविध प्रकारना । रुठा टूठा हो कर रंग
 निग क ॥ सू. ७ ॥ जोग मुद्रा प्रभू आपरी । भवि पामै हो
 देख्या वैराग कै ॥ राग द्वेष जिणमे नहीं । सांचा जाण्या हो ।
 मोइ बीतराग कै ॥ सू. ८ । १६ मै वरसै ५३ नै । जैपुर मांड
 हो । फागण षड बीजकै ॥ टीज्यो दर्शन जडावनै ॥ भरपाइ होए
 मोटीरीज कै ॥ सू. ९ ॥

पद ॥ ६ ॥ देशी जवाड मानै प्यारां लागौजी

कुसुमपुरी नगरी भली । प्रभूजी हो श्रीवर राग उदारोरै ।

पदमप्रभू प्राख अघारोरै । होषी मानै अिम जाखो सिम वारोरै ।
 आंकड़ी १ ॥ सममाद पटराखो । प्र । तुम कुवे अरतारोरै
 ॥ प २ ॥ अग सुख जाण्या करमा । प्र । लानो संजम मारोरै
 ॥ पद ३ ॥ अजर अमर पदवी लह । प्र । सकल कियो अरता-
 रोरै ॥ पद ४ ॥ सिखरमखीरा मायमा ॥ प्र ॥ अविचल प्रीत
 बधारोरै ॥ पद ५ ॥ तुम माता तुम ही पिता । प्र । तुम ही अत
 हमारोरै ॥ पद ६ ॥ खाना जात गुलामनै । प्र । अिम जाखो
 सिम वारोरै । पद ७ । अँपुर मोए जकारैरी । प्र । बिनतड़ी
 अरवारोरै ॥ पद ८ ॥

पद ७ ॥ देसी रीढमलरी

बाजारसी नगरी बलाख । बी प्रभूखो । प्रतिमैश राय
 सुजाख । हे राखी पोमावती माता तुम कशीए । हाए । देव
 निरंजखोए । मर दुख मंजखोए । सुपारसनख आंकड़ी १ ॥
 रुखियो मै तो बल अनंत । बी० । अजय न आयो मर अत । हे
 म्हेर करनै सनमुख राखन्योए । हाए ॥ २ ॥ तूही निरंजख
 दीनदयाल । बी । मेरो मारी मरदुख बाल । हे खेरक जंभानै ।
 सरखे राखन्योए । हाए ॥ ३ ॥ हूँ अनादि अपम अनाथ जी ।
 दुरबल बाखी राखो निन साथ । हे बल सागीन करस्यु पाकरीए ।
 हाए पाकरीए । हाए ॥ ४ ॥ पाउ दखल अवर न जाए । बी ।
 पुदगल भरमै मिटाए । हे अर उतारो मोह मर पाकरीए । हाए
 ॥ ५ ॥ अतम अनुमै कितै ममाथ । बी । दशन चारित्र म्याने
 अराथ । हे दुकम दुखै तो हाजर होबस्युए । हाए । ६ । म्हा सरीखा

नहीं आवैं थांकी ढाए । जी० । तोपीण थांरीठोरैं बताए । हे दूर रही
ने सनमुख जोवस्यूं । हाएँ ॥ ७ ॥ कुधातु कनक सम थाए । जी० ।
पथर पारस नाम धराए । हे हूतो माख्यापत । पारस ध्यावस्यूं ।
हाएँ ॥ ८ ॥ १६ सैं ५३ नैं । सुखकार । जी० । माहा सुढ जैपुर
१२ म रविवार ॥ हे पारमसू प्रमन्न थावो जडावसू । हाएँ ॥ ९ ॥

पद ८, देसीं डफकीं

चढा प्रभू । चढा प्रभू । सरण होज्यो तेरो । च० । आकडी ।
॥ १ ॥ लोक एकमैं तपत जोतकी । सकल प्रकास चढ केरो । चं० ।
॥ २ ॥ म्हासीणराए लिखमा पटनारी । अंगजात तूँतिणकेरो
। चं० । ॥ ३ ॥ नाम लियां नवनिधि घर आवैं । भजन किया
मिटै भवफेरो । च० ॥ ४ ॥ सरप मिंघ अगनी जल केरो । भूत-
पिमाच टलैं चैरो । च० ॥ ५ ॥ सात वीमन अरु पाप अठारा ।
करकैं भजन तीरैं तेरो । च० ॥ ६ ॥ संकटमाहे सरण तियारो ।
जो तुम नाम जपै गैरो । च० ॥ ७ ॥ माए मनोरथ चढ पीवणरो ।
पग लछण चढ केरो ॥ च ॥ ८ ॥ तिणथी नाम चढजिण
थाप्यो । जनक जात मिल मत्र तेरो । च० ॥ ९ ॥ १६ म ५३ न
तेरस नैं । म्हासीण सुढ पद केरो । च० ॥ १० ॥ जैपरमाए जडाव
कहत है । अब तो न्याव करो मेरो । च० ॥ ११ ॥

पद ९, देशी भीलारी

प्रभू जी नममा सुगग थकी चव नगमत्र पायो हो । श्री
सुवध जिणढ । नान ग्यान ले जननी क खे आयाहो । जिणढ ।
आकडी० ॥ १ ॥ प्र० आकडी सुगरीधराधिप गया हो । श्री० ।

बचदै सुपना देख रामा सुत बांया हो । जि० ॥ २ ॥ प्र० । चौसठ
 इन्द्र मिस कर मोखर आया हो । भी० । छपन हुबारी इस २
 मंगल गायो हो । जि० ॥ ३ ॥ प्र० । पनुष्य एकसौ काया । उबस-
 बरबी हो । भी० । संश्रम होन करिनी उत्तम करबी हो । जि० ४ ॥
 प्र० ॥ मनहो मारो मित्तवानै । उमायोहो । भी० । तन मन
 प्रसै । मिस आयो नहीं आवैहो ॥ जि० ॥ प्र० ॥
 दीन्यो दर्शय मोर कछु नहीं भाठ हो । भी०
 महस सहस कर । फिर पाखी नहीं भाठ हो । जि० ॥ ६ ॥
 प्र० । सुबध सुबध दाता अगधीवन मिराल हो ॥ भी० ॥ जे तुम
 भ्याता ते पारै सुखसताहो । जि० ७ । प्र० । महा सुद पुनम
 ५६ ने । जैपुर बासो हो । भी० । जिनगुण गत्या । पाय्पा परम
 हुतासोहो । जि० ८ । प्र० । बे कर कोइ नडाव करै । मोर
 तरो हो । भी० । मवसागरमें मरुत पार उतारो हो ॥ जि० ९ ॥

पद । १० । सीतलजिन २ सार करो मेरी

डीहसिख राय नंदा पटराखी । हात्री प्रभू जन्म दीपो धन मा
 वेरी ॥ सी १ ॥ लफट मिटाई जनक तन फेरी । हा । गम
 धर्म मा कर फेरी ॥ सी २ ॥ सिखपी नाम सीतल जिन बाप्यो
 । हा ॥ गुबने पैसो मै मारी ॥ सी ३ ॥ अनम मरख की
 छाय पुम्भयो ॥ हा ॥ धग मिठ पुन मव फेरी ॥ सी ४ ॥ सात
 कर्म की सीन्या सखीने । हात्री : मोहमहिपत मोर लियो गेरी
 ॥ सी ५ ॥ मै बलाहीन मोहमहिपत भोत दुख पख ॥ हा ।
 तुम लग आब न दी बेरी ॥ सी ६ ॥ १६ सै १६ न तेरस मै

। हा. । अवीर गुलाल उडै घैरी ॥ सी. ७ ॥ चावत दर्शन जडाव
जैप्रमै । हा. नहींतो बतावो । मुक्तिकी सेरी ॥ सी० ८ ॥ इतनी
अर्ज गरजमै कीनी । हा. कै राखो चरणारी चेरी ॥ सी० ९ ॥

पद ॥ ११ । देसी मोत्यांरो गजरो भूली

सिहपूरी सुखकारो । विनराज । विनय दिनारों । सुभ बेला
सुभ बारो । तस्रं कूष लियो अवतारो । स्रंणो भव प्राणी श्री
हंस भजो बरनांणी । आंकडीः १ ॥ मात पिता सुख पाया । सुभ
सुपन बिलोकी जाया । इंद्र चोस्ट मिल आया । इंद्र राण्यां मंगल
गाया । सु. २ ॥ आतम अनुभव चीनो । तज भोग जोग तुम
लीनो । समग सुधारस पीनो । लियो केवल ग्यान नवीनो सुभ
३ ॥ लोकालोक उजासो । कियो घाती कर्मनो नासो । जोतमें जोत
प्रकासो । तिहां देखो जगत तमासो । सु. ४ ॥ तूं देवन को देवो ।
एक चीत करुं तुम सेवो । निज चरणामे लेवो । मुजै मुगतरीजमै
देवो । सु. ५ ॥ कुगुरूको भरमायो । मन हिंसा धर्म बतायो । काल
अनंत गमायो । अजू तुम दर्शन नहीं पायो । सु. ६ ॥ पुदगलको
रस पाको । मै तो जन्म मरण कर थाको । दर्शन होसी थांको ।
जद मिटसी रूत्वो माको । सु. ७ ॥ थें छो पर उपगारी । अब
राखो लाज हमारी । चाउं सेव तुमारी । मै तो भर पाहरीजवारी ।
सु. ८ ॥ १६ से ५३ नै बढ फागण १४ स दिनै । कवे जडाव
ते धनै । तुम ध्यान धरै एक मनै । सु. ९ ॥

पद ॥ १२ । राग मोटीं जगसे मौवणी

वासपुज्य जिन बंदीए । जीकाइ कर जोदी हो उठी प्रमात ।

दर्शन ज्योता दिल बसै । अब दीज्योहो किरपा कर नाम आकड़ी
॥ १ तुम मात तुम ही पिता । बीर्य तुम आता हो । भुज प्रास
आधार । तुम बिन देख न दूसरो । इस जगमें हो कइ तारख
हार ॥ बा. २ ॥ कर्मभेन चितामखि ॥ बीर्य, मनबंदीय हो
५ पूर पुनजोग ॥ सेतो सुख ससारना ॥ बां बूझ हो सुधरे परलोग
॥ बा. ३ ॥ मगसागर में मगसा ॥ दर्शन करहो देखीयो मोर ।
नाच किया मैं नशानबा ॥ नखा तिम हो रीजाबा छोर ॥ बा
४ ॥ ज्यों सुष साधना ॥ बीर्य देपीन हो सुख नाटक नाच ॥ तो
तुम राखो तुम कनै ॥ नित रहस्यु हो चरखामै राख ॥ बा ५ ॥
कै दुख पाया दपनै ॥ बीर्य ॥ तो कइ दोहो ह अब मत नाच ॥
रीज खीज दोन्यु मसी । नहीं नाच हो माल तुम बांच ॥ बा ६ ॥
पुन्यहीन करणी बिना ॥ मगूसी हो मनोरथ मास । पिछ
तुम बिरह बीष्यारन । पूरिज्यो हो सही दीनदपास ॥ बा. ७ ॥
तारै निर्म आतमा ॥ बीर्य बिन करखी हो इय तारख हार ॥
कनी इतनी बिनती ॥ तुम भागै हो सान्यो बिहार ॥ बा. ८ ॥
१६ से १३ न ॥ मसो ॥ बीर्य दिन इसमी हो बड़ फगस
मास ॥ जेपुरमाए बड़ाधनै ॥ राखीज्यो हो चरखारी दास ॥ बा
९ ॥ इति

॥ पद ॥ १३ ॥ देसी यदघर ताल लागीरै ॥

बिमल मत दीजियी कर किरपा भुज साम ॥ पटे
नही भुज आपसी ॥ खस लेता न सागी दास ॥ बिमल दिन
देवे हमारे सागै प्रासज्यु प्यारो ॥ बा १ ॥ कर्मभेमोम-

शीजी। लग रहे तणोताण ॥ किण वीद साजू हाजरी ॥ मानै
 नहीं आवै अवमाण ॥ वी० २ ॥ चाकर मांगे चाकरीजी ॥ ठाकर
 मांगे काम बिना रुजगारनी चाकरी ॥ तुम क्युनी कराओ स्याम
 ॥ वी० ३ ॥ गुणवतानै तारस्योजी । तो कांड आसान । पापी पलै
 पलै लागियो अव आपै वधाओ मान ॥ वी. ४ ॥ धनमै धन
 सब कूडताजी ॥ ए जगमै वीरहार ॥ निरधनस्रं नेह दाखवो ए
 उत्तम घर आचार ॥ वी. ५ ॥ दिया अछता ओलंभाजी ॥
 खमज्यो वारमवार ॥ सेवट तारै आतमा । पिण आप छो
 साखीदार ॥ वी ६ ॥ सुण सुख पाया सामजी ॥ तो मुक्त
 करोरीजवार ॥ खीज्या तो खिज मर्तै करो ॥ कैकाडो संसारस्र वारै
 ॥ वी. ॥ कीनी इतनी निनतीजी । भावै जाणमजाण ॥ १६ सै ५३ नै
 भलोजी ॥ जैपुर सेपै काल ॥ फागण वद १ मै टीनै । प्रभू नामै
 मगल माल ॥ वी ६ ॥

पद ॥ १४ ॥ देसीनगरी काकंदी हो मुनीसर आइए

जमवती राणी हो ॥ जिनेसर ॥ माता तुमै पीता ॥ सिंहस्थ
 नामै भूपाल ॥ सुण सुखदाता हो जगत विख्याता हो ॥ श्री०
 जिन ॥ अनत जिणद तु ॥ आ १ ॥ तुम सम ग्याता हो ॥ श्री०
 नही इण भरतमे दुपमी पचम काल ॥ सु० ॥ २ ॥ मनमे उमावो
 हो । श्री० नित पामै रहूँ । पिण मुज कर्म कठोर ॥ सु० ३ ॥
 सलाहा रुता हो श्री० थाम मिलणेरी ॥ बिच २ कर रैया जोड ॥
 सु० ४ ॥ सगत अनती हो ॥ श्री० ॥ तुम हम सारैपी ॥ अतर
 मेरु समान ॥ ॥ सु० ५ ॥ इचरज मोटो हो ॥ श्री० टोटो भज

सैम ॥ रुस रया मगवान ॥ सु० ६ ॥ मैं अपराधी हो ॥ भी० ॥
 नाभी हुपै सया । नहीं पड़ी समकित छत्र ॥ सु० ७ ॥ माफ
 करीजे हो ॥ अभिनय असातना ॥ साथ अम्यानी अवृद्ध ॥ सु०
 ८ ॥ समत १६ से हो ॥ भी ॥ बड़ अमावस्या ॥ ५३ नै ।
 पद्मगण मास ॥ सु० ६ ॥ जेपुर माण हो भी साथ बड़ावने ॥
 निब घरपारी बी दास ॥ सु० १० ॥

पद ॥ १५ ॥ देसी आज सहरमै जीहजामारु सीप

धर्म जिनसर हु ब हीबटै बसो ॥ भूसु नहीं खीण मात । सूरि
 जिन ठठठ बैठा सुबत बागीठा ॥ पाद करु दिनरात ॥ भी ॥ घ०
 आंझड़ी ॥ १ ॥ पुदगल बेरी ओ हु ब केटै पडयो ॥ मीठो ठय
 दुख-दाय ॥ सु० सानीवकरी हो ॥ तुम सरस्वता हुपै । तो देठ
 हूँ हटाय ॥ सु० ॥ घ० २ ॥ बिब सिध आगे हो । करिय
 हृन्नामदी । फट मराव काज । छ । गरब न सारी हो निब
 गुण भूतियो ॥ ते दुख सन्के आज ॥ छ ॥ घ० ३ ॥ राग ने
 बेठ दानु पोखिया । बीबी पारै कमाय ॥ छ ॥ आठ घरमरो
 ओ बेरो लागीयो ॥ मिलन न दे म्हाराय ॥ छ ॥ घमजी
 ४ ॥ तन मन सरसैहो ॥ दशन देखवा ॥ बरस रया हु ब नैब
 ॥ छ ॥ सरदबीषा तो हम पातै नहीं ॥ किन्तु बिच आठ सीस
 ॥ छ ॥ घ० ५ ॥ पंद बकोरा ओ मोरा मोहपय ॥
 पतिवरता पति जेम ॥ छ ॥ इय बिद पाठ ओ दर्शय आपरो ॥
 पिब आइसे केम ॥ छ ॥ घ ६ ॥ बीना बिलाय ओ बिब
 पेर तुम कनै ॥ कर कल्या कीरपाल ॥ छ ॥ बीजे दशम परसन

होयनै ॥ सेरग सामो जाण ॥ छं ॥ ध० ७ ॥ तुंम निरहै दिन
दोरा नाथजी ॥ खीण जायै छै मास ॥ छं ॥ पतलीचाछै ओ
पाणी खमै नहीं निस दिन जाय उदास ॥ छ ॥ ध० ८ ॥
ममत १६ से ओ वरस ५३ न भलो । फागण सुध पस गीज ॥
छ ॥ जैपुर माए ओ जोडी जडागजी ॥ सुंण लीज्यो धर
रीज ॥ छ ॥ ध० ९ ॥

॥ पद १६ ॥ राग पंथीडा वात कहूं धुर छेहनैरै ॥

सरणो हो सरणो सत जिणढनोरे ॥ दीज्यो भव २ मायरे ॥
कीजे हो २ किरपानाथजीरे ॥ लीज्यो चरणा मायरै ॥ सरणो,
आकडी, १ ॥ नगरी हो नागपुरी रलीयामणीरे ॥ वसुसैण
भोपालरे ॥ अचलारे २ तस्र पटरागणीरे ॥ सु दीर रूप रसालरे
॥ स. २ ॥ स्वारथरे २ सीध त्रिमाणथीरे ॥ विलसी सुर
सुखसारहे ॥ चवनैरे आया मानव लोकैमेरे ॥ तीन ग्यान ले
लाररे ॥ सुखभररे २ सथी सेजमैरे ॥ जननी पाछली
रातरे ॥ सुपनारे २ चन्दै देखीयारे ॥ फल पूछ्यो
प्रभातरै ॥ स ४ ॥ भाखेर २ बाणी अमी समीरे ॥ होसी पुत्र
उदाररे ॥ उभयरे २ कुल उजवालैणोरे ॥ निज पर तारणहाररे
॥ स ५ ॥ जनमतरे मत हुई निज देममेरे ॥ मिरगीमार
निवाररे ॥ सूतकरे २ कारज सहकियोरे ॥ मिल कर छपन-
कुवाररे ॥ स. ६ ॥ चोष्टरे २ इद्र पदारियारे ॥ ले गया मेरुं
मजाररे उछवरे २ बहु त्रिद साचव्योरे ॥ जनीता जनक अपाररे ॥
सर. ॥ पोषीरै २ निज प्रवारनैरे ॥ पूरी मन की खतरे ॥ सउ

मिहारे २ कीपी विज्यारहार ॥ नाम दियो भी संतरे ॥ स ८ ॥
 बालकरे बालपथै लीला करीरे ॥ बरस २५ स हमाररे ॥
 सीप्यारे २ कज्जा बोहतकरे ॥ परण्या पद्मस नाररे ॥ स ९ ॥
 घाप्यारे २ पाट पिता तहार ॥ पदवी पाद दोहर ॥ ध्यारबरे
 ध्यार मिण्या छ हो बसीर ॥ लीन्यो आगम बोपर ॥ स १० ॥
 चित्तसीर २ सुख संसारनारे ॥ मिस्त लोकिटक देवर ॥ बोत्तरे २
 ये कर बोझनेरे ॥ न्यो सज्जम सै मेवर ॥ स ॥ ११ ॥ बरसीरे
 २ दानव द करेरे ॥ बोग लीयो बगनाधरे ॥ बौबोर २ म्यान
 सेद करीरे १ बड़ो पुत्र निज सापर ॥ स १२ ॥ तपज्य २ २
 करी सत्तेखवार ॥ धायो निरमल ध्यानरे ॥ धासीरे २ करम
 खपायनर ॥ पाया केवल म्यानरे ॥ स १३ ॥ कवलरे २ प्रज्या
 पासनर ॥ बरस २५ स हमाररे ॥ तीररे २ सुष करतावियारे ॥
 पोल्या सुगत मबाररे ॥ स १४ ॥ संवतरे १६ से ५३ मत्तोर ।
 मैपुर शहर मन्हारर ॥ संतव रे २ जपे ब्रह्मजीरे ॥ बसंत पंचम
 सनवाररे ॥ मर १५ ॥

पद १७ राग बेगे पदारो मैल्यी

कु थ जिनेसर नित नम् । न्यामै गुथ धनत । गावै निज
 सुख सरस्वती । तोह न आवै भस ॥ कु भाकजी १ ॥ सखद रूप
 रम गंध नहीं । नहीं फल नहीं मेद । देख्य रचना आपरी । मो
 मन अधिक उमेद ॥ कु २ ॥ ग्यान दीपक घट्ये नहीं । नहीं
 इय खेन समाव । तुम तरीखी करखी नहीं । किज निष देख
 आय ॥ कु ३ ॥ राग बेग होतु नहीं । मोए करम सियो बीत

सुण कोपियोजी । किण तेडाया भूपाल । जाग्रो निज २ थानभां
 जी । नहीं प्रणाउं मारी बाल । मल० ७ ॥ मानभंग नृप चींतवैजी ।
 मणरा कर दिया सेर । महीला पुरी तिण अवसरेजी । घेर लीवी
 चौफेर । मल० ८ ॥ आपण जाणण गेकीयाजी । चिन्तातुर राजान ।
 दी धीरज निज तातनै जी । उदै महाप्रलवान । मल० ९ ॥ निज
 प्रकारे पुतलीजी । कचनमय रच लीन । भोजन गरस भरी हृतीजी ।
 उपगमू ढकढीन । मल० १० ॥ न्यारा २ तेडियाजी । चोज करी
 राजान । भाल सहित चित्रमालमेजी । बँटाया दे सनमान । मल०
 ११ ॥ मिणगारी मा पृतलीजी । देवी विस्मय थाय । एवी नहीं
 कोड अमतगीजी । तीन लोकरे माय । मल० १२ ॥ अति आसक्त
 जाणी करीजी । दूर फियौ ते दाट । निरुमी दूरगध आरुगीजी ।
 तुरत गयो मन फाट ॥ मल० १३ ॥ प्रतिरोध्या श्री मुख थकीजी ।
 अपमर देखी ताम । मत राचो डण रूपमैजी नार नरकनो ठाम ।
 मल० १४ ॥ वेगगी मजम लीयोजी । मुक्त गया जिन मंग ।
 जैपुर मांय जडावनैजी । थाग दर्शणगे उछरग । मल० १५ ॥
 १६ म वरम ५३नजी । फागण सुदी पखमाय । गुण गाया जिन
 राजनाजी । सूनता मिप्रमख थाय ॥ मल० १६ ॥

पद २०

राग अवकै पीयर जाउ थारै कडाकड तीलाउंरे खटमल
 सुवादै । राजगिरी सुखकारी । गटमिंद्र पोलैप्रकारी । मनडा मेरारे
 हारे म मु मो व्रत जिन भेग । मुनी । तुम टालो भन २ फेरा ।
 मुनी० ॥ १ ॥ सुमित्ररायकुलटीको । पोमाकोननणनीको

॥ म २ ॥ म्यान अनंत प्रद्योतो । तुम देखो अगत उमातो
 ॥ म ३ ॥ त ददनको दबा । मे पाठ भरखली सेवा । म० ४ ॥
 म्मो मन मिलन उमातो । म ध्यान भर सुख भावा ॥ म ५ ॥
 सार करो दिव मारी । मपानात तु मारी ॥ म० ६ ॥ म तु मन
 नहीं ए पिछ्छण्यो । मे पच कुलरो ताण्यो ॥ म ॥ म० ७ ॥
 १६ म सुपवासो । सैपुर में प्रम हुआसो ॥ म० ८ ॥ ५३ न
 फारा मासो । जड़ाव करी अरदासो ॥ म० ९ ॥

पद २६ देशी कर हारे नीरु नागरवेल

बीजरथ राजा तुम पिताजी । कांइ बिजियादे तुम मात ।
 चक्रे सुपना दलनजी । कांइ । जाया तिरसोकी नाथ । जीसुखधरी
 मारा नमिष बीजद जिवांन बाया होए आखद । आकड़ी
 ॥ १ ॥ वृ तारक विह लाकमेंजी । कांइ तु म सम अवर न कोए ।
 अदुसत रचना आपराजी कांइ । सुखता इचरजमोए । जी० २ ॥
 मन प्रसै मिलबा मखीजी कांइ । प्रसरा देखन नैख । किम
 प्रसातो मोमखी ॥ जी कांइ । मिलकर मांवासेख । जी ॥ ३
 मोए मिथ्यात अम्यानताजी कांइ । मारा निप्रगुख बिबा क्षियाय ।
 परगुखमधि फसैरदि ॥ बि ॥ मोय आयो किख बिद बाय
 ॥ जी० ४ ॥ अनंत म्यान प्रमख करी । बि कांइ । देख रया
 जग मल्ल । मकड़ी प्रिम मांए फसीप्री ॥ मारै अच तो बग
 निफल ॥ जी ५ ॥ कएक प्रक्रम ह कर्या । बि कांइ । कएक
 आफ्नो साय ॥ तोकुमखा नहीं म्मार । जी । सही सीवै बंझ
 कए ॥ अ० ६ ॥ एह मनोरथ माहारा । जी कांइ । गीमान

कुसम सम होए । निरधन जे जे चिन्तै । जी कांठ । ते ते
 निरफल होय ॥ जी० ७ ॥ ओछी पूंजी पायन मैं तो बात क्रियो
 घोषार ॥ सेठ मिल्या तुम माग्या जी । मारी । करता रह्यो
 सार ॥ जी० ८ ॥ १६ म वस ५३ न । जी कांठ । जैपुर फागण
 माम ॥ कीमन पल तीथ ३ न जी । अग्र पुरो जडावनी
 ग्राम ॥ जी० ९ ॥

॥ पद ॥ २२ ॥ देसी नाथ कैसे गजको फंद छुड़ायो:

नेम प्रभु रापो मरण तुमारी ॥ एही अरज हमारी ॥ ने ॥
 आरुडी ॥ समद गीजे नरपें मोरीपुरको, सेमाको नदन नीको ।
 भवदुख भजण नाथ निगजन जादव कुल मिर टीको ॥ ने० ॥ १ ॥
 तुम निन देव अनेरा जगत में । ते मुज दाय न आवैं ॥ छोड़
 इमरत फल डाडम दाखा । नीवोली कुंण खावैं ॥ ने० ॥ २ ॥
 फिरत अनाड गड भव ० में ॥ दुखको छेय न पायो । दीन
 दयाल फिरपाल मिल्या तू । अगके अग्रमर आयो ॥ ने० ॥ ३ ॥
 ह मतहीन दीन तू समरथ ॥ जालो गाय हमारी ॥ भवदधि
 माए । दृप्त मारो ॥ अपनो गिद गिचारी ॥ ने० ॥ ४ ॥
 तू ही तात मात अरु भिराता ॥ तू ही मैणमगेनो । तू सुखदायक
 मग गिद लायक । प्यारो नेम नगीनो ॥ ने० ॥ ५ ॥ घरकी
 नार तार जम लीनो ॥ अपनो कारज कीनो ॥ हमकूँ विसार
 मार नहीं कीनी ॥ यो अपजम किम लीनो ॥ ने० ॥ ६ ॥
 मण ओलभा मभाल करीजे ॥ तू मायक मोभारी ॥ अब ही
 तार सार कर मोरी भागदशा हम जागी ॥ ने० ॥ ७ ॥

१६स ४३न महा महीनै ॥ छत्रन सातम सोमवारो ॥ मैपुर
मंथ बड़ाव वषट है ॥ नाम प्रभू एक धारो ॥ ने० ॥ ८ ॥

॥पदा॥२३॥ देसी मेंदी तो धावण धन गई॥

सुगरीरा हो गाढा मास्त्री राय रतनक बाग मेंदी राखरी ।
आसवसैय छुत अस्तया उपगरी हो जिनबरजी । कइ मोमाद-
बीरा नन्द । भीजिनप्यारो छे । कइ प्रभू पासबिर्बद ।
मोवनणरो छै ॥ आकरी ॥१॥ राजलीला सुख भोगरी ॥उपा॥
कइ छीनो सवम मार ॥भी २॥ कवलम्यान प्रकसने ॥उपा॥
कइ पोया मुगच मोम्हार ॥भी ३॥ मवसागरमे भरमा ॥उ०॥
कइ भीनी अनन्ती बार ॥भी ४॥ छत्रन मेदन तरबना ॥उ ॥
कइ करत न आवै पार ॥भी ५॥ कठख करमम संचीया ॥उ ॥
कइ देख रयादो आप ॥भी ६॥ मायव बिरद बिप्यारनै ॥उ ॥
मारा कटो मवना पाप ॥भी ७॥ कमट कट निरमल कियो ॥उ०॥
कइ नाग ठवारखहार ॥ भी ८ ॥ मगत वीक्षल भगईत छो ॥उ०॥
मने दीज्यो मुगत मुछम ॥भी ९॥ १६स ४२समै ॥उ ॥
सोवाग पचमीर रात ॥भी १०॥ गुरबीबीरा प्रसादइ ॥उ ॥
मैं छोव्या दान्यू हाथ ॥भी ११॥ चौमासो नवासहरमैं ॥उ०॥
कइ बड़ाव कर भोड़ ॥भी १२॥ गुण गाथा प्रभूकी कथा
॥उ ॥ कइ पूग्या मनरा कोड़ ॥भी १३॥

॥पद २४॥ देसी हा कनैया कान पियारो ॥

महावीर सामखके स्वामी ॥ बार २ प्रखमू सिर नामी । उ लात्तो ।
दीज्यो मव २ सेपइव त् अंतरबामीरे ॥भीरा॥ आकरी ॥१॥

क्षत्रिकुण्ड नगरी सुखकारी ॥ राय सिधारथ तिमला नारी ॥
 पीतमसे प्यारी ॥३०॥ रतन कूँख तस धारणी । जस जगत
 मोभारीरे ॥वीरा॥२॥ सुख सेजा सुभ पवनज कोलै ॥ पीतम साथे
 कर रग रोलै ॥ चाकर दासी चवर ढोलै ॥३०॥ कइ सूती कइ
 जागती निज खाट हींडोलैरे ॥वीरा॥३॥ दसमा सूरग थकी चव
 आया ॥ सुपन चत्र दस जननी पाया ॥ सुंण सिधारथ हरप
 मचाया ॥३०॥ पींडित मुख म्हारायजी ॥ सब अरथ करीयारे
 ॥वीरा॥४॥ सुभ वेला सुभ मोरथ जाया ॥ चौण्ट इन्द्र मिल कर
 आया ॥ छपन कुवरीं मगल गाया ॥३०॥ पच रूप कर देवजी ।
 मेरू पर लायारे ॥वीरा॥५॥ भर २ कलस सरस वरसावै ।
 इन्द्र मन अनुकंपा ल्यावै ॥ बालक भै प्रभूजी दुख पावै ॥३०॥
 अग्रध ज्ञान जग भाण जाण निज सगत दीखावैरेः ॥वीरा॥६॥
 अनन्तवली अ गूठो चपे ॥ थर २ थर मेरूगीर कंपे ॥ महावीर
 सूरपत मुख भूपैः जोडै दोन्यू हाथ नाथ कर किरपा हमपैरे
 ॥वीरा॥७॥ वरम २८स रया गिरचारी ॥ दोय वरस निरलेप
 निव्यारी ॥ भोग रोग से मनमा टारी । ३० । मात पिता सुरगत
 गया । लियो मजम भारीरे ॥वीरा॥८॥ तीन ग्यान घरसे सग
 ल्याया ॥ मनप्रजे मजम ले पाया । म्हो राजासे जग मचाया
 ॥३०॥ तपस्या कर महावीरजी मत्र कर्म खपाया ॥वीरा॥९॥
 केवल ले तीरथ उरताया ॥ चवढै मग भये मुनिराया ॥ गौतम
 मनका भरम मिटाया ॥ मुगत गया बीरदमानजी ॥ सासण
 बरताया रे ॥वीरा॥१०॥ १६म ५३न मुखदाइ ॥ प्रथम जेष्ट जैपुर
 कै माइ ॥ बाल मुनि चोमासो ठाड ॥३०॥ जोड लावणी

बीरवी बड़ाव सुखादरे ॥ धीर ॥ ११ ॥

कलस ॥ अवतार सार बोधीस माइ । सासस तेनो बासीए ॥

परम्परए सुख सचंद माप्यो ॥ अरु पाठ परमावण ॥ १ ॥

श्री सिधनायक म्यानदायक ॥ पूज बीने महाराज ॥ कान

हुनी निप मेष पाए ॥ बालकद रीप रायए ॥ २ ॥ पूज रतन

समुदाय मांए ॥ रंभाजी हुवा दिनमयी ॥ तास सिसवी बडाव

जपे ॥ डाल बोधीसै मयी ॥ ३ ॥ शुष ओछी नहीं सोची ॥

बालक जू कर स्यास ए ॥ रस्व दीर्घ विज्यर नहीं ॥ बह जोड

करस उजमासए ॥ ४ ॥ डाल मिलती नहीं मिलती अधिक नूत

ममायण ॥ आयो होय ता कर दीज्यो ॥ मत कीज्यो उपहामण

॥ ५ ॥ समत श्री १६स करपा । ऊपर ५३न जोयपा । इषक ओछो

कवि सोचो ॥ मिछ्यादुखई मोपए ॥ ६ ॥ हाथ मोड़ी मान

मोड़ी ॥ नयन कर निज मीसए ॥ चौहम जिनकर ॥ कवि

विचारक ॥ गृ नो करो बगमीमए ॥ ७ ॥

॥ देसी गरणाइ हो हाली जा थारी भागडली ॥

रिपम अजित संभव अभिनदय ॥ सुमत फदम प्रभू प्यारा हो ॥

त्रिखद मारी जिनतडी ॥ सुख लीन्यो प्रमोदी मारी ॥ १ ॥ १ ॥

मारी निठ २ जेलो ॥ दुरगत हरी ठेलो हो ॥ ३ ॥ ३ ॥

अब मारी आगा मेलो हो ॥ ४ ॥ ४ ॥ सुपामचंद सुष सीतल ॥

श्रीईस बासपूज माराहो जि माख ग्यान जोपइ ईस खेलो हो

॥ ५ ॥ ५ ॥ विमल अखंत श्रीचर्म सत बी ॥ सत करी मुख

पाया हो वि ॥ मान निज करबामे सेन्योहो ॥ ६ ॥ ६ ॥

अरी मल्ली हुनी सुहृदजी ॥ मणजीवारै मन माया हो ॥ ७ ॥ ७ ॥

नमीए नेम पार्म महावीरजी । मायण मुध वरताया हो । जि० पि०
॥ ५ ॥ बहरमान गुण धरै गुणैमाला । जपता पाप पूलायैहो । जि.
वी० ॥ ६ ॥ १६ से ६१ ट एकादसी । दूजै जेठ यदी गुण गाथा हो
॥ जी. वी. ॥ ७ ॥ वे कर जोड जडाव जैपुरमै ॥ चरणा सीस नमाया
हो जि. वी ॥ ८ ॥

छद छपनी लीखतै सवैया इगतीसा ॥

प्रथम श्री अग्रहित नम्र । गुण द्वादशधारी । मिथ मरुल
भगवत । अष्ट गुण मोवै भारी । आचारज उवभाय । दो दो
पदवी पाट । मातृ सरन महत । विचारै दीप अढाई । विहरमान
यदू सदा । गुणधर गुणकी माल ॥ ग्यान द्रमण चारीवनो सरणो
होज्यो त्रिकाल ॥ १ ॥ पहला जाएँ वरण । दूसरै मात्रा लीजै ।
तीजै मुध उचार । चतुर्थे पद गुण लीजे । पाचव भारी हस्त्र ।
उटै चाल चलैजे । जेमो होय ममाम । तैमो आण धरीजे । ए
मान जाणया पिना कृपिता कृभी कोय । कहत जडाव जगतमै ।
लोक हमाट होय ॥ २ ॥ दोहा । इतना तो जाएँ नही । जोड
करण उजमाल । किण मिथ थद जडाव तू । कृपिता करो संभाल
॥ ३ ॥ छद छन्य । नाग चालै ले चलै । अपनी मकति नाय ।
पिनै बैल घोडा विनै । पारण माज तिगाय ॥ ४ ॥ ग्यानी छोडी
गरव । गुम्नै सीस नमानै । विधम लेनै ग्यान ॥ गुरुंछ
गुर गण जाये । देस प्रदेसा नाय जठै आडर पावै । भरी सभामै
बैठ सकको मन रीजाये । ग्यान भणया गुण छै वणा ।
मायुको मिणगार । जडाव कहै तिण कागणै । उग्रमरो अधिकार
॥ ५ ॥ देता दूणो बधै । लेता सोभा पावै । खरच्या खूटे नाय ।

परतो कठ न आवै । सांखा सेपो सार मार माहो नहीं लागै ॥
 देस प्रदेसां आय बठै रेबे सागै । भोर ठगारा न लागे । गुप्त
 खजानो सार । अढ़ाव कहै । भटमैं दीयो । कर सत्गुरु उपगार
 ॥ ६ ॥ सबैया देख्या । रथ फेर चले । हमसै न मिले । पशु
 ॥ ७ ॥ देख्य देख्य तोड़ टट । रही आन खुडी हलकार पडी । मय
 जाइके मन होत खट । हरी सार फीरे तू काँह काँह । अब तेस
 पडी तज आय कट । अढ़ाव कहै सति राखस पोखत । होउ
 वैरागन खोज बटा ॥ ७ ॥ अंशुविर्मगी । सखी कह सुण राज-
 मती । ऐसी बात करो कहाँ जाय पति । फिर आयत है बरा धीर
 धरो । नहीं आवंगै तो और बरो ॥ ८ ॥ सोच विचार सती हम
 पोखै । और पुरुष सदा बंदन तोखै । झूठ कटू नहीं कहै साची ।
 ऐसी बात कहै मत पाखी ॥ ९ ॥ एक छमजर दान अ दीनों ।
 सैस पुरुष साथे मत सीनों । थड गिनागी । ध्यान व कीनो ।
 केवल द्रव्य ध्यान नहीनो ॥ १० ॥ राखत सुख समता रस पीनो ।
 छोड़ गयो सुख नम नगीना । अफल बमारो । अब नही हार ।
 दो अग्यां सुख करत्र सार ॥ ११ ॥ संशय से पालै सुख खती ।
 पीर पैतल दूगल पहुँची अढ़ाव कहै बन २ सतबंती । अविश्रुत
 मेह कीयो मतवती ॥ १२ ॥ सबैया इतिहा । आनस आनै अ ग
 संग । महीलले मोयो । दिन रात ल ग्यान ॥ मनम प्रमादै
 खोयो । कोष तपनी नास । रोग तन ओषध खोयो । अयश्व
 बाई बस । मान पदिरा में मोयो । बरतो मार्ग दूरथी धम न धारै
 दान । मन चंचल निश्र गयी । ममतामैं खूज जाय ॥ १३ ॥ दोहा ।
 एहीच तेरे करीया । दूत अरर झूठ भार । अढ़ाव बस मराइमै ।

कह काठीया चोर ॥ १४ ॥ प्रथम खिम्या धरम । दूसरै लोभ न
 राखे । होवे सरल सभाव । मान मढ दूरा नाखै । हलको द्रवै
 भूठ मुखसँ नहीं भ खै । तप संजम सुध ग्यान । नील इमरत
 रस चाखै । ए दम धर्म अराधमी । ते गुरु लीज्यो धार ।
 जडाव निस्ते जाणीए ॥ तिरै सो तागणहार ॥ १५ ॥ जात तणो
 अंकार । गरव कुल बल को तोलै । लाभ हूवा चढै द्रप । पढीनै
 वाको बोलै । मोपै लेगो ग्यान । हागे मत जन्म अमोक्ष ।
 ठकुराईमैं जिल रयो । मढ छकीयो मण्डर । जडाव कहै सुण
 जीवडा । सिवसुख होमी दूर ॥ १६ ॥ एक कैं अणखोड । दूसरी
 लडै लडाई । तीजी लेवै नीद । चउथी करै वडाई । अदमिच
 उठै कोय । पूठ फेरीनै वैसे । सुखै तो सरध नाय । समझावै
 कैसे । घरको धधो छोडनै । मली हुई च्यार । जडाव कहै थे
 आयनै । कांड काडयो सार ॥ १७ ॥

छद कुंडलियां । बखाणकी त्यारी हुइ । भेली मिल कर च्यार ।
 माया बाणी मेलमी अब वाताको तार । अन करै केइ छाने
 छानै । केइ होय निसक वरजै तोई न मानै । सतगुरु बाणी
 बागरै । गावै गलोज ताण । जडाव कहै समझाय नै बाया सुणो
 बखाण ॥ १८ ॥ चेला चेली देखनै । कीज्यो चत्रु पिछाण ।
 जिस्या तिस्यानै मडता । रहमी खाचाताण ॥ १९ ॥ पछै नहीं
 लागै कारी । उपजावै अममात्र । आतमा होसी भारी । मेख
 लजासी लोक मै । होय गूणारी हाण । जडाव कहै सुख
 पामसी करमी चत्रु पिछाण ॥ २० ॥ पहली जोए विचारनै ।
 ममत करसी कोय । आद अंत निपजामसी तो सुख साता होय ।

तोय होयको मन मिल जायै । पूछे सुख दुख बात । खावै भर
 सुखावै । नह भिन मित्री कीस्यो । बैसो नीपख छार । बड़ा
 फरे सौमे नहीं । भिन पगड़ी सिधगार ॥२०॥ विरोध मत करो
 होय । प्रथम फजीती होय । बिगाडै दोन्यूह सोय । परमै
 ठगारै । नेहो फाई जायै नाय । बैठ सध दूर जाय । छेदयां
 निस फांसी खाय । तोडै प्रहाडै । लोक केर करै हास । कप कप
 होय नास । नरकमै पाय पास । जम फटै नाठरै । बगमै
 बड़ाव जाय । भिनख जनम पाय । बैठो अर गम खाय । मत
 करो राडर ॥२१॥ मान फरो मत मानपी । खीली गयो न कोय ।
 राख सरीखो राजवी । बैठो लंछ खोय । बैठो । सौकमै मह
 फजीती । मंदोदरी सती । सभसुख माखी दुती । बड़ा २ मैया
 हुह तो हुजा दुख मत । तीम खंडको अपिपति । मरथो फरावे
 हाय ॥२२॥ मान बकी माया पूरी । छनी छाय छगाय । मुख
 सगस्य मसमी हुयै । चोड दीखै नाय । चो । बुझैया किते
 अगनी । बड़ा २ नैबस किया । ऐसी माया ठगखी । मुख मीठी
 हीरवै फठय । भियसिखय मिल जाय । बड़ाव कर अंत्रवहै ।
 चोडै दीखैनाय ॥

सपैया ११ सा ॥ सोमपी लाज जाय । सोमपी मरबाद जाय ।
 सोमपी कृपस जाय । मूया खेली हारसी । धंषाधमै घाय ।
 सारो दीन करै हाय हाय । मोडी २ रोटी खाय । रात्यू पद
 पारसी । सभनख न्हे तोडै । हरामीछ हाय ओडै । फेज्जनक
 भाग होडै । मरसी कै मारसी । बगमाय घन ओह । माया
 प्रनाफ खह । फरख बड़ाव तह तिरसी कै तारसी ॥२४॥ समै

कर आतमा । भजो प्रमातमा । श्रंदो देवगरु वेह । भवजल
तारसी । अतिचार याद कर । पाप प्रदूर प्रहर । प्रभवसेती
डर लाग्यो दोष टारसी । कावगै आवसगै । पांचमेसु चित्त कर ।
छटै आवसगै । आगे पछखाण धारसी । आवसग कालो ।
काल क्रमाइ जाया लाल । कहत जडाव तेह जनम सुधारसी ॥२५॥
॥छंद धनाश्री॥ छाने चौडे लागे पाप । पछे करे पश्चाताप ।
हाय २ सेतो जन्म मिगाडोरे । गुरूपे आलोवे दोष । इण भव जावे
मोच । सणगार । पाघे थोक । नंका न लीगाररे । वैद गुरु एक
सार । साचा राजा नाडे तार । वैद रोग हारे । गुरु आतमा
उधाररे । द्रवसाल एक रुम । आव साले रुम रुम । कहत जडाव
हीइडा मुख साररे ॥२६॥

॥मंत्रया २३ सा । कहै लगुभी रात । सुणो तुम नाथ । करी
कहा रात । महा दु खकरी । जगमे भोर मच्यो हे सोर । वज्यो
तू चार तक्रे पर नारी । लाहा गइ बुध, रही नहीं सुध । करेंगे
बुध । लहेगे धमारा । कहत जडाव । भखमण ब लत । नहीं
मिटे जगमे नोमण हारी ॥२७॥ रावणराय ऋहे समभाय । मत
गनराय ए भील भिखारी । अपणो राज स्हाज सब आपणो ।
अपणो इलस कर ले कर लारी । आए खड़े रिण भूम धणी वण ।
लागत है ए भोड हमारी । देख करु धमसाण ॥ अणी प्रराखुं
सीत करु पटनारी । कहत जडाव भभीषण बोलत । कहा गइ
बधन अकल तारी ॥२८॥ कर आख्या लाल । फुलावत गाल ।
तिरसु लो भाल चढ़ाकर गोले । रे कगाल देउ क्या गाल । बके
ज्यू स्याल । बीर नहीं तू शत्रु तोले । है क्या माल करुपे

मान्ते । देखाठ क्यास । जातू कल हनुके ओले । अरु
 अङ्गार ममीपय बोसत । साध क्या मा मारत डोलै ॥२६॥
 संकपति कर जोड़ कहे । तुम राम सुखो अरु हमारी । न्यो
 सबसाय । करो यह रात्र । बरो तुम आस ही बात हमारी ।
 ए सुख बाण करो परमाय । खुले सुख लाय । निचे रिप मारी ।
 सीसकी बार फिरो मतलार । ए बाता मोए लागत ठारी ॥२७॥
 लिखमय राम कहे । सुख राख । क्यू कर बेठो खाँचा ठायी ।
 हु नर कोइ हजार करे ज्यो ॥ तोवे न कोइ सीत शास्त्री । छंफ
 सात्र नहीं बेअफस । बात कहे तू निबट बाखी । अरु अङ्गार
 सपी समजावे । मत खेचो अरु टूटत ठायी ॥२८॥ रसमोम
 पड़यो पठ देख मनोहर । साय फँसी भीम बरक बाला । सुष
 न रही तन भूलख की । टूठ गई मोहनकी माता । लिख एक
 अंतर केत मयो अरु । नखामे नील बह परनात्ता । चिरग
 पड़यो संसार समुद्र । इबत हे नर मारत बाला ॥२९॥ रह
 गये घाम निकल गये साम । पड़े रहे अम अरु रात्र रसात्ता ।
 सालतवास्त उठ तन आस । मया क्या क्यास । छुरे सब
 बाला । शंका गई सब बात । रही नही ओत । मया सुख बाला ।
 अरु अङ्गार सती हम बोले । छेठ बैराग तहु अंजाला ॥३०॥
 तनकी सिसना तनक । भोगसे निरपत बाध ॥ मनकी ममता बोले
 निहरो अरु न आये ॥ छपटे पल ९ मास ग्यान दिन बाग न
 पाये । हे कोई अगम अरु रसपर से मन समजावे । पाँच दिने
 उष बात है । पूछे कोडा कीस । फिर फिर फेरा खात है । ऐसा
 मन बेहोस ॥३१॥ किना विचार्या बचन । सजनक करी मत

घोलो । देख नफारो डाग । गांठ हीरनकी खोलो । बेचो मुंगे
मोल । ज्ञान तराजु तोलो । काल्यो धर्म ढलाल । लाभको
लाभो लेलो । भिन मतलब दुकता रहे । सो कीणही न मुग्राये ।
मीठा मधुर गेलता सबहीके मन भाया ॥३५॥ ए काया किरतार ।
मिली किम दुख देवाने । उठ सवार राड भरे खावारने । तप
जपधूँ नहीं प्यार । त्यार फेरे जानाने । खाली करने पेट/फेर
बैठे नावाने । चरचे तेल फुलेलधूँ सगके लागी कंड । जडाव
कायाकुंजडी । भिन मतलब मत छेड ॥३६॥

॥छद् धनाश्री॥ महा व्रत जती धर्म । सजम व्यावच विरचे ।
नाण तीननपे वारे । करोधादीक ४ हैं । चरण करण धार । सुमत
गुप्त लार । पडमा गारे भावना । डंढरी बिखटा रहे । पचीम प्रति
लेखणा । आरादीगवेखणा । कहत जडाव च्यार अभिगर उदार हैं।

सवैयो मवायो कीयो । धनामरी नाम दीयो । साधूजीरा
एकमो चालीस । गुण मारहे ॥३७॥ प्रथवी अपतेउ वाय । सात
सात लाख काय । चौडम लाख हरी । बैर विरुलंद्री विच्यारसी ।
नरक तिरजंच देव । चार चारलाख भेव । मनुम चत्रुदस । लाख
इम चौरामी । ज्यानै चापी चूरी होय । राग द्वेष कियो कोय ।
तीन कण्ठ तीन जोग । मित्री भाव कीजीए । अठार लाख चौइस
हजार । एकमोने गीम गार । कहत जडाव नित मिछिया दुकडं
दीजिए ॥ ३८ ॥ नरमाड दिल्लीकी । कण्डाड किमनगड । मरोड
मेढताकी । ठकुराड जोधपुर धारी हैं । रहण अजमेर । खाण
बीकानेर महर । कमाट फीलकते । मोज ममाइकी न्यारी हे ।
गभीरी गुजगत । उमीरी आगरे । वमी लाज मरजाद । मारवाड

देस प्यारी है । फइत बढ़ाव । यामे क्यो एक २ भाव । धीरुकी
 जन्म देख । सुरग पूरी हारी है ॥४६॥ एक करे गुण गीराम ।
 कहे प मोटा नाशी । एक बैदे प ठोठ । कहे छोरा बीम कासी ।
 एक नमाये सीम । दान देवे हित आसी । एक करे उपवास ।
 अठ नहीं घोरख पासी । दो इस्मक खेखवे । सोही साध मईत
 बढ़ाव कहे । तिरसी सही । कयमी मवनो अत ॥४७॥ मैह अपम
 अपार । माध करतार हमारी । जनम मरबकी खोड़ । खोड़ मोछ
 लागत खारी । ब्रा किरि खोफे । हेर पुन खोइ सारी । प्रबल
 धार पछाया । आत्मा करे मारी । यह अपसवा हो रही । पर
 गुणके परमार । बढ़ाव कहे कैसे तरे । पासी अदबीध भाव
 ॥४८॥ दान मान दीनो न । प्रह नाम न लीनो । धन धन कीनो
 दिन बचाइमें जाग है । पापमें प्रवीनो । उह दम बामे दीनो ।
 परल नगीनो । रोनी मोड़ी मोड़ी जात है । नरमव पायो । सब
 अकल गनायो । बेसो माइ पूछ आयो । फुल फूल जात है । पुन
 को खजानो लायो । हरख हरख स्मायो । फल ने कमायो । माय
 कासी होय जात है ॥४९॥ दानबी मान बदे । बग मित्र । सीसि
 फकी सीव संपत्त पावे । तप अपावत कम पुरावन भाव बकी
 सब । मरम पूछावे । दया धरे सबसे सम भाव । खिप्या सकल
 कहेस मिटावे । यह अटारी सुख होत बढ़ाव । मिथ सबहीमें भाव
 मिठावे ॥५०॥

॥ सबैया इकसीसा । प्रथम प्रवर्तापीत सूठ बोले सुख
 खात । जोरी करे आधी रात । हुसील मंगलसरे धन धान नहीं
 धोम । करोब मान माया लोम । राम धेक कलह । परतिर देवे

आलरे । पिसुन पराद नाद । बोले पगपगनाद । रीत अगति बदै ।
 होय सुखमालरे । माया मोमो मिथ्या जेल । ग्रं वचन देवे ठेल ।
 कहत जड़ाव । पाप दूरी देवो टालरे ॥ ४४ ॥ धर्म धर्म कीनो ।
 मर्म तो नही चीनो । फोगट जनम लीनो । गारे जिम पानरे ।
 कुगुरुका लाग्या कान । छोटी जाणे आसमान । ज्यां न देवे दान
 मान । चावे बीडां पानरे । हिंस्या करी धर्म जाण । खोटो मत
 लियो ताण आगीयाने केवे भाण । लागी एक धुनरे । नरमब
 पाया मो तो । गिणती न आया माया । कहत जड़ाव जिम अंक
 बिन सुनरे ॥ ४५ ॥ सागमें मिरदार मार । दोत तब कहीए ।
 जीव अजीव पिछाण पूनयी सुरगत जहए । पाप अठारा छोट ।
 आश्रयथी भारी धैए । मम्बर पद निरवाण । निरजरा दोमिद
 होइए । बंध थकी ले ताण । मोखाष्ट सत्र मुख लहए । ए नत्र
 तत्व ओलखे । मोइ जवरी भाण । जडावनीकानग जडों । खोटायी
 नुकमाण ॥ ४६ ॥ करोधे छिाम्या जाय । मान नरमांइ नासे । माया
 तोडे प्रीत । लोभ सत्र काज विण्णासे । ए चारुं चडाल । जाण मत
 राखो पासे । मीठा ठग दुख दाए । पून पूजी ले जासे । चारुं
 मिलकर चोगणा । नत्र फिर जामी लार जडाव कहे तूं एकलो ।
 कुंण चढ़ला व्हाए ॥ ४७ ॥ नचाइ द्रव्य बीनै । पनी तयोए गणी
 जे । कुमम वाण सेण । बंध सरसादा कीजे । नले पण बहू भेद ।
 अभमरो ढालो दीने । खट दीम नागण दोए । नात पाणी सो
 लीजे । ए चवदा पछवाणने । जाण के काही कोई । निम्ते जाण
 जडाव । पामपद लेरी मो । ४८ । अथन नाजे रुन । दूसरे
 जावे उठ । आर चलने मत । नदने र अफूटी । नेणा न

मेले मीठ । द्रुस्ती नीची कर जाके । परस, माडे पीत । आपस रीत
 न राखे । सवन जैसा आसने । मत जाचो बारंपार । जडाव कडे
 सग जाणीव । ए पांवूनाकर ॥४६॥ देखी सामो आय । आया
 आसबाची ठठे । नैशां बरसे नेह । आद्र दे सनसुख वेठे । खोल
 डीयासी गांठ । बोझो मुख मीठी भाषी । पूछे सुख दुख बात ।
 धाये मोजन करू पाखी । सवन जैसा आसने । रक्षिण ठनक दास
 जडाव कडे जन आसती । पूरे मनकी आस ॥४७॥ तिररेरतिरे ।
 कैसे तिररे । नर वेह घरी करखी न करी । ममता न मरी ।
 छाया सररे । गठ संग मद्र । वित सीस दई । अब मान कद्र ।
 आया भरर । बैपूर मांय जडाव कडे । तिररेरयासे तिररे ॥४८॥
 चिगर २ कियकू चिगरे । नही दान दिया । अमिमान किया ।
 मधुपान पीया । छाया डीमरे । परमिगब लिया । राखी न दया ।
 अम जाब मया । भूटा बगरे । बैपूरमांय जडाव कडे । चिगरे २
 कियकू चिगरे ॥४९॥ धनरेरकियकू धनरे । किन दान दिया ।
 नही मान किया । प्रभु नाम लिया । तायां तनरे । उपगार किया ।
 अम अस लिया । सम रस पीया । माण्यो मनरे । बैपूरमांय
 जडाव कडे । धनरे २ उबकू धनरे ॥५०॥ लडरेरकियास लडरे ।
 करमनफर घेर लिया । बी फेर लिया । ममसेर सन्या सररे ।
 पयो अबसेर । करो मत डेर । जेनो मय डेर । चला कररे ।
 बैपूरमांय जडाव कडे । लडरे २ इयासै लडरे ॥५१॥ सांजकू
 अघाय माय । रस दूध पका लाय । हू तो मुख सेजमांय । फमाते
 लागी भूखडी । पिबद मोजन पाख । पीरस्या बहु फज्मान । गंगा-
 अस पीयो कान्हा । दो फेरा आपे मुखडी । लाय बीयो मीठो

धूंक । पान वीडां चावे मुख अजुये न भागी भूख जरा आइ
टूकडी । मनुष जनम पाय । खोय दियो खाय खाय । कइत जडाव
तोइ । भूखे काया कूकडी ॥ ५५ ॥

॥ छंद कुंडलिया । ध्याव मत कर बावला खोड़े पढसी
पाव । खीली देसी खांचने । न्हास कडीने जाय । ना आय कर
दोल्या । फीरसी लेसी लाटो लूंट । जाय दुख कीणने कैसी ।
पहेला कह्यो न मानियो । अब बैठो पिछताय । जडाव कहे प्रणो
मती । खोड़े पढसी पाय ॥ ५६ ॥ पांचू बैरण जीवकी । पुन
खजानो खावै । नवो न सचे नीच । कीचमै रतन गमावे । ठाली
होय नहीं ठोट होठ बैठो । लपकावे । देख प्राया लाड । मूढ मनमें
पिसतावे । रोयां गरज सरे नहीं । चेत सके तो चेत । जडाव कहे
सुतो किस्सू । चिड़िया चुग गई खेत ॥ ५७ ॥

॥ दोहा ॥ छंद छपनीएहमें । प्रसतावीक उपदेश । नून
इदक अणसोमतो । कवि जिन कीज्यो खेस ॥ ५८ ॥ पूज बीने-
चंद पाटवी । रतन मृनी समदाय । रंभाजी हुषा गुण मणि । मरु-
धर मंडलमांय ॥ ५९ ॥ तासदास जडावजी । बोले बे कर जोड ।
बिना समज कविता करुं । ए मुज मोटी खोड़ ॥ ६० ॥ अढ़ारसें
अठावने । जैपुरमें चौमास । नथमलजीरा वागमें । एह कियो
अभ्यास ॥ ६१ ॥

प्राणी पाप न किजीए । डरतो रहए दूर । हंस्यारा फल
पाडवा । लागे हाथ हजूर । ला० । भूरसी परभोमांइ । सहसी
घणो संताप । कदे नहीं मिलसी सांइ । जडाव कहे कुरणा करे ।
सोई सांचा सूर । प्रा० प्राणी पाप करो मती । मनुष जमारो

पाय । बिन सुगत्यां छूटे नहीं । पक्षे पक्षो पिसताय । होयगी
बोत खराबी । रूप सपेटी आग । तिक्रम किम रह सा दाबी ।
दाबी हूी न रहे । निसते प्रगट पाय । प्राणी पाय करो मती
मनुष बमारे प्राय ॥ २ ॥ इति ब्रह्म हृदयमी समपूर्वः ।

॥ आवकारो चौढल्यो लीरूपते

। दोष्टा । अरिहत सिम समरु सदा । आचारब उवम्राय ।
भी गुरुमद फेकत्र भसी । बहू सीस ममाय ॥१॥ साधुने भावक
तथा । सब गुण कइपानत्राय । मिश्र किंचित बरखन कर । कहेत्सू
हात्त बनाय ॥२॥
हात्त पहेली । देसी बेग पदसोरे मोहसयी । तु म्या नगर मुहाक्यो ।
इद्रपुरी सम माख । लोक सहु सुखिया बसे । छत्र मगस्तीरी
साख ॥ १ ॥ भावक करणीरा पखी । भांकड़ी । बसै तिहां महा
माग । हात्त—मीडी धमसुरगी । वर गुरीछ राग । भा० ॥२॥
मवनादिक रीच सोमती ॥ रघ बोका सुखपास । अन्य धान पीखो
पखों मोगवे मोग रसाख ॥भा० ॥३॥ नब तखन निरखों किमो
आत्म अर्थ पिछाया । स्वमत परमत बतरया । स्वास्या वत्र सुजाख
॥ भा० ४ ॥ मिश्र माधख मामेधमा । इत्यादिक वोपार । त्रिदनीक
बो लोकमें । तेह तखो परिहार ॥भा० ५ ॥ बारे बरते विवेक्य ।
पासे निर अतिचार ॥छ पोस कर मासमें । बबदा मम पीतार ।
भा० ६ ॥ साधु साधमीं तखी । से नित सार संमाख । मातपिता
सम दाखिया । बीधे ठाखे दयाख । भा ॥ ७॥ समक्षिमें सेठां
गया । दीरग द्रष्टी बहु भाख । डिगाया बीगे नहीं । देव बलावे
आख । भा० ८ ॥ मात पाणी बहु निपजे । कमोष न हीसे कांय ।

वचे सो नाखे वारणे । काग कुत्ता पशु खाय । आ० ८ ॥ अभंग
दुवार रहे सदा । प्रतिलामे निरदोष । वैमुख जाय सके नहीं ।
पामें सर्व संतोक । आ० १० ॥ गुण एकवीसे सोभता । धाराई
विरदावमें । उपगारे धन वाषरो । चूके नहीं जसदाव । आ० ११ ॥
गरु छे श्री विरधमानजी । । ज्यारी आग्या प्रमाण । चाले सुध
व्यवहारमें । छ अवसररा जाण । आ० १२ ।

ढाल दूजी । देगीजीलारीछे । तिण अवसर श्रीपामतणा रिखरायाहो
सुखकारी मुनिराज । विचरत रतिणहीज नगरी आयाहो । मुनी । १ ।
पच सया प्रचार मुनि । गुण दरियाहो । सु । फुफवइ उद्याने
आय उत्तरिया हो । मू० २ । पच महाव्रतधारी । सुध आहारी हो
। सु । खरत प्यागी ज्यारी । हू बलिहारी हो । मू० ३ ॥ क्रोध मान
माया मत्र ममता मारी हो । सु । अभिग्रहधारी तपसी महा
ब्रह्मचारी हो ॥ म० ४ ॥ ग्यान ढरसण चारित्र विविध । गुण
भरिया हो । सु । त्यागी वैरागी पालं । निरमल किरीया हो
॥ म० ५ ॥ जातवत कुलवत । महा बलवत हो । सु । इत्यादिके
गुण कहेता न आवे अत हो ॥ मू० ६ ॥ समि जिम सीतल ।
रविजिम तेज मयायो हो । मु । ढरमण देखी भगी जिन । आणंद
पायो हो ॥ म० ७ ॥

डाल तीजी । दोहा । हुइ उवाई महेरमाहे हरख्या बहु
नरनारे । सगको थया उतावला । देखण गुरु दीदार ॥ १ ॥
रतनमुनी मार मन उस्या तथा जीदवारी । श्रावक मिलिया
एकठा बोले उचन रमाल धन दीयाडो आजरो । फलीय
मनोरथ माल । चालोरे श्रीगुरु उदवा । आंकडी ॥ १ ॥ गुरु

बंदा पातक मरे । होवे परम किम्बास । जीबादिके नम बोसरी ।
 पावे सब सिद्धाण ॥ भा० २ ॥ अममोग संमरमें । दूरगवना
 दातार । सगत करता साधरी निस्ते खेबो पार ॥ भा० ३ ।
 टोले टोले नीसर्या । आणेवी जति बार । पंच अमिगम साधरी ।
 बंद्या बारबार ॥४॥ निरखोरे गुरु दीपारने । जाणे पूनमचंद ।
 मत्क अकोर निहालने । वाया परम आर्षद ॥ नी० ५ ॥ आगार
 नै अद्यागारना । धर्म तथा दोय मेद । भिन भिन मात्र बस्य-
 सिया । सुख्या कित उमेद ॥ नी० ६ ॥ हाथ ओढ़ करे बिनती ।
 नीचो सीस नमाया । शु पल्ल तप संजम तखो ॥ माखो श्री मुनि
 राय ॥ नी० ७ ॥ सजम रोक कम आवता । तप करपूर बहास
 तो सरग जावे किम साधरी । माखो एह दिनस ॥ नी० ८ ॥
 तप संजम सैरागरी ॥ पुरव कम बली संग । पितवर चार मुनी-
 सरु । उखर द्वियो निसक ॥ नी० ९ ॥ मलो कुरमायो किरपा
 करी । समज गया मनमाय । दीनी तीन प्रदिक्ष्या । आपा जिग
 दीस आप ॥ नी १० ॥

हास बोयी ॥ बेनी करहा जाचे उतावलो । पगड आई गवाप्रेत ।
 ग्राम नगर पुर विचरतांरी । आपा बीर जिख गंतम गलकर
 आद देवी । साणे मुनिवर बीरद । बीर पधारीयात्री । राजगरी
 उधान ॥ भा० १ ॥ बेसरो छे पारखो । बी गलतमरे सिख दीन ।
 अवसर ठठां गोचरीबी । सोक कडे धन धन ॥ बी २ ॥ ऊ प
 नीच मिस्रम दुखेरी । किरता घर घर बार । गली गली बेमरमें ।
 बीरम बोले नरनार ॥ बी० ३ ॥ तुम्यां नगरीरा बागमें । बी पास
 तथा अमरगार । आत्मक प्रमथ पुक्षिया । जी मास्यो सठ बिसतत

॥वी० ४॥ सुण गौतम एह वारता जी वीसम थयो हे अपार ।
 पूरण जाण पाछा फिर्या । जी पूछ करू निरधार ॥वी० ५॥
 आहार दिखायो वीरने । जी जोडया दोनूं हाथ । समरथ पास
 मंतानीया । जी भाखो श्री जगनाथ ॥वी० ६॥ कर्म बंदसे
 राग थी । जी घावे देव विमाण । तप संजम आतम भावथी ।
 जी निम्ने पद निर्वाण ॥वी० ७॥ श्रावक अति निष्ठुण छै ।
 जी चरचामे सरदार । जीती सके नहां देवता । जी मनुष तणो
 धूं मार ॥वी० ८॥ गीर कहे हां गोयमा । जी साधू चत्रु सुंजाण ।
 प्रग्या जारी निगमली । जी बोले निरवद वाण ॥वी० ९॥ हूं
 पिण डम परुपणा । जी करू कराउ मोय । राग द्वेष दोए बंधने ।
 जी तोडया मिव मुख होय ॥वी० १०॥ कर जोडी गौतम कहे ।
 जी भलो निकान्यो नार ॥ चत्रु ढाल सपूरण थई । जी प्रसणरो
 अधिकार ॥वी० ११॥ नून इटक सूत्र थकी । जी ह्रस्व दीर्घको
 विरुद्ध । मित्र्या दुकड तेहनो । जी कवि जिन कीज्यो सुध
 वी० १२॥ प्रज गतन समुदायमे ॥ जी गभाजी गुणधार । तास
 प्रमाद जडावनी । भाग्यो एह अधिकार ॥वी० १३॥ १६सैं
 एरुतालीममे । जी जैपुर सेखे काल । फागणवद तिथ तीजने ।
 जी करी सपूरण ढाल ॥वी० १४॥

अनाथीजीरी ७ ढाल लीखीए छीए

॥ढोढ॥ गिखवादिऊ महावीरजी । वदु वे कर जोड । विहरमान
 गुणधर मभी । केजली ग्रन्येऊ कोड ॥१॥ सिध रिध नौनिध
 करो । आपो बुध रमाल । धर्म आचारज आढ दै । वंदू मुनि
 तिरकाल ॥२॥ उतराधेने बीममे ॥ अनाथी अधिकार । श्री श्रेणिक

समकित छह । बीर कियो बिसवार ॥३॥ तिख अनुसारे हूँ करू ।
उठमरा गुण ग्राम । सरसत मात मया करी । अकसर आयो
ठाम ॥४॥ बिना पृथ उद्यम करू । ए मुज मोटी भूख । पिण
सतगुरु सनिष करी । होवे काम कबूल ॥५॥

हाल पोछी ॥ देसी जंजुलीरा ताननरी । तुम प्रबारी । मगइबेस
राजगरी नगरी । भूमोप्रस सोर टीकी । सेशकराजा राज करे है ।
प्रजा पासो नीकी ॥१॥ मुनि बहमागी ज्यारी छरत मुगत से छागी बड़ा
बेरागी । अंकडी ॥ २ ॥ नहीं दूरो नकीक नगरस । मंडी इच्छ
उधाने । छट अतुनां फलफूल तरु लखे । धरियो अनाधीवी
प्याने ॥ सु० ३ ॥ सैखकराजा सहस करणने । कर असबारी
त्यागी । हाथी थोड़ा रख पाणकस । आया बन मोदारी ॥ सु ४ ॥
अस करवां छिरवां छिरवां देख्यां सुनीवर रोह । आयो मोदन भूसा
बिनोद । आयो अभिक सनेह । सु० ५ ॥ अहो २ इशरख बरख
तुमागे । हो २ रूप मुनिको । अहो २ खंती सोम ससि त्रिम ।
हरसख पासो नीकी ॥ सु ६ ॥ अहो २ मुनि सोम कियो दूरो ।
बेरागी मरपूरो । बिष्माकर कोई राजपुत्र है । छाती भर नर दूरो
॥ सु० ७ ॥ सुम लखख मरीर बिराजे । तपस्या कर तन तापो ।
मदखखा हाथ खोड़ने । सैखक सीस नमायो ॥ सु० ८ ॥ दोहा ।
बीनो फरी सुनीम्र कहे । सामस करपानाय । इख अबसर पर
किम लख्यो । कहो तुमारी बात ॥ १ ॥ तरुख अबस्ता आपसे ।
मोग जोग सरीर । ध्यान बीचे पूछ करू । माफ करो तफसीर
॥ २ ॥

हाल दूजी । दसी दसमी काचकी दूसरी । दीया दोपसी

आदरीजी । काम भोग फल छंड । इयने मिलती छै । ध्यान खोल
मुनीवर कहेजी । सांभल प्रथीनाथ । गद्दा करणवालो नहीं रे ।
कोई मारे माथे नाथ हो राजींद्र सांभल पूरव वात ॥ आकडी
। १ । तिण कारण संजम लियोरे । अत्र मे हूवो सनाथ । सेणक
सुंण प्रिसम थयोरे । अहो २ इचरज वात हो ॥ रा० २ ॥
रूप संपदा कारमीरे । जननी मारी भार । इस्या पुरस दुसिया
थयारे । भूल गयो किरतार हो ॥ रा० ३ ॥ दुख मेदू हीव
एहनोरे । तो मागे सेणक नाम । नाथ होस्यूं में आपरोजी ।
पुरु मगली हाममो मुनिवर चालो हमारी साथ ॥ ४ ॥ मात पिता
सुत भारे ज्यारे दास दामी परिवार । खाणो खरची पूरस्युं रे
कमीय न राखूं लीगार हो ॥ मू० ५ ॥ दुलभ नर भव पामियोजी ।
सफल कगे मुनीराय । मुरग बिलमो संसारनांजी । मारा छत्रनी
छाय हो ॥ मू० ६ ॥ बलता मुनीवर हम कहेरे । सांभल राजन
वात । नाथ होमी तु केहनोरे । पोतड आप अनाथ हो । राजी द
रोलोनी वचन विचार ॥ ७ ॥ वचन अपूरव सांभल्योरे । दुख
पायो महीपाल । रूप रुडो गुण गायरोरे । अलीक बदै पंपाल
मू० ८ ॥ अथवा ए गीध माहरी रे । जाणे नहीं महा भाग ।
तो हीव एहने ज्ञानवद रे । तत्र बोल्या धर गग हो ॥ मू० ९ ॥
अहो मुनी मन्त्र उवा ओलन्योरे । सेणक मागे नाम । देस
मगवनो अधिपतिनी । एक कोड इकीनेर लाख गरामहो ॥ मू०
१० ॥ तैतीम म मनीनी । हयवर गयवर जोड । सगरामीके
रथ एटलाजी । पायक तैतीम कोड हो ॥ मू० ११ ॥ अंतेवर
प्रवारसु जी । भाई बेटा जाण । मोटा मोटा महीपतिजी । आण

करे प्रमाण हो ॥ मृ० १२ ॥ गडमड मंदिर सोमताजी । मरिया
 प्रभे मंडार । बाग बगीची बावडीजी नाटकना पूकार हो ॥ मृ०
 १३ ॥ इय अनुमाने आषाढोजी । रीषतयो विसतार । सुवर्ने
 अनाथ किम आशियोजी । हुतो प्रत्यक्ष देव अवतार हो
 ॥ मृ० १४ ॥ आपणां गुण निख मुख बफीजी । कर्ता
 आदेशाब । सिध रीष दिखई आपनेजी । रखे कूठ लागे
 हु निराख हो ॥ मृ० १५ ॥

॥ होश ॥ ईस कर पाप्मा हुनिवळ । सौमस्त नर नाथा ।
 अनाथपयो आखे नही । किम रिष होय-सनाथ ॥ १ ॥ तो
 माखो कीरपा करी । जोडया दोनू हाथ सुखसु चित्त लगायने
 । इकरव वात्सी वात ॥ २ ॥

हात ३ बी । देसी खोपन चामासारी । रत्न पुनीसर
 मोटक । वन बलना मुनावर कहे । बी काई तब । तु
 सौमस्त हो राय फर सु वाता । रीष संपदा कारमी । कोइ रावेहो
 नर मूढ अयाळ सुख सुख पूरव भारता । आंकडी ॥ १ ॥ कोसंबी
 नगरी मसी । बी काई कोसंबी० । पुर वाट्या रीया मेदख हार ।
 होइ के सुरलोफनी । तिहां कमळा हो लीनो अवतार ॥ सं० २ ॥
 धन धन करने दीपतो । बी काई अन० । बस कीरव हो कैली
 अमिरास पिता बसे तिहां माझने धन संचे हो मुखने पै नाम ॥
 पु० ३ ॥ मकनादिक रीष सोमतीजी काई मभ० । रय पोडा हो ।
 बहु दासी दास । गज सके नही तेहने । सुख संपन हो कर मोग
 पिछास ॥ सं० ४ ॥ यह बेदना आखमें । बी काई यह । अलि
 करकस हो मासू सहीमि न जाय । रोम रोम अंग पीडवी । कर्मनकी

हो गत कही न जाय ॥ सं० ५ ॥ बैरी बाप भाई तणो । जी कांइ
 बैरी ० । कोई घाले हो मस्तकमें घाव । इंद्र वजर सम व्यापती ।
 अति दारुण हो ग्यानी गम भाव ॥ सं० ६ ॥ मात पिता चिंता करे ॥
 जी कांइ मात ० ॥ बिल बिलतां हो दुखमें दिन जाय । वेन भाई
 छोटा बडा कोई वेदन हो नहीं लीनी बटाय ॥ सं० ७ ॥ तिण
 कारण अनाथ छुं आंकडी फीरी छे । नारी प्यारी जीवसू । जी
 कांइ नारी ० ॥ नहीं न्यारी हो सदा रहेती हजूर । खानपान भूक्तण
 तज्या । तिण मात्र हो नहीं रहेती दूर ॥ ति० ८ ॥ नेण भरे आंसू
 भरे । जी कांइ नेण ० उर सींचे हो जिम सुको बाग । अंजन
 मंजन सब तज्या । मुज उपर हो पूरो अतुराग ॥ ति० ९ ॥ तो
 पण मारी वेदना । जी कांइ तो ० । तिण मात्र हो नहीं लीनी तेह ।
 तिण कारण अनाथ छुं । जगमां ए हो जूठो सनेह ॥ ति० १० ॥
 वैद विचित्रण आविया । जी कांइ वै ० ॥ धन खरचे हो बहु किया
 उपाय । तिल भर गरज सरी नही । कर्मसू हो कोई जोर न थाय
 ॥ ति० ११ ॥ मन फाटो संमारसू । जी कांइ मन ० दुखमां
 ए हो धर्मनो आधार । जो मुज वेदना उपसमे । रिघ त्यागु
 हो पूछी परवार ॥ ति० १२ ॥ इम कहेता वेदना गई । जी कांइ
 इम ० । हुइ साता हो मुज आइ नींद । घरका देव मनावतां । हू
 वणियो हो बैरागी वींद ॥ ति० १३ ॥ हाथ जोड़ कहेतां तने । जी
 कांइ हाथ ० । दो अग्या हो सुणी थया उदास । कुंटम सहु समझा-
 यने । व्रत लीनो हो तोडी मोहपास ॥ ति० १४ ॥ निज आत्म
 निसतारवा । जी कांइ निज ० । में हुबो हो छ कायारो नाथ । अ-
 नाथपणो दूरो कियो । भावारथ हो समझो नर नाथ ॥ ति० १५ ॥

॥ दोहा ॥ समस्त गयो हो महा मुनि । ये जो मारा नाथ । करी
अन्त्या आपसी । मैं मूर्ख साधात ॥१॥ कर कीरपा मुज ठमरे ।
मेदो भारो मरम । पट दरसखमें कृपसो । तारक साधो धर्म ॥२॥

। हस्त चौथी । देसी मोड़ी आइ धारा देसमें मारुषी । निज
आत्म निजपस करो । महाराजा । पर आत्मक पिछा हो ।
समता प्रमाद मत सेवया । माहीं धम दयामें जाख हो पुनर्गता ।
धर्म सुख ओलखो माहाराजा । आकषी ॥१॥ देव निरागी बगल
हु । मा । नहीं मझर नहीं मेव हो । माहा । दोष अठारा न्यामे
नई ॥ माहा ॥ सोइ देव तू सेव हो ॥ माहा ॥ धर्म० २ ॥ सिध
सिधपुरमें सासता ॥ माहा ॥ जनम मरख दिया खेद हो माहा ।
बोखमे बोख पिराजिया ॥ माहा ॥ देखे जीवारी खेद हो ॥ माहा ॥
मिथ्या मत छोडघो ॥ माहा ॥ धर्म ३ ॥ ओलख बीव छ कयना
॥ आखो मन बैराग हो ॥ माहा ॥ न्याता रहो मर्षबख ॥ माहा ॥
देव शुक्ल राग हो ॥ माहा धर्म० ४ ॥ समता त कीजे राजनी
॥ माहा ॥ समता रस भर भुख हो । माहा । अन्धकमा पर जीवनी
॥ माहा ॥ ए ही धर्मरो मूल हो ॥ माहा ॥ धर्म० ५ ॥ निस्ते देव
गुरु आत्मा । माहा सुगते निज कत कम हो ॥ धर्म० ६ ॥
तारे बुबोवे आत्मा ॥ माहा ॥ छोडी मिथ्यामत मम हो ॥ माहा ॥
॥ धर्म० ७ ॥ नैनख बन कुड साबली । माहा । बेवखी कर्मपेय
हो । मै । सुख बुख करता आत्मा । माहा । आप दुसमख आप
सेख हो । मै । धर्म ७ ॥ मेख देख मत भुखन्यो । माहा ।
मेखना मेद अनेक हो । माहा । दूष गाय ने आकनो । माहा ।
अंतर होइ विरोध हो । माहा ॥ धर्म ८ ॥ नाश पपर कटनी

। माहा । सुगुरु कुगुरु तिम जाण हो । माहा । हूवे डवोवे
औरने । माहा । दोयांरी करज्यो पिछाण हो । माहा । धर्म० ६ ॥

। दोहा । गुण बिन गुरु कहाविया । गरज सरै
कीगार । कीरीयामें कायर हुवा । वे तिरन तारणहार ॥ १ ॥
सुमत गुपतरी खप नहीं । नहीं संजमरी ठीक । तप जप ऊपर
चित नहीं । फिर फिर मांगे भीख ॥ २ ॥ कहूँ जरासी वानेगा ।
कुगुरु काला सांप । मत छेड़ो हो मही पति । अलगा रहिए
आप ॥ ३ ॥ पिण ओलखाण कीजिए । सुगुरु कुगुरु की जोय ।
राजहंस बिन कुण करे । खीर नीरकूं दोय ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५मी ॥

। देसी आछेलालनी छे । नहीं छोड़े आधाकरमी आहार । बस्त्र
पात्र सज्या संधार । आछेलाल । अगनी तणी दीनी ओपमाए
॥ १ ॥ कष्ट सहे चिरकाल । मूड़े मस्तक माल । आ । शीत ताप
तिरखा सहीजी ॥ २ ॥ पोली मुठी असार । नहीं संजमरो सार
। आ० । भेख पूजावे लोकमें ए ॥ ३ ॥ काच पात्र सम होय ।
पारे पूलेवे जोए । आ० । मोल न पावे सारखोए ॥ ४ ॥ शस्त्र
धीख ताल । मारे ते ततकाल । आ० । तो पिण एक भवमें वे
हरोए ॥ ५ ॥ कुगुरुनो उपदेस । घाले मिथ्यातनी रेस । आ० ।
नरक निगोढ भभावमीए ॥ ६ ॥ कठनो छेढक थाय । थोड़ोसो
अहित कराय । आ० । तिणसू इधक वेरण आतमा ए ॥ ७ ॥
जोतक निमित उचार । भाखे सुपन विचार । आ० । जंत्र मंत्र
ओपघ जडीए ॥ ८ ॥ महिमा पूजा काज । नहीं लोकारी लाज
। आ० । पेट भराई सुखे करे ए । ॥ ९ ॥ नही मरजादा काण ।

अपहृष्टा अपाय । आ । वृत्र गुरांश्च वेगलाय ॥ १० ॥ लागी
मगलतनी छाप । बय बैद्य बैद्यरा बाप । आ० । जाये बफरा मंडी
क्या ए ॥ १२ ॥ इय एनाय जाय । परस करो महिरास
। आ० । इगुरु कदे नहीं वारसीए ॥ १३ ॥ सुखजो सुगुरुनो
मेद । राखो सुगत उमेद । आ० । थोडामें भाखू पयोए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ६ ठूठी ॥

॥ दसी भी गुरु क्यारि नमीए । मुनी गुण सुखीपरे
भाइ । सेवा मव मवमें सुख दाइ । बंध्या सिध सुखर पावे । जन्म
करा मरखो नहीं आवे ॥ मू० १ ॥ मद आदुहर गाते । निरमल
पंथ महाप्रस पाते । पांचे सुमतिर सुमता । क्यया मायसु नहीं
ममता ॥ मू० २ ॥ संजम सतर २ घारी । फिर फिर करता पर
उपगारी । बायीं मीठीरे मवा । चोख इंद्र करे न्यांरी सवा
॥ मू० ३ ॥ दोष बयालीसरे टांछे । मन बचन क्यया बस कर
चाछे । जाव वीकन केरे प्यारा । निज पर आत्म वारबहारा
॥ मू० ४ ॥ करी घेसारे धीरा । सापर जैमा होय गंभीरा । मरु
असार मोट्य । कर्मा सामा म्भय्या सोट्य ॥ मू० ५ ॥ गुण
अनतारे न्यामै ॥ कवि अन पार किमी बिष पाम ॥ सुगुरु
पोतेरे गावे ॥ गुणरो हर कद नहीं आवे ॥ मू० ६ ॥
सीकस चंदखरे पदा । दिनकर दीपे जेम मुणदा । अटे । अटे
निज परे पदा । सखक पायो परम आनंदा ॥ मू० ७ ॥ दोहा ।
मछो फरमायो माहा मुनि । सुगुरु इगुरुको मे । मैं बाण्यां सब
सरखा । सुगता हंस सफद ॥ १ ॥ सखाक ममकिं तिडी छ ।
मुनि अनायी मग । पोपाही पछे नहीं । चोख मजीठी रग

॥ २ ॥ देव रागी गुरु लालची । जीव हिंसामें धर्म । तीन कर्ण
तीन जोगद्ध । छोड़ूं मिथ्या भर्म ॥ ३ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

देसी सेवग सभूनाथ कीरत कागद । धन मोटा मुनिराज ।
बुध थारी भारी हो । भलो दियो उपदेस । बड़े विसतारी हो ॥ १ ॥
धन धन तुमचा तात । मात थाने जाया हो । धन तुम छो अव-
तार । सफल करी काया हो ॥ २ ॥ छोडया छता भोग । जोग
तुम लीनो हो । दी समारथाने पठ । दया रस पीनो हो ॥ ३ ॥
तुम हो दीनदयाल ॥ आसरो थारो हो । सतपुरुषारी महेर
भलो होय मारो हो ॥ ४ ॥ फसियो जग जंजाल । भोग नहीं छूटे
हो । रहूं आपसे दूर । हियो मारो फुटे हो ॥ ५ ॥ पट कायारा
नाथ । तात मोए तारो हो । होज्यो भव भव माए । सरण तुमारो
हो ॥ ६ ॥ फिर फिर सेव्या देव । गुरु पिण पेख्या हो । आप
सरीखा माहाराज । कठे नहीं देख्या हो ॥ ७ ॥ दीज्यो दरसन
आप किरपाकर माने हो । राखू हीयारे बीच । भूलूं नहीं थाने
हो ॥ ८ ॥ धारचा धर्म अनेक । मर्म नहीं जाण्यो हो । सांचो धर्म
महाराज । आजे पिछाण्यो हो ॥ ९ ॥ रोम रोम विगसाय । हरख
नहीं मावे हो । दे प्रदक्षणा तीन । अग नमावे हो ॥ १० ॥ तूं
मोटो जोगिद । ध्यान रस लीनो हो । में मूर्ख मति हीण विघन
थारे कीनो हो ॥ ११ ॥ निमत्या काम ने भोग । असातना कीनी
हो । नाथपणारी वात । रती नही चीनी हो ॥ १२ ॥ खमो खमो
अपराध । खिम्या धर्म थारो हो । पर उपगारी आप । विरद
विचारो हो ॥ १३ ॥ तुम गुण अनत अपार । पार नही पाउ हो ।

मो मुक्त रसना एक । किन्ती बिष गाँठ हो ॥ १४ ॥ सहु परवार
समेय अंजलिपर माये हो । आया बीखा दीस आय । अतिर
सयि हो ॥ १५ ॥

।कलसा। महा मुनिसर माहा देसना । बांदी नीकर विसवारये ।
सेषक समझिहार हुवा । राजामे सिरदारप ॥ रा० १ ॥ सेषक
हुहु उपगत कीना । उठकुस्ती मयित करी । बीजो पिण पूनी
केवसी । होय केसिब बंदूरी । हो ॥ २ ॥ सत्त हात्त सर्वष
मुनिको । कीनो सुत्र खोयए । विरुद्ध सिखापी अधिक भोखो ।
मिछमाहुकह मोयए । मिछया ॥ ३ ॥ पुष भोखी सुष नहीं ।
हस्त दीर्घ बिचार ए । महेर कीन्यो मूरख ऊगर । कविजन सीजो
सुषारए । करि ॥ ४ ॥ समतभी १६ से कायिए । ऊसर बावन
सात्त ए । असाद बढ एकादसीने । करी बैपूर में सत्त हात्त ए
॥ ५ ॥ जूय रत्तन समुदायमाय । रमाजी हुवा गुखमयी । तास
सिस्वयी बडाव गूयी । मूनी गुखमाला मयी ॥ सु० ६ ॥ प्रसाद
भी गुल्देवभीको । गुखवतारी दास ए । अकसर हात्त सर्वष देखी ।
मत्त कीन्यो उपहास ए । म० ॥ ७ ॥ इति अनापी मुनीराजरो
सत्त हात्तो समस्त ।

॥ नव चाढकी लावणी लीखते ॥

चात्तः—वन वन वन वन बंशुकरभी । बोननमें समता
सीनी । परखी परखी तजी प्रमाथे । ए देखी । सीन्धवत्त सुष
पासो प्राखी । निर बोपण धानक निरखो । पसुपंडक महीलाको
बासो । मछपारी राखे बडको । मूस मंझारी जम बिचारी । नास
करेसा मछप्रतको । सीसप्रत सुष पासो प्राखी । बेग मिले सुख

सिवपुरको । आंरणी ॥ १ ॥ बीजी गड इणीपर कीजे । रस
पीजे जिन बाणीको । एकली नारी पुरुष संघाथे । वात निगत
चटको मटको । काम जगावे कद्रप नढावे । दृष्टात जाणो नौंरूको
॥ सी० १२ ॥ एरण आगण पुरुष अम्त्री । नहीं बैठे
कोई ब्रह्मचारी बैठे सोवे वाड बीगोरै । गर्भ दोष पावे
नारी । कांजी दूध निगाडे देखो । वचन उथापे जिन-
वरको ॥ सी० ३ ॥ चौथी वाड चतुर नर राखो । रस खाखो
सिवरमणीको । भरनेणमें मत निरखो । ब्रह्मचारी अंग नारीको ।
काची कारी जे नरनारी । निरखे तेज जिम दिनकरको ॥ सी० ॥
॥ ४ ॥ टाढी भीत प्रं चक्र अंतर । ज्यां सोवे भोगी प्राणी । सीलवत
रहे तिन थानक । वाज मोर दृष्टात जाणी । विषय वचन जो पडे
कान मे । मन बिगाडे मुनीजनको । सी० ५ ॥ काम भोग विलस्या
जे पूरव । बार बार ज्यो चितारे । चार बटाउ बुडीया दृष्टंत ।
मील बटाउने मारं । छठी नाड करे मन डीडता । विषे जहर दूरो
फेंको ॥ सी० ६ ॥ सरम आहार परज्यो भरभरतो । नितको नित
केवल नाणी । वाड भग करे मीलवतकी । न्यागे ते उत्तम प्राणी ।
मनीपातमे पावे पय मित्री अरु सरवत नारीको ॥ सी० ७ ॥
पुरुष केवल बतीम प्रमाणो ॥ अठाडम नारी जाणो । कुलंग कवल
चोरीस प्रमाणो । दूट दूटने नदी खाणो । ओछो भाजन हदको
उरे । फुट जाय मुग हडाको ॥ सी० ८ ॥ पस्त्र भूषण अंजन
मजन । केसर ने चदन चग्चे । तेल फुलेल अरगजा लेपन । ब्रह्म-
चारी करतोलरजे । पि । कारण जो करे सुश्रुषा । सीलवत
थावे भाखो ॥ सी० ९ ॥ शब्द रुप रस गंध । फरस प्रमत विचरो ।

उठम प्राचीण अनाधी टेप बीकरी । छोड़यां बैपद निरवासी । राग
 रंग अरु नाटक चेम्फ । ए भी मरम है पुत्रगलको ॥ सी० १० ॥
 इन्द्र चंद्र निर्द्व सुरामुर । सीतार्कसके पाए पड़े । सरप होय कुलनकी
 माता । मृत मित्र नहीं दखल करे । इरी अरी कुजर दूर रहे
 सब । तेज बड़ो प्रसन्नचारीको ॥ सी० ११ ॥ गजसुखमास अर्कतो
 बंधु । नेमकर राशुस नारी । बीजेकर अरु बीजीमाफंजरी ।
 बासपखे बया प्रसन्नचारी । सेठ सुदर्शय सीत प्रमावे । सिंघासख
 ययो छल्लीको ॥ सी० १२ ॥ उतरायेन सोलमें भाखी । बाह मठ
 सिख साखी । जैपुरमाण बड़ाव ओढ़ने । निज आतम निज बस
 राखी ॥ १६ से बानके बरसे । जेठ सुदी दिन मोमीको ।
 ॥ सी० १३ ॥

२२ परिसा

॥ दोहा ॥ पांच पद प्रथमू सदा । सरसती लागू पाय ।
 ब्रह्मस परिसा छत्रपी । कहीसु डास बसाय ॥ १ ॥ वास तेहीअ ।
 जुषा बगमें सबसे बूरी है । बडे बडेका मान गले । आदनाम्के
 चार संस शिष्य । मूल सगी बन माग बले । बन बन साधु सह
 परीसा । सुरवीर होय नाय करे । तप छरवार मावका माता । करम
 अरीसु मंग करे । आकडी ॥ १ ॥ जुषा सिरसा अति टीली ।
 बिन पाखी मुनि प्राय तथे । आपा कर्मी कायो पाखी मग्नावे ।
 सिख नाय भजे ॥ बन २ ॥ सीतमलमें ठंड सहै । अत भीरपत
 से ठंडे नंगे । भीरबावस्त्र अलप उपपी । ध्यान धरे बढते रंग
 ॥ बन० ॥ ३ ॥ ग्रीष्म ऋतुमें धाम सहै । अत पवन बले अरु
 बाध । बसती बैलू सोवे अतापना । शीत तपे अरु पग दावे ।

॥ धन० ४ ॥ निरखा रितुमें टांम मसादिक । जुं गाइड देवे चटका ।
 तिलभर धेरु धरे नहीं निख पर । समतारा पीवे गंठका ॥ धन०
 ५ ॥ एक सफेदी मगरु राखे । एक अंग कीमत जाणी । थोडा
 मिलिया नहीं मटावे । इधकासूं समता ताणी ॥ धन० ६ ॥ काग
 मोगमें रीत नहीं पासे । हित राखे मजम मेती । पुद्गल फंड रच्यो
 इण जगमें । सुगतीस बाले छेती ॥ धन० ७ ॥ आयभास मिणगार
 स्त्रीके । मराग टष्टिमें नहीं भाके ॥ सील रतनको करे जापतो ।
 मन मे गल ताणी राखे ॥ धन० ८ ॥ ग्राम नगर पुर पाटण फिरतां ।
 ककर अरुकाटा मुचे । पाय उमगणा चढे थारुलो । गाडी बेल नहीं
 बछे ॥ धन० ९ ॥ लेवे निमगमो वन मसाण । अथवा विगस तले
 वेमे । मन मचन काया मम राखे । स्वापड जीव नहीं बासे
 ॥ धन० १० ॥ मेज्या उची नीची अवखी । दुखदाट असमाध
 करे । एक गनको जाणे पग्गियो । दिनमायी चौमाम भरे ॥ धन०
 ११ ॥ रुचन मान पटे काटामा । आक्रोश केड द्वेष करे । दूध
 पतामा मम मर पीवे । जाणे अनारज धीर धीरे ॥ धन० १२ ॥
 केट अनखी अमरी मायी । ने लफडीने लागकिरे । छूरी कटारी भाला
 मुर्छी । नवे मयन परिहार करे ॥ धन० १३ ॥ करे जाचना केई
 पुद्गलकी । देवे पिण अपमान करे । आयो नापडो दीयो उदारो ।
 पिण माधु नहीं मान वे ॥ धन० १४ ॥ उद्यम करतां नहीं
 मीले तो । उती मम पीण नट जावे । द्वेष धरे नहीं गृहस्थ ऊपर ।
 अलगव आडी आवे ॥ धन० १५ ॥ आयो रोग सोग
 नहीं मरगो । गारा ते मगने प्राणी । मरफार मो मरज चुकावे ।
 काजर ते भागा जाणी ॥ धन० १६ ॥ ठण बास के सुवे सधारे

घटक घटक देवे चटका । घोड़ा बस्त्र नींद न आवे । समतारा
पीये गटका ॥ घन० १७ ॥ पीठी मरदन नहीं नाचो आवो
। बावझीव लगे नहीं करखो । होय पसीनो मेल गले जब ।
समतारो छेवे सरखो ॥ घन० १८ ॥ कोई चरखमें देवे मस्तक ।
बंदन करु असकृती कर । कोई अग्यानी देवे ठोकर । दोपां परम
भाव घरे । घन० १९ ॥ अग्यां म टी ग्यान अप्रसू ॥ मखीरानो
काई पार नहीं । अदरदाता गुरु कर जाणो ॥ ग्यान ध्यान दोपार
सह ॥ घन० २० ॥ दोखबाँक करै बहु उदम । ठोपीय ग्यान
नहीं आवे । सम प्रखामे सह परीसो । घेरु करे नहीं सीदावे
॥ घन० २१ ॥ खरी आसता भिन वचनोकी मिथ्या मतने
खुदइन करे । अन्य भागनी महिमा पूजा । दखी बंधा नय घरे
॥ घन० २२ ॥ अनुकूल इशमें मन गमता । सोमी सहना कटख
मय । प्रतिकूल प्रवक्तु दुखरासी । बड़े बड़े सो भाग गये ॥ घन०
२३ ॥ परीसा पचरीसी ओड़ी । बड़ाव मेपुगक माई । अमात सुद
१८ सें बावन । हरख सावशी मैं गाइ ॥ घन० २४ ॥ इति संपूर्ण

बाल सहीअ । बिग बिग अगमें कपर पूरसा । सजम से बाले
निबला । घन संसारमें उदम प्राखी । जो टाले दोषख सगला ।
वि आकाही ॥ १ ॥ दस्त करम बली महपुन सेवे । रात्रि भोजन
प्राप्त हरे । आदकरमी राजपीडित । इशने उद्माद करे ॥ वि० २
किरगार्गइपमीधेमझीनै ॥ अखीसिट सामो आययो । पंच प्रकरे
आहार भोगवे । सबसो ए छटो बाखयो ॥ वि० ३ ॥ पार बार
पचलाख मांगे तो । गुरवाशीरुपु नहीं लाज । छ महीना में मूत
सीयाडो । छोड़ी बीजामें गाज ॥ वि० ४ ॥ उदक छप अरु माया

धानक । तीन तीन एक मास मधे । सेव्या सगलो दोषण लागे ।
 घीवघात संसार वधे ॥ धि० ५ ॥ जाणी हिंस्या जाणी मिरपा ।
 अदत पराड जाण गीरे । सचीत प्रयत्री सनगंव जागा । सुवे वेठे
 पाव धरे ॥ धि० ६ ॥ जीव महत गजोट पाटीया । कंदादी दस
 सचीत भखे । उदक लेप दस माया धानक । ग्रस मधे नहीं सेव
 सखे ॥ धि० ७ ॥ सचीत हाथ आहारादिक वेरे । इन्हीसइ सेवे
 सवला । कर्म प्रकृति डीढकर बांधे । संजम गुण धावे निवला ।
 ॥ धि० ८ ॥ टाले सवला पाले संजम । सो पावे पद निरबाणी ।
 जेपुरमाए जडाव कहत हे । असाढ सुद नोमी जाणी ॥ धि० ९ ॥

चाल लागणीरी छे । मत सेवो कोड बीसैअस असादया
 धानक माधजी । आकडी । द्रव द्रव करतो चाले साधु । नीचो
 नई निहाले ॥ चउदीम कपडा उडे धजा जिम । निन पूंज्यां पग
 ढाले । कठे पूजे कठे पग देवे । इरज्यामे टोटो घालेजी ॥ मत०
 १ ॥ मरजादा उपरन भोगवे । पाट पाटीया कोय । वडा गुरांसुं
 सामो गोले । मजम मादो होय । थेयर इकद्री घात चिन्तवे ।
 खिणखिणमे करोधी होयजी ॥ मत० २ ॥ निस्ते भाषा कलह-
 कारणी । गरुना ओगण वाढ । बोलतो नहीं मुके मूरख । वेठो
 करे उपाद । जूनो क्लो उदंडै पाछो । ए वारे असमादजी
 ॥ मत० ३ ॥ अकाले मभाय करे । सट काले वीगता वाद ।
 । सचीत खरडया निन पूज्या पग । सुवे बैठे साध । पोर रात
 गया पछे गावे । घाटे घाटे मादजी ॥ मत० ४ ॥ गळमें मेद
 पढावे पापी । अठी उठी मिलजाय । कलह करतों मूल न लाजे ।
 लोग हसाड धाए । आप गले परने मतावे । दोनू भव दुःखदायजी

॥ मत० ५ ॥ दीन रुग्णापी आपस्य सुधी । आस्यो आस्यो साय ।
। मत नहीं पड़खाब न जाके । मन मावे ज्यु साय । असुखो मन
बोवे सथो । बढामुससु वायजी ॥ मत० ६ ॥ ए बीसु टासुन्यो सरे
। संजम रुडो धाय ॥ १६ सें बरस बावनेसरे । लेपुरमाए मडाव
। बोस पोळ्को देखने मरे ॥ दीनी हात बसायनी ॥ मत० ७ ॥

॥ ३३ असातना लीखीए छिए ॥

देसी । बीस असासु बाह न कीजे । आगे वास्ते
आगे उबै । आगे बैठे आयजी । बराबर वास्ते बराबर उबै । बराबर
आसस्य अयजी ॥ १ ॥ मूख करे असातना । केह अचछंदा
अचनीवजी । जमाली गोसासो देखो । हुना गसा फजैवजी ।
आंछडी ॥ २ ॥ अचछंदांने ग्यान न आवे । ग्यान विने
अंधारजी । सीख दिया सामा थड आवे । गरु कछे गड्ढे
बारजी ॥ मूख० ३ ॥ तीन उषगरी । तीन बेठबरी बोयजी
। अडतो वास्ते अडतो उबै बठे । ए पूरी नब होएजी ॥ मूख० ४ ॥
गुरु पेला होव ठंडीख बाबा पहेला सुख करावजी । इरीपावइ
पडीरुम पहीला । करन राखे कायजी ॥ मूख० ५ ॥ गुरुमादिकहु
प्रसस्य पूछे । कोई भाइ बाइ भायजी । पहेला उतर देवे ठिखने ।
आप बडेरो पायनी ॥ मूख० ६ ॥ इत्य सुवा इत्य वागो भाइ ।
कीन्यो करअ आयजी । आगे पिश नहीं वास्ते उठे । बाबी नीइ
गुसायजी ॥ मूख० ७ ॥ ज्पाय गोबरी छोट आगे । आसोवे
देखायनी । घामे देवे मन गमताने । ज्पास्य सुवलब पाएजी
॥ मूख० ८ ॥ गुरु पेला होव मेसा धंठ । गुरु गरडा दांव न

कायजी । आछो आछो वेगो वेगो । आप जाण घटकायजी
 ॥ मूर्ख० ६ ॥ गुरु वतलायां जवाव न देवे । वातामें लग जायजी
 आसण बैठो उतर देवे । स्रं कहो कहो थायजी ॥ मूर्ख० १० ॥
 रेकारा तुंकारा देवे । बोले रारो जहरजी । ग्यान न आवे अग्रछंदाने
 गुरुसुं राखे वेरजी ॥ मूर्ख० ११ ॥ गुरु सीखावण देवे आछी ।
 सीखो भणो सुजाणजी ॥ थेइ सीखो थेइ बांचो । पाछो कहे अयाणजी
 ॥ मूर्ख० १२ ॥ गुरु कहे भाइ सोटू न बोलो । तुम ही खोट
 सीखायजी । साचो अरथ न आवे तुंमने । में कहूं नीम थायजी ।
 ॥ मूर्ख० १३ ॥ गुरु गीतारथ देवे देसना । सुण राजी नहीं थायजी
 । भैसा डोलो बाले बीचमें । रस कथारो थायजी मूर्ख० १४ ॥
 हीवडा सुण कई हुमा राजी । फिर आज्यो मेला होयजी । अर्थ
 अपूर्व कहेस्युं तुमने । कठ कला मुज जोयजी ॥ मूर्ख० १५ ॥
 तेइ देमना तेही देला । तेइ पूरसदा मांयजी । घोट मठारी पाछो
 वाचे । मानभंग गुरु थायजी ॥ मूर्ख० १६ ॥ दिन साथे आयो
 नहीं सुजे । लानी कथा गणायजी । थतो वेठा हुकम चलानो । माने
 खाणो लायजी ॥ मूर्ख० १७ ॥ गुरु संथारे सुवे वेठे । नहीं लाज
 मरजादी । ठोकर लाग्यां नहीं खमावे । उपजावे असमाधजी ॥
 मूर्ख० १८ ॥ गुरु उ चो आगण वेठे । मद छलीयो मानीसजी
 । गुरु चेत्तारो नही कायजे । ये पूरे तैनीमजी ॥ मूर्ख० १८ ॥
 उत्तम प्राणी पित्त कर लेनी । नहीं आणे मन रीमजी । जैपुर मांए
 जडाव करन है । नीलो बीमा बीमजी ॥ मूर्ख० २० ॥ सूत्र
 साखे ढाल गणार्ड । पानीपात्री कोदजी । ओछी इदकी आगम
 सेती ॥ मिछयादुकडभोयजी ॥ मूर्ख० २१ ॥ १६ से धावन

कलामें । आसल सुदभस्मी जायकी । असावना इफरीसी ए सने
मत्त कोई सीज्यो तावजी ॥ मूख० २२ ॥ इति संपूर्णः ॥

॥ तीर्थंकर गोतरी ढाल लीख्यते ॥

निरमल त्रिन । सुघ समगत पाई । बांक कुमी रही नहीं कोई ।
ए देसी । अरिहत सिध माषारज ठपाप्या । न्यारा सीजे सरखा ।
पंच पदारा गुख गारंता । मेटे आमल मरखा ॥ १ ॥ बांभे गोव
तीर्थंकर प्राप्ती । सेवे बीस बोल दित आशी । आंकडी । प्रवचन
माता गुरु गुण गाता । धेवरना गुणग्रामे । बहुधुत तपसी गुण
गाता । अविषल पदवी पाम ॥ बां० २ ॥ मणीयो गुम्बीयो यत्त
करंतो । समस्ति सुघ पालंतो । सत्त प्रकारे बिनय आराधे ।
पदीक्रमखो नित करंतो ॥ बां० ३ ॥ सीस आवार अरु अत
पालंतो । तीजो चौयो प्याने । वारे मेरे तपस्या करंतो । अमेदान
सुपात्र दाने ॥ बां० ४ ॥ दस प्रकारे व्यावय करंतो । सरव जीव
समादे । न्यान अपूरव मखतो गयतो । अशनी मक्ति आराधे ॥
बां० ५ ॥ मिध्यामतने दूर करंतो । जिन मारग दीपाधे । ग्राम
मगर पूर पाय्य निभर । तीवळर पर पाधे ॥ बां० ६ ॥ देख
बोकडो ढाल यखार् । १६ सेने वावने । लैपुरमाण अडाव करत हे ।
हे प्राणी धन धने ॥ बां० ७ ॥ इति संपूर्णः ॥

॥ पोसारा १८ रा दोपरी ढाल लिख्यते ॥

बाशी भी जिनराज सणी कनि पड़ी रे प्राप्ती ए दसी । दोष
अठरा टस पोष कीजे सही । रे प्राणी इव खेद कास माव देख
भूके नहीं ॥ १ ॥ पड़ेसे दिन सरस आरे । इसीछ न संखो ।

रे प्राणी । नागो धोवो नाय । नख केस सवारणो ॥ २ ॥ पोसामें
हाथ पावे । चमावे जोषम ॥ रे प्राणी । होय बैठानि सके । टरे
नही दोषम ॥ ३ ॥ माला मोती हार । विलेपन चरचन्हो ॥ रे
प्राणी । लेयें दिनकी नींद । शस्त्रादिक बरजन्हो ॥ ४ ॥ निन पूंज्या
खीणो खाज । उतारे मेलने । रे प्राणी । निद्या निगता विवाद ।
नजर निपे रागमें ॥ ५ ॥ बरका सुधारे काम । भोलावे कुलाभणी ।
रे प्राणी । नहीं देखो मनमान । उभगरण छूटा मणी ॥ ६ ॥ नहीं
बंछे मनमांए । बुगो पेला तणो । रे प्राणी । जँपुरमांय जडाव ।
कयो मानो हमतणो ॥ ७ ॥ १६ से गावन । श्रावण बंद बीजने ।
रे प्राणी । दीनी ढाल वणाय । मवि उपगारने ॥ ८ ॥ इति संपूर्णः ।

॥ बार भावनांरी ढाल लीख्यते ॥

देसी देनदानव तीर्थकर । अन्निय पहेंली असरण दूजी ।
तीजी समारस्वरूपे । एकते चौथी भिन । पांघमी देही असुचनो
कूपे । रे प्राणी । भावना सुध मन भावो ॥ आकड़ी ॥ १ ॥
अस्वर भावे समर कीजे । निरजरा करमनी पावे । लोक सरूपे
बीचार करता । धर्म ध्यान बध जावे ॥ रे प्राणी भा० २ ॥ बोध
मात्रना वारमी भावे । नमगत निरमल थावे । समगतथी संजम
सुध होवे । मजमथी मित्र पावे । रे प्राणी ॥ भा० ३ ॥ १६ से
वावन जैपुर में । अमाढ मुद तेरसे । रुहत जडाव शुद्ध भावना
भावो । अजर अमर पद पावो । रे प्राणी ॥ भा० ४ ॥ इति संपूर्णः ।

॥ समकितरी ढाल लीख्यते ॥

देसी प्रीत मारी जिनवर से लागीरे प्रीत तथा कर्म रेख नहीं

ले । ओलख जीव छद्मपना मरु । अणुरंभा आशोर । जीवधीम ।
 दवगुरु नय तन्व पिछाओ । दया भम जाखो । खनफो मारग ह
 बाँकोरे । जन । फटख खडगरी धार । विषम ह सुइको नाको ।
 आँफडी ॥ १ ॥ मरहीम सममार । बाव एक मुक्तिको रागोरे । वा०
 । दिन बचनारी प्रतीत । भोगरी बँछा मत गखा ॥ व० २ ॥ प्रथम
 हिमा त्याग । मूठ कोठ मुखसे मनि माखार । भूठ । घोरी परस्त्री
 द्रव्यही ममता मनि राखो ॥ ३ ॥ पथ महाप्रत मूल । अनुव्रत
 आरका आखोर । अ० । तिनसु गुण दोष । शिवा प्रत धार
 पीछासी ॥ व० ॥ ४ ॥ ए ममठरी जाण आण मन समवा डह
 राखोर ॥ ॥मा ॥ कटु ब कबिलो छोड ॥ विषय सुख फिर
 फिर मत भ्रांछे ॥ व० ५ ॥ दान मील तप भाव । धारकी चोकी
 कर राखोर ॥ आ० ॥ मन मान सा मास ले जाखो । शंख मव
 राखो ॥ व ६ ॥ एइ खन मत मर्म । चर्म एक छिम्पा के माँदर
 । वमा न्यो पाले भव उसीक । मित्र-गुरकी सार्ई ॥ व० ७ ॥ १६
 में वाक्न । अठमें अपुरक माँदर । समगत उपर बोड लावसी ।
 बडलबी गर्द ॥ व ८ ॥

॥ बालचदजी माहाराजना गुण लिख्यते ॥

दमी रतन मुलनी सारुनीलारी । बालमुनि दरसख क्यू नहीं
 दिराया । माने अस त्रम त्रसाया । जनबमुनि दर्शख क्यू नहीं दि
 राया ॥ आँफडी ॥ १ ॥ रसना नाम रटयो मुनी धारो । मनडो
 गयो उमायो । नैखे दोए त्रसत है दमड । पावन छह दिखायो
 ॥ वा० २ ॥ काहा करु में प्रन्ही पाइ । प्रबीने उडोइ न बाइ ।

जंगाचारण विद्या न मोपे । सेवा सारुं मदाड ॥ च० ३ ॥ धन वा
 धरती ज्या पात्र धरत है । मीज्या अनड नमा हो । दीन दयाल
 कीरपाल कहीज्यो । तो माने किम ब्रसाहो ॥ वा० ४ ॥ ग्राम न-
 गर पूर पाटण बीचरो । कृते ग्यान उजीवारो । धन वा जननी
 जनम दीयो हे । धन थारो अग्रतारो ॥ च० ५ ॥ धन वे श्रावक
 वाणी मुणत हे । प्रतलामं सुध आहारो । सेवा सारे अष्ट पोहोरकी
 । दग्गन करत तुमारो ॥ वा० ६ ॥ दो दो बार नागोर जोघ्याणै
 । उडलू फीर फीर जावो । पाली पीपाड पे कीरपा तुमारी । जेपुरमे
 चक्र प्रताग्रो ॥ च० ७ ॥ मत्र श्रावक ब्रसत है द्रसकू । याद करे
 नर नारो । कत्र मुनि पाव धरे जेपुरमे । जीवन प्राण आधारो ॥
 वा० ८ ॥ कृता मभाल छे माम बरस मे ॥ पूरण कीरपा तुमारी
 । दोय वरम नीत गये तथापि । आ अतराय हमारी ॥ च० ९ ॥
 मुण ओलभा रीज करो तो । कैड मुक्तके माड । रीज करो तो
 मीज सुख दीज्यो । दोन्यू ड मन भाइ ॥ वा० १० ॥ सब संतन-
 से एही अरज हे । मो पर महर कावो । करुणा सागर सेप काल
 मे । नीचरत जेपुर आगो ॥ च० ११ ॥ चुक हमारी कीरपा
 तुमारी । दोन्यू ड एक सारो । जेपुरमाए जडाव जपत है । नाम
 मूनी एक थारो ॥ वा० १२ ॥

॥ श्री मीमंधरजी ढाल लीख्यते ॥

॥ देमी ॥ गोराने बाड आजे वसो न जी मारा देसमें । प्रभुजी
 खेव प्रीदेह बीराजीया । जट्ट बते छे चोथो आरो । श्री मंधीर
 स्वामी । श्री हम पीता तुम नणा । थाने सतकीमातमेलारो । श्री

मंघीरस्वामी माने आधार वो प्रभुजी आपरो ॥ आंकडी ॥ १ ॥
 प्रभुजी हासे धोरासी पूरब आउखो ॥ उ थी पांच सो धनक धारी
 क्यो ॥ श्री० ॥ कंचन बरवा सुहाबवा । मारो दरसखने मनबो
 उमायो ॥ श्री २ ॥ प्र० कपरपणे ३१ लाइमें । पछे पिता गया
 फलोके ॥ श्री० ॥ बीस लाख पूरब पछे । पायो राज सीला सुख
 मोग ॥ श्री० ३ ॥ प्र० लाख प्र पठ पूरब लग । बेंतो शुभ बर्ताई
 नीते ॥ श्री० ॥ तीन ग्यान घरमें बस । धारी हागी सुगत सु
 प्रीते ॥ श्री० ४ ॥ प्र० काममोग साय्या करमा । बेंतो बोहत
 कीयो उपगारे ॥ श्री ५ ॥ प्र० कर करवी केवल सीयो । धारा
 नाम बस नीस्तार ॥ श्री० ॥ लाख पूरब धारित पास्तने । बेंतो
 वास्यो मुक्त दबारे ॥ श्री मी० ६ ॥ प्रभुजी हासे साय्य । धोमे
 धानैनी । समस १६ सें बावन बरसे । श्री मंघीरस्वामी । जेपुरमांय
 बढारजी । बारा दरसखन जीव पशी बसे ॥ श्री० ७ ॥

॥ पचेंद्रीनी ढाल लीख्यते ॥

। दश्री मरो फुण्यो हो हबारी मेदा बागमेंरे । प्राची पंच इंद्री
 बस कीर्तीपदी । अख अजर अमरपद लोबीपजी । उन्तात्तो । तिखसु
 सुख अनंता पावे । किर किर गरमा बास न आवे । जिनसु वनम
 मरवा मीठ आवे ॥ १ ॥ प्रा० आंकडी ॥ भाव इंद्री बस दुख मो-
 गवेनी । मूल मीरवा मरवा लेहावे । पूगी उपर सूर्य बचावे । बरबस
 होइने बहु दुख पावे ॥ प्र २ ॥ नेत्रा बस होय पतंगीयोजी ।
 दीप सीखामें भसमी होवे ॥ प्र ३ ॥ भाव इंद्री बस मपूकर मरे की ।
 सोमी फुसपनमें फम आवे । रस मकरंत होइ सुख पावे । इंदर
 फुजनमें गिर आवे ॥ प्रा० ४ ॥ रस इंद्री बसमार माखलोजी ।

गम कम लेवाने उमावे । तुरत गले कांटो पस जावे । साधू संजम
मूल गमावे । प्रा० ५ ॥ फर्म इंद्री बस होय मानवीजी । कंड
प्राणी प्राण गमावे । लंपट लोकामाय कहावे । कुंजर वृरे हवाल
मगावे ॥ प्रा० ६ ॥ इंद्री अकेकी बम दुस सहजी । पाचाके बस
केटण गीगू ता । मुरनग इंड होय फजेता । धन मुनीवर थे पांचड
जीता ॥ प्रा० ७ ॥ रुडा शब्द रुप रम गधसे भलाजी । आछा
पुरम थकी सुस पावे । सेज्या फुलनकी मन भावे । नकसी सर्प
तुरत डम जावे ॥ प्रा० ८ ॥ समत १६ में तेपन भलोजी फागण
मुढ पख मातम जाणी । जेपुरमाए जडाव बसाणी । निज पर
आतमने हीत आणी ॥ प्रा० ९ ॥

॥ करम रेखरी ढाल लीख्यते ॥

॥ राग ॥ कर्म रेख नहीं टले । करो कोड लाखा चतुराड । आंकडी
॥ १ ॥ धर कर वीरज ध्यान । ग्यान कर मनकुं समजाणारे ॥
ग्यान ॥ वीन भगन्या नहीं होय छटको । अवी चूका देणा । क-
रज एक कर्मनहा भाटरे ॥ करज ॥ क० २ ॥ फेर कहु कर्मनकी
उतकारे ॥ फेर ॥ बडे बडे मय चरु गरु गये । रहे इतकाने उतका
। मनुष्य मय वार वार नहींरे ॥ मनु० ॥ क० ३ ॥ कर्ममें को
न जगर भाटरे ॥ कर ॥ मनीया माध तिर्थकर गुणधर । सरव हार
गाट । मजम लीयो मुक्तीके नाटरे ॥ म ॥ क० ४ ॥ करममें गीत
मर्ग मनमेरे ॥ क ॥ राजा रागण पकड मगाड । देव जोग छीनमे
। धीरज कर जगमे जम पाटरे ॥ धी ॥ क० ५ ॥ वीरने कर्म दीया
कोलारे ॥ वी० ॥ काननमे खीली गटकाड । स्वान कीया दोला
ध्यानमे नहीं चका काटरे ॥ ध्या ॥ क० ६ ॥ द्रोपडी सतीय नमे

मोटीरे ॥ प्रो ॥ भीम हाथसें कीचक मूको ॥ नीअर बरी छोटी
 । हादी जूत क माहरे ॥ हा० ॥ क० ७ ॥ गरमसें मेतारब
 मारपोरे ॥ म ॥ लईक रीखनी खास उतारी । क्रासीब हार्यो ।
 हरीने मार लीयो माहरे ॥ इ० ॥ क० ८ ॥ करमसें सुरपत बम-
 रायारे ॥ क० ॥ बड़े बड़ेकी मद्र फजेती । कभी बीन मुख गाया ।
 बाल्यकर मत बांधो माहरे ॥ मद्र० ॥ क० ९ ॥ ध्यान मन नव
 पदक्य भरखारे ॥ ध्यान० ॥ तप अप संजम खरपी से से । सत-
 गुरुका सरखा । सरखा मब भवमें सुखदाहरे ॥ म ॥ क० १० ॥
 गरब नहीं करखा उन बनकरे ॥ ग० ॥ पलक एकमें पलट जाय ।
 या नारी है गयिक्य । दानसु संग से से भाहर ॥ हा ॥ क० ११ ॥
 समत १६ से ४३ । जेठ बह जेपुर के माहरे । ये । करम कवारी
 जोड लावखी । अडावजी गाह । करमक मत बांधो माहरे ॥ क०
 १२ ॥

॥ राग होरी काफीरी ॥

मतलू गारे । हारे मत लू गारे । प्राख पराया प्राखी ॥ मत० ॥
 भांकही । प्राख पराया आप मरीला । हारे बीरा । माल गवा केरस
 नाखी ॥ मत १ ॥ अरे बरमें जीव अउंलखा । हा० । बनावपवी
 में मनीजाखी ॥ मत २ ॥ बम बर केह ब्रह्म प्राखी । हा ।
 ब्याहारे बना करो करुणा आखी ॥ म० ३ ॥ पुन बीडुयानागा
 धार । हा । जानु बर कीया पढ दुख खाखी ॥ म० ४ ॥ अनर्थ
 बैर करे बेहामे । हा । एता पड पराह न पीआख ॥ म० ५ ॥
 इस इस पाप कर केह मुख । हा । काह दुख सहेता काया क मसाखी

॥ म० ६ ॥ धरम काज करे बहुहिंसा । हा० । यातो नरक जावणरी
नीयाणी ॥ म० ७ ॥ कहत जडाव जेपुर के मांइ । हा० । ज्यारी रक्षा
करो उत्तम प्राणी ॥ म० ८ ॥ १६ से फागण सुद तेगस । हा० ।
थे तो सुखे २ जावो निरगणी ॥ म० ९ ॥

देसी ॥ पूछे पीया क्यूं नै पाणीरे पंडीत

रोम कीसीसै म आणोरे भवीयो । रोस० । दोस करमको
पीछाणो रे भवीयो । रो० । आकडी ॥ १ ॥ रोस करीने निज
गुण बाले । परगुण दाय न आवे । काच ने साटे हीरा हारेतो ।
वीरथा जनम गमावेरे । भवीयो । रो० २ क्रोध-मान चंडाल
सरीखो । भाख्यो केवल नाणी । आगो पाछो कोइय न सोचतो ।
तोडे प्रीत पूराणीरे । भ० ॥ रो० ३ ॥ नेह गटावे बेर बधावे ।
अपजम पैडो बजावे । तप जप संजम मूल गमावे तो ॥ नरगनी-
गोदे भमावेरे । भ० । रो० ४ ॥ तिरजंच जोग लहे करोधी । सांप
वीछू गो थावे । आगला कर्म उदे में आया तो । फिर पाछो बैर
बधावेरे । भ० । रो० ५ ॥ क्रोध मान ए दोए मोरचा । माया
मान पडावे । पुरम थकी नारी होय जावे तो । नारीही ज कहावेरे ।
भ० । रो० ६ ॥ लोभी नर ए चारुइ सेवे । कयो दसमी कालरे
मांयो । सागर सागर में पड मूवो तो । नदराय धन खोयोरे । भ० ।
रो० ७ ॥ इत्यादिक केइ जीव अनता । ज्याने चार कपाय रुलाया ।
चारु गतमें चोपड खेली तो । छोटी ते सीय सुख पायारे । भ० ।
रो० ८ ॥ पर नीचा पर अवगुण करकर । मेल पायो धोवे ।
पग बलती नहीं देखे मुख । डूबर बलती जोवेरे । भ० । रो०

८ ॥ १६ से अकाल बेपुर में । तेपन होली चोमासी । निज आत्म
समझव्य करव । सुगतेसु ओढ प्रकसीरे । अ० १० ॥

देसी ॥ भांगरा गीतरी० ॥

कर न्यत्योने काहरे ले बासी । दुम्यानी जीवा । दुखसीरे गव
बासी । अब तु ठिरजा । पापहु हर जा । अगत अस सेमारे
बीबडला । अनम सेखे कर जारे बीबडला । आकड़ी ॥ १ ॥ नर
मव पयो तु एल गमायो । सु० आगेरे गयो प सतासी । अ० २ ॥
पूरव पु बी तु खड सुटाव । भूख प्राणी । रीतोरे होय आसी । अ०
३ ॥ पुदगल फडमें पडयोरे अनपको । सु० अब तोरे कांटो फांसी
। अ० ४ ॥ पाप बचायो ने पुन पटायो । तु मव मवरे गयो दुख
पासी ॥ अ० ५ ॥ ग्राख पराया तु इस इस लूटे । मू० सेखोरे
आसी होय आसी ॥ अ० ६ ॥ सुख पख पुनम । मरयोरे मरयो ।
संस्त-वादन रे जैपुर बासी ॥ अ० ७ ॥ ओढ अडल सुखाव । अगल
। सु । केतोरे पबो मुख पासी ॥ अ० ८ ॥

॥ जरा टुक जोवो तो सही ए देसी

श्री गुरु देव उपदेस । चतुर सुख पारो तो सही । दुम्यानी
समझो तो सही । होजी तत्रो कोष मान अरु सोम । ममतंङ्क मारो
तो सही ॥ अ० १ ॥ सु १ ॥ होजी मारे पडे मजन में मंग । संग से
पान्छो तो सही । होजी मारी अधरीष अटखी नाव । पार समझो
तो सही । होजी मनि प्रभू बीन दुख आचार । खारसे पान्छो तो
सही । सु० । आकड़ी ॥ २ ॥ भवतागर बीच नाव बाधकर पछ
घो सही । होजी अब सेखपाछो दुख । समझमे फेडा घो सही ।

होजी मा० ॥ सु० ३ ॥ पड़े मीथ्यायतनी रात आंतनुं मटोवो तो
 सही । सु. होजी अब गुरु बीन घोर अंधार । ग्यान गुल जोवो तो
 सही ॥ सु. ४ ॥ धर्म धजा लो दादबाण । सुघ भादना सही ।
 सु. होजी मारा सत गुरु खेवणहार । पार उतारेला सही । होजी
 मा. ॥ सु. ५ ॥ रोको आश्रव छेद । भेद नहीं तिरवामें सही
 ॥ सु. ॥ होजी भरो दान सील तप भाव । माल ले ढंठा छो सही ।
 सु. ६ ॥ पहुंचो भिवपुर ठाम । काम सीध होवेला सही । सु. होजी
 तिहां बेटा जगजजाल । तमासो जोवेला सही । होजी माने गुरु ॥
 सु. ७ ॥ १६ से तेपन महा ब्रद जेपुरमें सही । होजी तीथ सातम
 ने समिवार । जुगतसुं जडावजी कही ॥ सु. ८ ॥

हा हुकम लीख दीया सदगसे । हा कनइयो कान पीयारो । महा
 बीर मामण के मामी । आया प्रियमणी कूख मोजार । नहीं मीटे
 जगमे होयणार । ए निस्ते कर लीज्यो धार । कहांकु सोच करो
 नरनार । मीटे न जगमे होयणार । आकडी ॥ १ ॥ रावण तीन
 खडको राजा । ले गयो रामचंद्रकी नार । पडयो नरकमें खावे
 मार ॥ मी. २ ॥ सोकां आल दीयो मीर उपर । सीताने काडी बन
 मोभार । पगधर जाण दोय कु नार ॥ नई. ३ ॥ सेण करारा समकीत
 धारी । घणा जियसु कियो उपगार । बैठे नावा ब्रद मोभार ॥ मी.
 ४ ॥ कु डगीर माधु गीत भाजि । पहुंच्यो सातमी नरक मोझार ।
 ग्यानामें तेनो अरीहार ॥ नई. ५ ॥ पडय पच बुयके सागर । जुवे
 खेल हारी नलनार । महा भागवने छे गीतवार ॥ मी. ६ ॥ कृष्ण
 महाराजा करी दलाली । मान देइ ताया परवार । माठी गतमे
 लीयो अक्तर ॥ मी. ७ ॥ छाने जाय वध्या गूजरघर । मरया

फसुं बी बन मोझर । नही मन्थो पाखी पावसहर ॥ नही ८॥
 दीपायशतपती संतापो । दुगारकां बाली छीन मोझर । अतनिमजी
 वरुषार ॥ मी ६ ॥ अमातीरिख मझरीरनो । सरवा मृष्ट
 हयो मवहत । पोखो छीसमोष देव मोझर ॥ नही १० ॥ पोसले
 बान्पा दो साधू । बेठा समासल्ल मोझर । तिर्बकर दुख सया
 अपार ॥ मी ११ ॥ मीरग छीय्या मीरगावती सेखी । मेबरपान
 अंजवा नार । पतिवोरह बूख सद्याअपार ॥ मी १२ ॥ होयहार
 टले दुवा जगमें । स्थिर रर स्त्री अवतार । तेल चढी रह राखल नार
 ॥ नही १३ नीरुचय ग्यानी गम बाठा । अदमस्तेठा ले बीवहार ।
 कहत जडल जपो नवकर । मी सीख सुगुरुखी लीजे घर ॥
 नही १४ ॥ पंखतोनी नती द्रोपदा । नारदा । नारद द्वेप बरयो
 अद्युपार । मेल दीवी जिवा समुद्रपार ॥ १५ ॥

॥ लावणी लीरूपते ॥

तजिपरे आसत हर पर एकमना भजिए कृष्णकार सुनी
 सरधना ए देसी । तारो डुटे दीमरासीवज बूखे पेढे पूर जगत के
 भरती पूजे । दीसमे कमक बीज अरुले गात्रे । अ होय कडक
 सगद । आरुस करी समे दाजे ॥ १ ॥ अरो सत्राय कित लाय ।
 अमब्रत टाली ॥ अ या बाखी छे सुखदाय कटे कम बाली ।
 आंछडी ॥ २ ॥ हाड मार मे सोहराव टालीमे । मीरती
 पंच बमान इ ईमासीजे । बातभर जल बन ह । गिरख
 आछसे । गिर मीरनू ग विरेह राज । मीनख वसेगसे । करो ० ३ ॥
 अनाद सुद मझनो आनोडु कती । ए पांख पडपा बान्ध ।
 । पूनम बेती । सरब छीस ए सांज सबार नही मझीये । आदी रात

दोफार चोतीसे गीणए ॥ क० ४ ॥ १६ सें वायन । फागण
चोमामी ॥ फा० ॥ जेपुरमांए जडान जोड़ प्रकासी । ए चोत्रीस
सुंइ टाल सुत्र भणसी । वीधन सहु टल जाय । सीव सुख वरसी
॥ करो० ५ ॥

॥ ढाल ॥

क्या परमान करुंदा वदा । ए देमी । वार वारमें क्या तुज
बोलूं । मान कद्दा मेरा । सन स्वारथके मीले मृसाफर । नहीं कोई
तेरा । नहीं० । रे चतुरनर । नहीं० । ए तन तेरा तनक तमासा
पाणी पतामा । आंकडी ॥ १ ॥ भूटा तन धन जूठा जोवन ।
भूटा आवासा । पाव पलकमें छूट जायगा । जंगल होए वासा ।
जं० । रेच० । ७० । ए० २॥ हाडकी टटी चामका पडदा । बंध
रइ नामा । लोइ मांस अं में जलके । शौच नहीं मासा । सु०
रेच० सु ॥ ए० ३॥ नावे घोवे बेस । बणावे अंत्रकी वासा ।
इदेही पर धोन उगेगी । गड चरे घासा । गड० रेच० गड० ॥
ए० ४ । कहत जडान लगी जेपुरमें । मुक्तिकी आया । १६ सें
तेपन सुखदाई । जुठ नही मामा । जु० । रे चतुरनर जुठ नही
मामा । ए तन तेरा तन० ५ ॥

धरजा टोपी ए देमी । मातपिता सुत बंध वाम रे । मृतलत्र
केरा यार रे । गरज मीटी पूछे नहीं । ए तोडे जूनो प्यार रे ।
चेतो क्युं नी गीवार थारी । पाप न छोडे लार रे । आंकडी ॥ १ ॥
नात जात लाइने बंधव । खाड गले ज्या जायरे । रोग आपदा
आय पडे । जद दूरथकी भग जायरे । चे० २॥ पुन पाप संजोग
मील्यो । सब मेला हुवा आयरे । हटवाडा मेला जस्यो । सब

चित पाप्मी उठ जायरे । ये० ४ ॥ सुतो सुतो क्या करे बानि सुता
 आबे नींदरे । फल सीराणे आय खडयो । शिम तेरस आयो
 बींदरे । ये ५ ॥ छनक जीनकमें आयु जीजे । शिम अंजलीको
 नींदरे । फल कीरे विहू छारुमें । योतक योतक मारे जींदरे ॥
 ये ५ ॥ वन वन जोवन फारमा सरे । अवन कर्तां बायरे । दान
 सीयल तप छरची सेहै । आगे नहीं पिसतायरे । ये ६ ॥ क्या
 रंगी रंग फंगी । देख देख मत कुतरे । चार दीनाकी चानची ।
 पिस छेद होती पूसरे ॥ ये ७ ॥ मदमातो रातो बीपय नमें ।
 मन नावे जान छाये । जीव रविरो हसे ह्याये । मरने दुग्गठ
 बायरे । ये ८ ॥ मान सील मगुरुकी साची । मत जर फेस
 कीगुरके । मेपुरमाय अडाव कल है । चेते तेह सुररे ॥ ये ९ ॥

॥ बालचदजी महाराजना गुण लिख्यते ॥

। गीते कुल गुलाबरो । ए देवी । सामीजी पधारया है सेखी
 । मारे हावडे हरल अपारो । मारी सजनी । दरसब देखी
 सुनोरावना । अरा सङ्गत ठाँ अरातो । मा वालो सुगुरुजीने
 रईश । अङ्गो ॥ १ ॥ वन इराडा मारो । साइ बीरी
 आइ बरद मा । रोम राम नव गमीपो मरी मगटी बडीय
 पूराइ । मा ॥ वा २ ॥ आ । करारष हु रई । मरी कलीए
 मनोरव माडो ॥ मा ॥ सकल पडो दीने आवनो । दरसब
 दीना दीनदीयासो । मा । वा । नीत उठ सेरा सारस्या ।
 अपा सुहस्या भीरु रायी । मा । मन मय मास्या मास्या ।
 देस्या दान उलट मन आशी । मा ॥ वा ४ ॥ बोग
 मीन्यो दस बोसरो । करो दान सीयल तप भावो ॥ मारी० ॥ ए

अवसर चूको मती । कोड उत्तम खेजो दारो ॥ मा० ॥ चा० ५ ॥
 घर धंधो छे कारमो । सब मुतलम केरा यारो । मा० । साचो
 सरणो धर मेरो । माने भर भ्रममें आगारो ॥ मा० ॥ चा० ६ ॥
 चैत सुकल छ तेपने । जडागजो जोड बणाई ॥ मा० ॥ जेपुरमां
 ए जुगतेसुं । सब वादारे मन भाइ ॥ मा० ॥ चा० ७ ॥

॥ नेमजीरो वारा मास्यो लीख्यते ॥

। न्यालदेरा गीतनी दनी । अ राडमें आग हुतीजी कह । आमी
 जान बणाय । आया तो फिर क्यु गयाजी । होजी कोइ पलुवा
 दोम चडाय । प्रर फार आगे नेर मरा कीजो । आंरुडी ॥ १ ॥
 सायणमे सजय लीयोजी कह । मग लेड परिवार । जाय जाय च-
 ढया गिरनारपेजी । होजी । कोइ हमारी न लीनी तार ॥ अ० २
 ॥ भाद्रवे परवा घणता क नदीना चना नोर । चारु दान
 परन जे कोलरोजी । होजी मारे लागे तीखो तीर ॥ अ० ३ ॥
 आसोज आमा बडीजी । अर आमी दीनदीयाल । मनरा मनोरथ
 पूमीजी । होजी माने कामी गोन नीशाल ॥ अ० ४ ॥ कातीक
 कय नहीं आगीयानी कह । यो मन मांमो थाय । पर्य दीशाली
 किम करुंजी । होजी मारो तन धन एलो जाय ॥ अ० ५ ॥ मी-
 गसर महीने पद भरेजि । कह मगल माता जोय । मार न पूत्री
 साहीगजी । होनि मैते भुग २ पीनार नेय ॥ अ० ६ ॥ पौष
 महीने मी पडेजि कह । जर्म नदीना नीर । नेन खडा गीरेनारपेजि
 । होजि ज्वागे कपे नगन गीर ॥ अ० ७ ॥ मघा वसंत वीराजि-
 योजी कह । फुली मय नेवार । हुं तुम नानी केन ज्यु जि । होजि
 मारे पूरवली अंतराय ॥ अ० ८ ॥ फागण फाग खीलावज्योजी

कह । अरु कल कर जोड । अवर पुरुषनी आसुडीजी । होजी मारे
 येइ मायारा मोड ॥ अ० ६ ॥ आंचो महुडो चैतमेंची कह । नेम
 न बहुम्यो लीगार । कठ सून्यो कोयलसगोजी । होजी माने ॥
 तु दे तु कर ॥ अ० १ ॥ फल पाका बैसाखमेंजी कह । पाफी
 दाडम द्राख । कचची कर बारो प्रीतडीजी । होजी माने छोडा
 ओगण माळ ॥ अ० ११ ॥ जेठ तप अति आकरोजी कह ।
 पाजे लू डो जाल । नेम लये गिरे नारेजी । होजी देही अतिसुख
 माळ ॥ अ० १२ ॥ बरस एक पुरो कीयोजी कह । झूठा राज-
 सनार । इक रंगी करी प्रीतडीजी । होजी कह घन न्यारो अबतार
 ॥ अ० १३ ॥ छे संजम सारे गझजी कह । सरस कीयो अबतार
 । सुगत बीसो क्यम कीयोजी । होजी पीव पहेला राजस नार ॥
 अ० १४ ॥ १६ से भावनजी कह । जेपुरमाण बडार । सावस
 कह तिनि पंचमीजी होजी यातो मागे सुगत पडाव ॥ अ० १५ ॥

॥ दूजो धारा मास्यो लीख्यते ॥

राग बडे पर ताल छानीरे । ए देशी । अत कडे तु चैत प्राची ।
 बीस्यो जस्य बैसाख । ने साखा परम पापरी । बरि पाफी समकीत
 दाख । मत कर मारो मारोरे । धर्म बीने पूजे बमारोरे । आंखी
 ॥ १ ॥ श्रेष्ठ श्रेष्ठ तुम बाखजोरे । मानसो अबतार । पुन संजोगे
 पामीपोरे । सो पछो मती हार ॥ म० २ ॥ असाढा आसा फलीरे
 । मेरया करतमसार । सत्गुरु इंद्र पडकीयो । बाबी बरसे सगन
 पने धार ॥ म० ३ ॥ सावस स्वस रस पीजिपरे । दिन बाबी
 मरपूर । मीण्यां रोग मीटा बसी । न्यार सीव सुख नहीं छे बूरे
 ॥ म० ४ ॥ भड्डे बीरखा गणीरे । दाख करत पूछर । बनम

मरण नदीयां चली । मत द्वे कालीघार ॥ म० ५ ॥
 आसोजा आसा करे । गुरु वचनाकी प्रतीत । स्वात
 वृंद जिम मेलज्यारे । नहींत्र होला फजित ॥ म. ६ ॥ काती
 किरतव आणणारे । देखो मत पर दोष । निज पर आत्म थोलखोर ।
 आणो मन सतोष ॥ म. ७ ॥ मीगसर ममता मारनेरे । समता
 करो घरनार । सहल करो सिव पुर तणी । राखो केवल चौकीदार ।
 म. ८ ॥ पोम महीने सी पड़ेरे । सह परीसा सुर । कायम
 भागा बापडा । ज्यारा भूंडा दीसे नूर ॥ म. ९ ॥ महा
 वसत भली रितु आइ । हुलस्या भगी सुखकार । फुली पुरखदा
 देखनेरे । दरमण गुरु दीदार ॥ म. १० ॥ फागण फाग खेलो
 भव प्राणी । समक्रीत स्त्रीके संग । पीचकारी पछकाणरी ।
 भर डारो सील सुरग ॥ म. ११ ॥ वारा मास वीत्या केइ रीता ।
 पढी आउखामे हाण । गइ गइ सो जाणंदो । अब चेतो चतुर
 सुजाण ॥ म. १२ ॥ अठारसें वरस बावनेरे । जेपुर सेके काल ।
 जेठ महीने जडावजी । जोडी वारे मासरी ढाल ॥ म. १३ ॥

कहोरे उदा सामजी कद आसी । ए राग । साधुजीरी वंदगी
 मैं तो करस्यारे । माहाराजारी वंदगी मैं तो करस्यां । हारे मे तो
 करस्यां ने भव तिरस्या । सा । आकडी ॥ १ ॥ मूनी पंच माहा
 धरत पालेरे । मूनी हरिया पथ नीहालेरे । मूनी आत्म गुण
 उजवाले ॥ म्हा. २ ॥ मूनी गुण सताइसधारीरे । तपस्या कर
 कठण करारीरे । खट कायाना हीतकारी ॥ सा. ३ ॥ मूनीग्यानदानरा
 दातारे । अनाथा जीवारा नाथारे । दरसण देख्या मीले सुख साता ।
 म्हा. ४ ॥ मुनी दोष बेतालीस टालेरे । सत्रे भेदे संजम पालेरे ।

બીન આમ્યા પ્રમાણે જાણે । સા ૩ ॥ મુનિ ગાંધ નગર પુર ફરિતારે ।
 મુનિ પર ઉપગાર ઘ કરતારે । એક ધ્યાન સુફલ મન ધરતા ॥ મહા.
 ૬ ॥ અઢરેસંસસીઈગરથ ધારારે । મુનિ ઉપસમ રસના ક્યારારે ।
 માને સાગે જાડ ન્યૂ જાતા ॥ સા ૭ ॥ સંસાર દુષ્ણુ ન્યારારે ।
 મ્મ બીજાનિ સાગે પ્યારારે । રાગ દેખને બીજાજાતા ॥ મહા ૮ ॥
 ન્યારી જાણી રમરત મેવારે । જોસઠ રૂઢ કરે ન્યારી સેવાર । જારે
 જારે જંદુ મુનિ જવા ॥ સા ૯ ॥ નવ જાડ સહસ જત જારીરે । કેર
 જાણપણે પ્રીતજારીરે । કરજી કરે અતમા ઠારી ॥ મહા ૧૦ ॥
 કેર તપસી ત્યાગી બેરાગીરે । કેર મ્યાની ધ્યાની જડમાગીરે । સીંચ
 રમજીમુ સીંચ જાગી ॥ મહા ૧૧ ॥ ન્યામેં ગુણ અનંતા પાથેરે ।
 માંસુ પૂરા ક્રિયા ક્રિમ જાથેરે । અઢારજી સીંચ નમાથે ॥ મહા ૧૨ ॥
 સમ્મત ૧૬ સેં જાણીસેરે । નૈગીન રંમાગી દુષ્ણસેરે । જીયો જોમાસો
 સુખીજાસે ॥ સા ૧૩ ॥

॥ ઢોઢીયા પદ સીંચતે ॥

॥ રાગ અષ્ટમી રેસી છે ॥ મન અષ્ટ કેસે જુઢેરી । પાપી
 બીન પાંજે ઠઢેરી ॥ મન અષ્ટ કેસે જુઢેરી ૪ ॥ મ ॥ અંકઢી
 ॥ ૧ ॥ પરીએ બીનમેં સીન હોય પુણગસમેં । બીનમેં જોગે જુઢેરી ।
 કરણજાસ । જાસ હોય જોસોસો । બીનમેં જાણ જુઢેરી ૪
 ॥ મ ૨ ॥ પરીએ મનજી મોજ કરે મનસુજા । માંગે કેર ગઢેરી ।
 સેજસહી જિમ કર્મ કરમાથે જો । દુરગત જાય પઢેરી ૪ ॥ મ ૩ ॥
 પરીએ મ્યાન સગામ જામ મન ધોજા । ઉપર જાણ જુઢેરી । મન જસ
 રાજ અઢાર મેપુરમેં જો ॥ કર્મ જાણીસેં જુઢેરી ૪ ॥ મ ૪ ॥

॥ राग तेहीज ॥

॥ मनकी गत कैसे लखेरी २॥ कभी जीन कह नहीं सकेरी ।
म. ॥१॥ आंकडी । एरीए नाटक चक्र वक्र गत एहनी । जावत
को नै दीखेरी । चउ दीसमांए भमे भवरा जीम । फिरतो कोनै
थकेरी ४ ॥ म. २ ॥ एरीए नीरलज लाजे नही मन मूर्ख । ठाम
कुठाम तकेरी । मनकी लहर सुणे कोइ सैंणो तो । जाणे भूठो ज
करी ४ ॥ म० ३ ॥ एरीए मन मावत तन चचल हम्ती । ज्ञान
अंकुसनकैरी । मन बस राख जडाव जेपुग्में तो । ज्यै सुख चावे
अखेरी ४ ॥ म० ४ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। मनडा मेग वोहोत हरामी । जाणे एक अंतरजामी ॥ म० ॥
१ ॥ आंकडी । एरीए निज गुण छोड रमे पर गुणमे । एही जी-
वकी खामी । सतगुरु सीख भीख नहीं भरतो । होत जगत बदनामी ४
॥ म० २ ॥ एरीए इमरत छोड । वीसन विप पीवत । होए कुम-
तको स्वामी । इणकी संग बहोत दुख पायो तो । अब तो छोड
गुलामी ॥ म० ३ ॥ एरीए मनकी फोज चोज कर जीते । सोइ
मुगतके गामी । जैपुरमांए जडावजी सीपू । नमत सदा सीर
नामी ४ ॥ म० ४ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। मन चंचल हाथ न आवे । दोडथो वायर जावे । म० ॥ आंकडी
॥ १ ॥ एरीए घेर घेर लाउ नीज गुण में । तो पिण फंदे लगावे
। फाल भरे बदर की नाइतो । कूद कीनारे जावे ४ । म० २ ॥
एरीए राग रंग अरु ख्याल तमासे । वीगर बुलायो जावे । ग्यान

ध्यानमें आलस आवत । भरत उयासी आवे । म ३ ॥ एरीए भूत
पीसाच कुंवर एहीकेहर । भूषत पीख बस बाब । वैपुरमाण बडाव
कहे । मन पाख बीने उड़ आवे ४ ॥ म० ४ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। पूजनी तो बडा उपगारी ॥ आंफकी ॥ एरीए पच महाप्रत
निरमल पाले । गुण पट तीस नीहारी । सुमत गुपत मन डीङ्क
राखे तो । ममता कुमल बीहारी । पूजनीस रहनीत न्यारी ॥ पृ०
१ एरीए सुतर भेडी सजम पाले । तपस्या बीबिच प्रकारी । दोप
बयालीस गलत मली पर । क्षा नीरदोषण बहारी ॥ पृ० २ ॥ एरीए
बाखी बरस । इमरत घारा । सुख ममज नर नारी । मीध्या पारे
धुप आत्म को तो । सम अक्षर उगारी । क फल लागी सुख मारी
॥ पृ० ३ ॥ एरीए समतारा सागर । ग्यान उबागर । प्रतरोधे
नर नारी आप तीर अवरनकु तार तो । कर कर पर
उपगारी के । अप तो बारी हमारी ॥ पृ० ४ ॥ एरीए बीचर ग्राम
नगर पुर पाण्य । बहोन फरो उपगारी । सहर सुपत्तूर बग पदारी
तो । बाण जोष नर नारी । के इच्छा पुरो हमारी ॥ पृ० ५ ॥
एरीए पाण बीरान्या पूज रतनर । आचारस पद मारी । सांरली
घरत म्होनी मूरत । दर उख आउ बारी । क नीत नीत बनबा
हमारी ॥ पृ० ६ ॥ एरीए एज जीमशु कजूर कट्टर सग । महीमा
इक विहारी । ब बर कोड़ बडाव कहतहे । सहर जोय्याला मजारी
। घेमाय सुकस्त गरुवारी ॥ पृ० ७ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। सांवरा मती आरो गीतनारी । साइ परजव रागस्त नारी । सा०

वाला भैंतो कै कै हारी ॥ ला० ॥ आकड़ी ॥ एरी ए मती जाणा
मथुरा में आणा । करके जान तियारी । परण्यां पाछे जोगारम
लीज्यो तो । मैं भी साथ तुमारी के । लेउंगी संजम भारी ॥ सां
० १ । एरीए पसुकी पुकार सुण चाले । मेरी पुकार न वारी
। भुर भुर में पंजर भइ प्रतीम । विरह ढावानल भारी के । दाजत
देह हमारी ॥ ला. २ ॥ ऐरीए पूरपोतुमको विद ने । जीव दया
दील धारी । मेरी दया न करी अलवेसर । छोड़ गये गीरधारी के
। बिलखत हे महतारी ॥ सा. ३ ॥ ऐरीए बोत
जलुस करीने आए । हरी हलधर संग थारी । उनकी जराभर
काण न राखी तो । मुरजरए हे मूरारी । लाजी सब जान तुमारी
॥ ला. ४ ॥ एरीए पहेला वैराग हुतो ज्यो थारे तो । क्या न कीयो
बीसतारी । विन परण्या मारे खोड लगाइ तो । किण आगे करु
ए पुकारी । जाणे कुण पीड हमारी ॥ सां. ५ ॥ एरीए वरण
सांवला । सोमांएगाठीला । लख न सके नर नारी । कपट करी
मेरो झीयो सगारथ । राखी अकन कवारी । करी व्हा चोरी तुमारी
॥ लां. ६ ॥ एरीए बारा मास विलाप किया केइ । दीया ओलंभा
भारी । बरसी दान देइ ब्रत लीनो तो । अब व्हां लागत कारी ।
जगतमें होए गइ जहारी ॥ सां. ७ ॥ एरीए अब जाउं कहा पाउं
सावरीयो । दूँढत दूँढत हारी । सातसैं सखीयां संग लेइ राजुल ।
चड गइ गढ गोरनारी । मीजे ज्या प्रीतम प्यारी । लां. ८ ॥
एरीए ऐसा कठोर भए तुम कबके । पूरव प्रीत बीनारी । तुंम
तोडी सो मैं अब जोडु तो । लेउंगी सजम भारी । रहूंगी संगे
तुमारी । सां. ९ ॥ एरीए कत एक तार । लार लेइ प्रीतम ।

पहुँती गुगत मन्दार । एसो नेह करे कोइ उत्तम । प्रतीव्रता
आचारी के । अवीकृत प्रीत पचारी । सौं १० ॥ एरीए १६ स
पचावन परसे । पोसमें ठंडफरारी । औपुरमाए बडाव कइत है । धन
धन राखुछ नारी क । नीति नीति बंदबा हमारी ॥ सौं ११ ॥

॥ लावणी लीख्यते ॥

॥ रथ खड़ी रागु रथ खड़ी जाइ ननख आवत है ॥ रथ ॥
घासो सखी छवि देखवाहु । मसा देखवाहु ॥ रथ ॥ आंकड़ी
॥१॥ ज्यन कोइ जाइ व्यावने आए ॥ आगे अपहरा गावन है
॥ म ॥ तेरथ आय बोहत बचाय । देख देख सुख पावत है ॥
म० ॥ रथ २ ॥ पसुखी पूछर सुखी फित बासे । सबही मील
समजावत है म० ॥ रथ० ३ ॥ बरसीदान बेइ परमरवर सुरनर
आवांइ पावत है । म । स्व ४॥ संजम से गीरनार सीधाय ।
सीतरमखीहु आवत है । म ॥ रथ ५ ॥ सब सखीयां बीहखी
होए घासी । राजुछ सुख दुख पावत है ॥ म ॥ रथ ६ ॥ बहु
सखीयां संग से कर बासी । रहनेमी समजावत है
॥ म रथ ७॥ अवीकृत प्रीत करी प्रीतमसे । अजर अमर पद
पावत है । म ॥ रथ ८ ॥ बे कर जोइ बडाव बैधुर में ॥ छुस
छुस सीस नमावत है । म ॥ रथ ९॥

॥ रसना लीख्यते ॥

॥ देसी बैरी लसकरीया । ए राग । ए रसना बीचारीने
बोलो ए । हीरासु पथर मती सोसो ए । आंकड़ी । बीगर बीचारी
कर सक । थारो बाले अपजस होस ॥ रस ॥१॥ खाय बीगाडे

पापणी तुं । बोल घटावे तोल । लव लगधे लाली रहे तुं । हारे
जनम अमोल ॥ रम. २॥ दोष उघाडे पारका हे । त्रिन पूज्यां
अयाण । ज्यों तोने नहीं आवडे तो । बोलो भीठी बाण । रस.
३॥ मीठी माणी प्यारी लागे हे । जन्मका वेर भागे ए । आ.
फीरी छे । निंया खोरीनापटेनी ररमो । परसुंगलावेपार । नीचली
रहनामभागणीनाने ममनाइ मो वार । रस. ४॥ भणगे गुणगे
सीखगे । थारे मल न अवेदाय । गाल गीतमे अग- वाणी ।
सारा पहेली जाए रमना । हीगरी खडकी खोलोए । रस. ॥ ५ ॥
च्यारारी चुत्ती करे ए । अँडो खायनीसुग । मान पडावे
बोलने । मूडे मूल देवे मय जुग हे ॥ र. ६॥ होट कोटके मांए
वैठी । वरीम चोकोदार । सक न माने तेहनी । धस नीरसे तत-
खिण वार ॥ र. ७ ॥ उचन अमोलखा जिने क्या हे । गुणधर गुंठी
मान । गुण म्हलायत छोडने । ज्वारा अवगुण तारथ निहाल
र. ८ ॥ डमरत वाणी बोलणी ए । खट काया होतकार । जेपुरमांए
जडावजी । थाने साख दाना नारवार ॥ र. ९ ॥

॥ रसनारी ढाल दूसरी लीख्यते ॥

कर हारे घुमतडो घर आये । ए देणी । काल अनने तू भ-
योरे । जीवा लग रट । हारे प्राणी लग रट । खांचा ताणजी । सम-
जावे ए सुगुरु तोने । रमना हे गीगर गीचारीने बोल । वैरण ए कइए
गटावे मारो तोल । आरुडी ॥ १ ॥ गुण ढाके गुणवतनाए । पर
नादया हाए परनिंदा मे आगेमाणी ॥ स. २ ॥ तूं भोली समजे
नहींए । मारा नीज गुण ॥ हा. मे पडी हाणजी ॥ स. ३ ॥ वीगतमै

सागी रहए कैर बोले हा० अगए अयाबजी स० ४ ॥ खक विम
राजी रहे ए तू तो मेले हा० परायो घोषजी ॥ स० ५२ ॥ पर
आत्म कर उजसीए तू तो मेले हा० कर द मोषजी ॥ स० ६ ॥
बैर बसाव बोलन ए तू तो साथ हा० बीगाह नाकजी ॥ स० ७ ॥
खनम बीगाहे बीबनो ए तोनै मूलन ॥ हा० आवे साशजी ॥ स०
८ ॥ बंदीखानामे पबीए । धारे पाठ । हा० घोषीदारजी ॥ स०
९ ॥ हाम सया केर मातना ए । तू ती अस्तो । हा ए अस्तो
। साज गीतारजी ॥ सम० १० ॥ हे बंचल बपला बमी ए ।
तू तो बोले । हा० बचन नट कापजी ॥ स० ११ ॥ पोषसके
नहीं केवली ए । पासे कीरा बीद । हा० राखु समजायजी
॥ स० १२ ॥ प्रमूजी बचन रस पीजीए ए । नहीं कीजे ॥ हा०
आल पंपासजी ॥ सा १३ । गुल गाओ गुलवंतना ए । सदा
बरे । हा ए० मंगल मातजी ॥ स० १४ ॥ सीख दीपी निज
बीबने ए । मेंतो भारो । हा० आब प्रसताबजी ॥ स० १५ ॥ बचन
रतन कतना करीए । बोले जेपुर । हा माणवहाबजी ॥ स० १६ ॥

॥ देसी ॥ बड़े घर ताल लागी रे ॥ ए राग ॥

मन बंचल फिर न रयोत्रि । जब तुम कीनो अपार । तन सक्ति
नहीं आपरी । तुम बोबो हीरदे बीबतर । म्हाराजारी । मीठी बाही
र । समो अमीए समाही रे ॥ आंकडी ॥ १ ॥ बेकर छोडी बीन-
उडी । नचो सीस नमाय । अज कठ अलबेसर । बे तु बज्यो
थित सगाय ॥ म्हा २ ॥ दुकर करवी आपसीबी । मार्ग योग
पाट । पगल्यालए पड़े नहीं ॥ जाने बरस आया पूरा साठ ॥ म्हा०

३ ॥ गिराम नगरपुर वीचरताजी । तार्या गणा नग्नार । अथ अव-
सर थिर बासनो । तुंम याही करो उपगार ॥ म्हा० ४ ॥ तन मन
थिरता राखनेजी । भजन करो भरपूर । किण वीद मारग चालस्यो ।
मारवाड घणो छे दूर ॥ म्हा० ५ ॥ आग्याकारी आवरेजी । सिप
रतनारी खान । सीध सरब सेवा करे । थाने अनमती दे सनमान ॥
म्हा० ६ ॥ म्हावो आवो मैं करांजी । मोरय्य जे मैं पुकार ।
ज्यो उपर कर जावसो तो । जोर नहीं है लीगार ॥ म्हा० ७ ॥
१६ सें तेपन भलोजी जैपुर सेंका काल । अर्ज करे जड़ावजी ।
तुम मानो दीन दयाल ॥ म्हा० ८ ॥

॥ देसी ॥ बैरी लसकरीयां ॥

ए राग । तुं पापी बहु पाप कीयाथी । तुं चुगली तुं चोर ।
बैरी तूं । तुं लंपट परनारनोरे । अधमीं अंगोर ॥ १ ॥ प्राणी पर-
देमीडां । थारी अबतो सुरत । संभाल पापी जीवडला ॥ आं० ॥ तुं
करोधी तुं मानी अंखारीं । तुं कपटी कठोर । बैरी तुं । तुं लोभी
तुं लालचीरे । नीसरमी नीठोर ॥ प्रा० ६ ॥ तूं रागी तुं द्वेषी
जगत को । तूं दूसमण तूं सैण । बेरी० सुख दुख करता तुंइ आ-
तमको । दुख मेटण सुखदेण ॥ प्रा० ४ । तुं बालक तूं बाबलोरे
तुंइ जोध जबान । बैरी० तु कायरतुं सुरमोरे । तु बूढो नादान
। प्रा० ५ । तूं किरपण तुं दाता कहायो । तूं मा तूं साहूकार ।
बैरी तूं० ॥ तुंइ रंक ने तुंइ राजा । थारा चरित अपार ॥ प्रा० ६ ॥
तू अग्यानी तुंइ मुख । तूं ग्यानी प्रवीण ॥ बैरी० तुंइ सरागी
तुंइ बेरागी । तुं बडभागी तुं दीण ॥ प्रा० ७ ॥ तुंइ

बोगी । तु फकर फैकीर । बैरी० तुइ धर्मी तुइ अधर्मी । तु
 र्बचस तु बीर । प्रा० ८ ॥ तुइ सिध मे तुइ संसारी । तु तपसी
 तु सत । प्रा० ९ ॥ कह न सकु करमनकी बतका । काय रइया
 मगर्त । प्रा० १० ॥ चोरासीमें नाचता । पखा सांग न्यापो
 लगदीस । रीजाया प्रभू आपने । माने हुस्ती करो बगसीस ।
 मरा प्रभूजी दीन दयाल । माने बनम मरखसु टास । झांकी
 फीरी छे ॥ १० ॥ ज्यो दुख पाया देखने । माने माफ़ करो
 मगर्त । मति नाचे तु पापीया । पारे आपो, भवारो अत
 ॥ मा० ११ ॥ १२ से एकवनेजी । केपुर होसी चोमास ।
 अरव करे बहावजी । प्रभू पुरो हमारी आस ॥ मा० १२ ॥

॥ बालचंदजी महाराज ना गुण लीख्यते ॥

देसी । केरवो । स्वामीजी अत्रुमास दीपावनेजी । ये हुवा
 अपरने स्था । सतगुरुजी माएत बीरद बीचरनेजी । नारी बगी
 किन्यो सार । सतगुरुजी अर्ब हमारी सुख लीन्यो । कीरपा कर
 दरसख दीन्यो ॥ झांकी ॥ १ ॥ सुख सुखने पदारीयाजी ।
 पाके हुवा तिस सुखकर । सामीजी छे परवार पदारयोजी ।
 कोइ माने दुख आपार । स० २ सामीजीरा मेख कबल दल
 पांखडीजी । पाको सुखडो पूनमचंद । सतगुरुजी मवक बकोर
 नीहासनेजी । कोइ पाये परम आवांइ । स० ३ । सामीजी अतसे
 धारी आपसाजी । कोइ बीराहा छे कलूकस्त । सामीजी तु
 पाखंडी बपीया रहेजी । कइ जावे मूढो टास । स० ४ । सामीजी

पाट वीराज्या फावताजी । जाणे केसी गोतमरी जोड । सामीजी
 गुरु भाइ गुण आगलाजी । नीत नमन करुं मद मोड । स०
 ५ । सामीजी रासी सबडा खीवराजजी । कांइ व्यावचमें भरपूर ।
 सतगुरुजी रात दीवस हाजर रहेजी । कांइ हंस बडा सिस सर
 । स० ६ । सामीजी फते फते कर पामसीजी । कांइ उत्तम गत
 प्रधान । सतगुरुजी तप कर कर्म खपावसीजी । काइ भजन करे
 भगवान । स० ७ । सतगुरुजी सन संतनके लाडलाजी । कांइ
 वालक सिप सुजाण । सामीजी सरणो लीनो आपरोजी । तुम
 राखजो जीवन्त प्राण । स० ८ । सतगुरुजी पुरण पुनमचंद्रमाजी ।
 थारे नव दीखत अणगार । सामीजी वोत जतन कर राखज्योजी ।
 ज्याने दीज्यो पार उतार । स० ९ । १६ सें तेपन भलोजी ।
 कांइ जैपुर सेंखेकाल । सतगुरुजी अरजी एह जडावकीजी । तुम
 मानो दीन दयाल ॥ स० १० ॥

॥ बालचंदजी महाराजनी ढाल दूसरी लीख्यते ॥

। देसी । मनडो उमायोहो श्रीमिंद्र भेटवा । ए राग दोहा
 आद नम्र अरिहंतने । गणधर गोतम देव । सासण नायक
 वीरजी । नीत प्रत सारुं सेव । १ । सिधरिध नोनीध करे ।
 टाले सकल कलेस । बालचंद मृनीराजना । गुण केसुं लबलेस
 । २ । समत १६ सें हो वरसज तेपने चैली दसगवो जाण ।
 सुखे समादे हो । जैपुर सहर में । प्रगच्या मृनी जिनी भाण ।
 बाल मृनीसर हो मारे मन बस्या । १ । भूलु नहीं खिण मात ।
 पर उपगारी हो । तारी नीज आतमा । खट कायारा नाथ

। आ० बा० २ । सीष चतुर भील हो । कीनी बीनती । अठ
 पाखे बीराजो दीवाल । पालन कीज हो खेत्र मायरो । कड़ो
 मीथ्या सल । बा० ३ । उन बल खीया हो । माय्या नायजी ।
 छ पिश देखी फल । सीष सरबनो हो । अति आगर करी ।
 कीनी अर्ब मंजूर । बा० ४ । सासवर चारा हो । मीह बीम
 गूकेल । पूज गवा नरनार । बचन लषद कर हो । सहुने
 सु खेकीया । मेटे मीथ्याल अचार । बा० ५ । आज समाखो
 हो । संसार सहुमें । तारक नाश जेम । मायतनी पर हो सेता
 संमालया । भून्या आवे केम । बा० ६ । स्वमत परमत हो ।
 सहुने सुहावया । मीठ मीसरी जेम । दीवाख सुसदी हो सेवा
 नीत सारवा । बंदगी करी मूनी खेम । बा० ७ । ग्रीष्म अतु में
 हो सीनी अतापना । चार बीगेरा त्याग । नीत तप भोजन हो ।
 एक बल कीयो । दीन दीन चहतो बेराग । बा० ८ । एकज
 चादर हो एक बीझक्यो । सयो सी ठठार । अरस नीरससु
 हो देहीने संतोफता कड़यो तप अप सार । बा० ९ । अलप
 उपही हो मंदी चोकडी । आलीज बचन प्रमाख । बीरला हो
 सीडो । इख कस्तूरखले में । गुल रतनाली लाख । बा० १० ।
 समत १६ से हो । १६ सो मलो । मिलस्या सुखे
 चोमास । संजम सीनो हो । तिहा सुम मडोरते । मूनी मप
 राजजी रे पास । बा० ११ । अरस साइजीस अ हो । संजम
 पासने । गयो कीयो उपगार मरुपर मास्तल हो । देस इ डाइमें ।
 पाद करे नर नार । बा० १२ । बेदनी कमज हो आयो खेर

में । आउ करम गयो खुट । सास खासनी हो सठ बहु ग्रासना ।
 आहार पाणी गयो छुट । वा० १३ । चंदण मृनीसर हो ।
 भलाइ पधारीया । साज भरीयो भरपूर । व्यावच कीनी हो ।
 मुनी तन मन करी । रहत सरन हजूर । वा० १४ । करी आलो-
 वणा हो । सुध प्रणामे सु गुरु भाइरे पास । पींडत मरणज हो ।
 देम वीवारमें । एक मुगतरी आस । वा० १५ । बढ बैसाखज
 हो । छपन सालमे । तेरस पाछली रात । राइ पडीकमणे हो ।
 सुध उपयोगसुं । करी हमराज जी सुं वात । वा० १६ । इण
 प्रणामे हो । काल करे कदां । तो पामे नीरवाण । इतनी कहने
 हो । प्राणज छोडीया । कर सागारी पछखाण । वा० १७ ।
 नीहरण कीनो हो । घोट उमंगसु । बाइ भाइ अरणपार ।
 वीरोहज खटके हो । मोटा मूनीतणो । पडे आंसुहारी धार
 । वा० १८ । मरुधरमाए हो मोटो मानीज तो आखातीज
 तीमार । जेपुरमाए हो कहत जडावजी । अग मुज कुण आधार ।
 वा० १९ । इति संपूर्णः ।

॥ श्रीमदीर बहरमानरो स्तवन लीख्यते ॥

। देसी । प्रेमरस मैठी राचणी । ए राग । होजी श्रीमिंद्र
 जीनराय । जुगमीदर जिन दूसरा । बढू वाउंए सुवाउंजीरा पाए ।
 सुजत सम दीस्टीधरा । बढू बहरमान जीन वीस । वे कर जोडी
 भागसु । आरुणी । १ । मयम प्रभूजी छटा देव । रिखवा नंदण
 सातमा । करु अनत वीरजीनी सेव । भजो सुर परमातमा ।
 व० २ । वीसार वीजेधर जाण । चद्रानदण चित धरो । चद

बाठ'झीरी आख प्रमाण । भूखंगरी सेवा करो । बं० ३ । इसर
भी नेमजीबंद । बीरसेवा दील प्यावण । माहा म्हर बस आख'द ।
अन्ध बीर गुण गावण । बं० ४ । ए बीसुद भिनराब । खेव
बीदेह बीराजीया । बन्ध सेव करे नर नार । मभ संचित कर्म
मंजीया । बं० ५ । १६ सें ने बरस फालीस । चोमासो नवा
सहर में । झीना भिनकरजीरा गुण गिरांम । तबन मलो मैदी
रागमें । बं० ६ । ससीवार काली सुद बीज । रंमाजीरा प्रसादसु ।
माने मीसे हुक्करी रीज । अडाव कहे बीनराजसु । बं० ७ ।
इति संपूर्णः ।

॥ देसी जीलारी ॥

। पूव बीनेचंदबी सुम मोरख आयाबी । मूनी लट्ठी मसा ।
भारे मन मायाजी । आंकड़ी । नष पालो नष प्रेहरोजी । नवरी
करो नित हांश । निरखो करो नष बोसरो । धारे कबसु पूरी
पझण । पू० १ । नक्कीनी मिरमें राखवाजी । नक्की दोप बाख ।
मअख करो नष बोसरोजी । नवसु खीपो मन ताख । पू० २ ।
तपसी नमू बसराजबी । सोमार्चंदबी बडा है बनील । हरख
हरख करबी करे । संखम पालो इंदियां बील । पू० ३ । म्यान
मखे गुस्तराजबी । न्यारे राख दीवस ओइ प्यान । बेरागी बख-
राजबी । सुनी सब रतनारी खान । पू० ४ । बरवमान मूनी
बरखम्पा । बली बेरागी हुवा छे त्यार । सोक माया इम आख ।
निस्थे बाखे बाखनहार । पू० ५ । सुअ तुम गुण मेरु कोड ।
कह न सह रसना पकी । अडाव नमें कर जोड । पू० ६ । १६

म एकाग्रनेजी । जैपुर में बग्गाल । पूज तथा प्रसादसुं । मारी
फलीण मनोरथ माल । पू० ७ । इति संपूर्णः ।

॥ चाल गोपीचंदरा ख्यालरी ॥

सामण नायक चीन धरीम । कांड गणधर लांगू पाए । सिध
मरुल कीरपा रुगेम । कोट नुध द्यो सरमती माय । आचारज
आदे करीम । कांड चट सीस नमायजी । मू० नी मुजाणमलणी ।
मर्लार पीन्यारी तारी आतमा । थारी मुग्ग प्यारी । भजन करोछो
परमातमा । १ । आरुडी । ग्राणी मुण नेरागीयाम । कांड जाण्यो
अर्थार मयार । चोथे आगरम चेनीयामरे । धन थारो अवतार ।
छती रीध छिटकायनम । कांड लीनो मजम भारजी । मू० २ ।
पूज बीने गुरु भेटीयाम । कांड माहा उत्तम भवीजीव । कर्म कटक
दल जीनवाम । कांड दी ममगत की नीव । कुटमी मेल्हो भुर-
तोम । थारी पील पील करती धीयजी । मू० ३ । पटणी कीस-
तरचंदजीम लघ मुजाणमलजी भिरात । बालपणे सं ।
मुनी बालचंदजी माथ । बाल निरमचारी दीपता सं ।
थारी मातजी । मू० ४ । खाणे पीणे पहरणे सकाड
चाले साथ । सीला अलूणी चाटवासरे । कोड्ये
वलीयारी जाड आपरीस । प्रीत अख्य
कीसतुरचंदजी । भलीरे बी ।

मंजन करोखो परमात्मा । मू० ५ । मैपुर सहर सुहावयोस ।
 छठे नीकसी हिरा खास । मोल तोल न्यारे नही सरे । चढया
 म्यान झरसास । मूनीकर न्यारा पारसु सरे । सीना रतन पीछ
 खजी । मू० ६ । १० से ५१ न सरे । मैपुर में सोमास ।
 अरब हर में जहाजजी सरे । पुरो हमारी आस । मांगू बघाई
 आसु । सुज बगमो सुगल अवासजी । सुख बीनेचंदजी । मस्तोरे
 दीपतो । मारग जैनरो । बे परठपगारी । पार न पायो गुरु
 म्यानरो । मू० ।

॥ देसी जीलारी छे ॥

प्रमूखी रीखव अजीत संभव अभिनंदस । ध्यात हो । सुख-
 छरी बीनरास । सुमत पदम । सुपासचंद । गुख गात हो ।
 बीखद । १ । प्र सुवन सीखत श्री इस पासपुत्र सानी हो ।
 सुख० बीमल अखत श्री धर्म संत सीध गामी हो । बीखद । २ ।
 प्र० कुंभ अरी मण्डी मुनी सोयत । सुग बीरता हो । सुख०
 नमीए नेम पर्स बर्षमान । बीम्पाता हो । बी ३ । प्र० म्यारे
 सुखकर । बहरमान बीनराया हो । सु० मैपुरमाण जहाज हरक ।
 सुख गाया हो । बी । ४ ।

राग तेहीज । प्र श्री भीमिखदेव बडा देव नमे हो । सुख०
 दाय न आवे अबर देव । सुज मनमें हो । बी० । १ । प्र०
 खेत्र निदेह बीजेमें । अति सुखकारी हो । सु० कुंभरीकखी नग-
 रीनी । छीब अत मारी हो । बी० । २ । प्र० संतकी मत वात ।
 श्री इस कहीजे हो । सुख० न्याय तीन सीधमीरो छानो छीजे

हो । जी० ३ । प्र० ज्यारा कुलमें रतन । चिन्तामण सरीखा हो ।
 सुख० आयर उपन्या । सुरनरना मन हरखा हो । जी० । ४ ।
 प्र० कला व्होतर पुरखतणी प्रगटांणी हो । सुख० जोवन वयमें
 प्रण्या । रुखमण राणी हो । जी० । ५ । प्र० आउखो लाख
 चोरासी । पुरव वखाणी हो । सु० धनक पांचसो काया कंचव
 वरणी हो । जी० ६ । प्र० भोग तजीने लोग लीयो । जिनराया
 हो । सुख० चोसट इंद्र प्रणमें नीमदीन पाया हो । जी० ७ ।
 प्र० एक चीत करने ध्यान सकल मन ध्यायो हो । सुख० केवल
 ग्यान । केवल दरसन पायो हो । जी० ८ । प्र० फीटक सींघा-
 सण चामर छत्र वीराजे हो । सुख० भाव मंडलने देव दुंदुभी
 वाजे हो । जी० ९ । अदवीच आप वीराजो पूनमचंडा हो ।
 सुख० जीग मीग २ दीपे तेज दीनदां हो जी० १० । प्र० बाणी
 सुधारस वरसे इमरत धारा हो । सु० सुगनर तीरजंच समजे
 न्यारा न्यारा हो । जी० ११ । प्र. अतसे थारी देख भवक मन
 मोवे हो । सु. सो सोइ कोसामें रोग सोग नहीं होवे हो । जी.
 १२ । प्र. मनडो मारो भीलवाने उमावे हो । सुख. तन मन व्रसे
 मिण आयो नही जावे हो । जी. १३ । प्र. गुणवंता तो वीन
 तारया तिर जासी हो । सुख. मोए मूरखने विन तारया किम
 सरसी हो । जी. १४ । प्र. एह अरदास सुणीने किरपा कीजे
 हो । सु. चाकर जाणी नीज चरणामें लीजे हो । जी. १५ । प्र.
 पूज रतन समदायमे बहु गुणधारी हो । सु. दीन दीन दीपे
 रभाजी इदकारी हो । जी. १६ । प्र. ज्यारे सरणे आय सदा

सुख पाया हो । सु बे कर मोह बडाव हरक गुन गया हो ।
 धी. १७ । प्र समस्त १६ स सेवरीसे सुख बासो हो । सु भावक
 भूषा । बडख सुखे जोमासो हो । धी १८ ॥

॥ देसी पीचकारीकी छे ॥

समुद्र बीजे सुत नम करवी । सोरीपुर बनवारी रे । सेना
 देवीरा नंदब । आ १ । कपन कोड बादब मील सारा । जान
 बख्त मारी रे । से २ । तोरबा आया मंगल गया हो । पसुबा
 करीर पूकरी रे । स ३ । कर कलहा रथ फेर चक्या है । बाये
 चक्या गीरनारी रे । से ४ । किम आया किम फीर गया पाछा ।
 ठाठ राहुत सुखकारी रे । स ५ । बासो सुखी बाठ पीरनारी ।
 देठ मी ओलमा मारी रे । से ६ । हमहु कोड मए नीरबारी ।
 बाए बरी सीकनारी रे । स ७ । बाठ मबारी मीत हमारी ।
 नकमें कर दीमी न्यारी रे । से ८ । में बाठ प्रभु तुम नहीं
 बावो हो । कैसे रहे एक वारी रे । स ९ । महो ममकु बोहत
 दुख पायो । कर हयोनी खेचो पारी रे । से १० । से संजम
 वपस्या कर मारी । सुगत गया मछबारी रे । स ११ । कलत
 बडाव । सेवीसे रहखमें । बाए हमारी बारी रे । से १२ ॥

देसी श्री श्रीमधीर स्वामी महाविदेह अ तरजामी

गोतमजी उपगारी । न्या प्रसख पुछ्या मारी । न्यारो आगम
 में अविधारी हो । गुनघरमी गूखपारी । आ १ । अगनसुखी
 मीनबंधो । भव मचना पाप नीक्यो । बाएभूती श्री आत्म वारी

हो । गुं. २ । वीगत मुनीसर चोथा । ए सुखे सुखे सीव
 पोथा । जारी वार वार भलीयारीहो । गुं. ३ । पांचमा सुध-
 रमा सामी । मन तारो अंतरजामी । एक थां उपर इक्तारी
 हो । गुं. ४ । छटा बंदू मंडी । ज्यां तार दीया पाखंडी । मोरीजी
 ममता मारी हो । गुं. ५ । अंक पीताजी मारा । संसार दुखाहुं
 न्यारा । ज्यां करणी कीनी भारी हो । गुं. ६ । अचल अचल
 सुख पाया । मैतारज मुगत सीधाया । सीसरमणी लागी प्यारी
 हो । गु. ७ । प्रभात उठी नित घ्याउ । मैं सेवा धारी चाउं । मोए
 राखो पास तुमारी हो गु. ८ । चवदेसे वावन सारा । मैं बंदू न्यारा
 न्यारा । मोए दीज्यो सेव तुमारी हो गुं. ९ । १६ सैं वावनने ।
 वद जेठ पंचमी दीने । जेपुर में गुण बीसतारी हो । गुं. १० ।
 भगवंत भरोसो भारी । पूरीज्यो आस हमारी । जडावजी दास
 तुमागी हो । गुं. ११ ॥

॥ देसी । मोत्यारो गजरो भूली ॥

। मत कर जीव गुमाना । नीस्ते एक दीन उठ जाना । धरी
 रह धन माया । बल भसमी होवे नीज काया । म. १ । इद्र चक्री
 हरी राया । सब बादल जेम वीलाया । वोत करी चतुराइ । पिण ५
 थीर नै रह ठकुराइ । म. २ । रावणसा अभीमानी । हर लाया
 रामकी राणी । परम पूरांण वखाणी । सब लंक भइ धूलधाणी
 । म. ३ । आठमो चकरी जाणी । यो तो हुव मरथा परपाणी ।
 इत्यादीक बहु राया । अभीमान थीकी दुख पाया । म. ४ । सावण
 वद १२ स । जेपुरमें प्रम हुलास । छोडो जीव गुमाना । जडाव

कदे मरजाना । म ५ ॥

॥ ढाल ॥

। प्रमो आभीयो हो । होयन हु सीपार । ए देसी । मोए
 नैछामोए सुतो । सुतो बीपय बीपार । हेलादेए अगाभीयोरे ।
 सतगुरु बोझीदार । मनवा मानरे सतगुरुनो उपगार । आंफखी ।
 १ । अगत दुवसु कझीयोरे । दीयो संजम भार । कंकरसु संकर
 झीयोरे । पुजा मझ अपार । म २ । दीन बाखी दया आखी ।
 मझलीयो निज हाथ । कझीयो संसरसुरे । लीयो आपखी साथ
 । म ३ । समझीत रत्न दीखाभीयोरे । मायत बीरद बीचार ।
 ग्यान बीपक घटमें झीयोरे । मँट्रियो अघार । म ४ । मझ
 ससुत्र में इक्तोरे । लीयो मोष्ट जेष्ठ । धर्ममझम बैठायनेरे ।
 दीयो बीनारे मेष्ठ । म ५ । जोग लीयो दस बोसुनोर ।
 सोमलो मत हार । ए सामगरी दोहलीर । येत क्यू नी गीवार ।
 म ६ । १६ सें पंचाबनेर । जेपुर सके कस्त । कइत बडाव निम
 बीबनेरे । अझ वो सुरत समाप्त । म ७ ॥

॥ हारे काय थका ए देसी ॥

। हारे बीबइछा । सत्त घातझी पूतलीरे । हा जीवन रग
 पतंग । कया काखीरे । मत राखो माया करमीरे । हा मत
 राखो इश लमरे । हा लीखमें होय बीरग । क १ । हा हाड
 छोही नसा जालमरे । हा घरम मांसरो पीड । क २ । हा
 मझ मूत्रखी बीबडीरे । हा केस रोमरो छुड । क ३ । हा बार

नाला वहे नारना रे । हा. पुरुष तणा नव द्वार । का. ४ । हा.
प्रत्यक्ष दुखनी भाकसीरे । हारे असुच तणो आगार । का. ५ ।
हा. काचो कुंभ सीसी काचकीरे । हा. अथीर मानव की देह ।
का. ६ । हा पलट जाए पल एकमेरे । हा मत कर इणसुं सनेह
। का. ७ । हा जनम जरा दुख देहसुं रे । हारे सुखरो नहीं लव
लेश । का. ८ । हा जेपुरमांण जडावजीरे । हा एम दीयो उपदेश
। का. ९ ।

॥ देसी । उदाजी करमकी गत न्यारी ॥

। ए राग । उनालारा आलस करने । दरसण नहीं ए
दीरायो । अब वरेसालो उतरण लागो । उपर सीयालो आयो
। १ । चनण मुनी दरसण वेगे दीराजयो । थेतो फिर पाछे । थे.
जैपुर जाज्यो । च आंकडी । १ । रीयां पीपाडे पधारो । सामीजी
वडलूवी प्रसीजे । बायां भायां सवे बाट नीहाल । मौपर किरपा
कीजे । च. २ । मीष्य स्वामीजीरी जोड भली हे । दीपे रही जग
माही । तपसी त्यागी बेरागीनीरागी बाल मूनी सुखदाह । च.
३ । खीवराजजी खीम्या सागर । हंस बडा उपगारी । शिष्य
सबला मोतनकी माला । सेवा करो नर नारी । च. ४ । अड-
तालीमें रीया चोमामो । कीयो उपगार सवायो । बे कर जोड
जडाव जुगतसुं । अर्जीरो पद गायो । च. ५ ।

चाललावणीरीं

सुण पुत्र हमारा दीख्या मत लीजे माने छोडने । ए देशी ।

भी गुरुदेव किरपा करीसजी मस्त पधारण थाप । मन
 पीन्त्या पासा इन्त्या । मस्त कटो मवनां पापजी । मूनी बाल
 कंदजी मस्त पधारण अजमेर सहरमें । हूँ करू बीनती । करोनी
 बोमासो इव सहरमें । आंकडी । १ । नंदरामजी मस्त बीराज्या ।
 किरपा कर मुनीराज । पचा मुनीसर अठे पदारे । दरसब करवा
 कजजी । मू २ । बनख बनख वाहनो सरे । दे सीतल उपदेस ।
 मव मव तपत मीटाय दे सरे । जाता देस बीदेसजी । मू ३ ।
 खेमराजजी खिन्त्या सागर । सिस बहा मुबनीत । जप जप संजम
 सप कर सरे । रात दीवत एक रीतजी । मू ४ । कीसनलाल मुनी
 ईसरजजी । हे अजमेरका जाय । सब बापारी बीनतीम । कंद
 भास करो प्रमादजी । मू ५ । १६ सें पंचालमसरे । अजमेर में
 घर जाव । मगन ककरका केबसु सरे । मोड करी बहलजी । मू ६

देसी असवारीकी छे

बनखमुनी दरसब बेगे बीराज्यो । सिप सता तुम सावे
 न्याजो । मोपर किरपा करजो हांजी बे तो बीचरत जेपुर आन्यो
 हावो मुनी अब मत आगा आन्यो । आं १ । सब आदक
 बसत हे ब्रसड । याद करे नरनारी । कब मुनी पाव घरे जेपुरमें ।
 जीवन प्राय आभारी । २ । प्यार करी नबे सहर पधारण ।
 जेपुर केम बीसतयो । दे बिस्वास करी न निरासा । ओ ब्र
 आपे बीचतयो । ३ । मरुभर देस में किरपा तुमारी । जावत
 बारमवारी । चुक नहीं मुनीबरजीपाको । या अ तराय हमारी । ४
 ४ । पापी पाव जसे नहीं कडे । सब तन छेह इन्त्यायो । मन

म्हमंत धरे नहीं धीरज । दोखो तुंम दीस आवे । च. ५ ।
 व्होत कठण है तुमारी छाती । निन अपराधी वीसारथा । कहा
 कहूँ मोए उपजत नहीं । वीनती कर कर हारथा । च. ६ । वीजे
 द्रसण प्रमन हाय कर । भरपावरीजवारी । जेपुरमाए जडाव
 कहत है । आही अर्ज हमारी । च. ७ ।

देसी कलालीरी

चंद चढो गिरनार हो कवरजी । आठ नमुं अरिहंत हो ।
 मूनीवरजी कांड पाचे पदाने सीस नमावसुं हो राज । म्हामूनी ।
 पां. । १ । दिल धर डधक आणद हो । मू. कांड मरव मूनीवर-
 जीरा गुण गावसु हो राज । २ । वाल मुनी दीन दयाल हो ।
 मू. कांड चनण वावनो हो राज । म्हा० च० । ३ । खेम
 खिम्या गुणधार हो । मू० कांड हंस प्रसंस मुनी मन भावनो हो
 राज । म्हा० ह० । ४ । भाग बली भगवान हो । मू० कांड
 तपसी सोभागी रागी मृगतना हो । म्हा० त० ५ । धन धन
 मूनी सुजाण हो । मू० कांड वाल चिरमचारी । वारी तेहनी हो
 राज । म्हा० । वा० ६ । मला पधारथा म्हा भाग हो । मू०
 कांड आमा हूती । जीम चातक म्हेनी हो राज । म्हा० आ० । ७ ।
 १६ से तेपन सहो । मू० कांड देस प्रदेसा । मैमा आपरी हो
 राज । म्हा० दे० ८ । जेपुरमाए जडाव हो । मू० कांड चरणामे
 राखो । सफली चाकरी हो राज । म्हा० । चर० ९ ।

॥ चाल गोपीचंदरा ख्यालरी ॥

नमू अगीहतने मरे । म्हागीर मद मोड । सासण नायक

गेहनो सरे । धंघु बे कर जोड । गुण गाउ मुनीराप्रना सरे ।
 एग म्हो मन कोड हो । तपसी बसधारी मलोरे दीपायो मारग
 प्रिनरो । बे पर ठपगारी । भजन करोखो भगवानरो । आ० १ ।
 बालबद्धमुनी दीपना मर । बैरागी भरपूर । ध्यात बीगे त्यागन
 करो सरे । तपस्या कठख कर । काखी करणी सारखी सरे ।
 कर करम कछपुर हो । व० २ । बनख बनख बान्को सरे । दे
 संतिल उपदस । भीष्या तप्त मीटावता सरे । पाश देस बीदेस ।
 म्यान ध्यानमें लीनता सरे । नहीं प्रमाद बीसेसहो । व० ३ ।
 खेस खिम्या गुण आत्मता सरे । तप कर बरा मेद । गुरु अम्पा
 आताबने सरे बांज्या मूख ने छेद । बीनो आराखे आत्म साधे ।
 संगी सुगत उमेद हो । व० ४ । ईस दीपावे बसने सरे । बन
 बन छद नर नर । उनाखे अतापना सरे । तपस्या बीबीच प्रकर ।
 सुखदद गुरुदेवने सरे । अहो निस अम्पाकर हो । व० ५ ।
 अठाइ आद करी सरे । फनरा ने इकबीस । दीपरया इस मतमें
 सरे । तपसी बीसबा बीस । माग बसी भगवानदासजी । नमन
 करु नित्र सीस हो । व० ६ । ओखी बुद छे हम तपीस । कोइ
 तुम गुण अनंत अपार । सुर गरु जो पोते मखेस । कोइ बीम्या
 करी इबार । तोपिख पार न पामीण सरे । गुणनो छद न पार
 हो । व० ७ । १६ से समत भखा सरे । जेपुरमें पर बाव । गुण
 गाया गुरुदेवना सरे । सुखजो पर उद्याव । टीजे मुगतरीजमे
 मोषू । अरु करे बहाव हो । व० ८ ।

चाल लावणीरीं छे

देसी तजीएरे आलस दूर थइ एक मन्ना । भजीए रे । धन
तपसी मुनी बाल २ ज्यारी दीपे । बाल० खीम्या खडग संभाय ।
करमकुं जीपे । कीनी मंद कसाय । चाय पुदगलकी । चा० तज
कुमतीको संग । सुमतकू परखी । ज्यारे सीस बडा सुवनीत ।
नमूं सीर नामी । न० । धन तपसी भगवानदासजी सामी ।
आंकणी । १ । ज्यां क्रोधमान माया सव ममता मारी । म० छोड
सकल प्रपंच म्हाव्रतधारी । तज बीषयनको संग । थए वीरमचारी ।
थ० भए सुमतीको सीरदार । जती धर्मधारी । तप कर तोडे कर्म ।
मुगत के रागी । ध० २ । पूज रतन समुदायमांए बडभागी । मा०
करे तपस्या घोर जोर बेरागी । एक मुक्तीको ध्यान । ग्यानके
रागी । ज्यां० लीयो जोवन वयमें जोग भोगकुं त्यागी । भूल चुक
अपराध । खमो मुज स्वामी । ख० । ध० ३ । समत श्री १६ स
साल चोपने । सा० कीया वास ईकबीस । दोए दस दीने । अस्या
विडला हे अणगार । कहे सब धन्ने । क० ज्यांरा दरसणसुं दुख
जाए । भजो एक मने । जेपुरमांए जडाव नमे सिरनामी । न. ध० ४

देसी जवाइ

माने प्यारा लागोजी । पंच म्हा वरत आदरथा । म्हाराजा
हो । पाले पच आचार । तपसीजी माने प्यारा लागोजी । म्हारा०
। आंकडी । १ । दोष बयालीस टालने । म्हा० ल्यो निरदोषण
आहार । त० २ । पंच इंद्रीने बस करो । म्हा० सुमत गुप्त सुख-
कार । म्हा० ३ । संवर बांध्योसेवरो । म्हा० सीलरो कीयो ।

सीमागत । त० ४ । किरिया किरागी खुल रह । म्हा० तपस्यारो
 तिरिक लीलाट । मा ५ । खिम्या खुडग न्यारा हाथमें । मा०
 ग्यान पोडे असवार । त ६ । मुकतीरा डंक बाधीया । म्हा०
 संजम संन्यास्तार । मा० ७ । अचल अलै सुख भावना । मा० होप
 रदा छो त्यार । त० ८ । १६ से चोपन भलो । मा० जेपुरमें बर
 सात । मा ९ । कुल करी बडाकजी । मा० जोडी हस्त रसात । १०

चाल चलेरेलगाडी

ए ससार असार वाचने । जिनमें छीन्कया । कन मूनीरे
 शिष्य मेगजी । ज्यारे करण पीत ज्ञाया । म्हा में बालमूनी दीपेरे
 म० अज करम इस कान मूनीमर पाखंडी जीत । भा० १ ।
 पंच म्हावरत नीरमल पात । दोपख सब टांसे । सुमत गुप्त मन
 डीठ कर राखे । आठु मद गाले । म० २ । नारी नागख बाख
 मूनीसर । तडक न्हे तोड । सुमत सखीरो हुकम उठावे । उषा
 कर जोड । म ३ । चार बीगेरा त्याग मूनीरा । एक बगत
 अक्षरी । परपुदगल परचाय अलप है । निम गुख उर भारी म
 ४ । बाखी मधुरी । फन जीम गात्र । मवि जीन हीतक्षरी ।
 भावक बीर सोमं मुख भागे । खूली केसरकी क्षपारी । म ५ ।
 क्रोध मान माया अति पतला । बिसनाकु मारी । निचरे गिराम
 नगरपुर पाटख । मवि जीवां तारी । म ६ । एक बीमसु गुख
 किम गाठ । महीमा अति मारी । कहत बडाख गुख सीपू सम ।
 अलप बुध मारी । म ७ । १६ से समत अठार । रीयां सुख
 वासी । दरसख छो एक बाल । मूनी में चरबासी दासी । म ८

तन वसंतरके रंग लगाया ए देसी

न्यारी मती करो नेणामुं । अग्जी धूलभद्रमुं । आं० ।
 आप वेरागी । भए हे नीरागी । मारी लीन लागी चरणामुं । न्या.
 १ । मुगत म्हालकी स्हेल वताड । हुमत राखी भन जलमुं । न्या.
 २ । मेंतो पलक एक संग नहीं छोडु । पिण जोर नहीं करमांमुं ।
 न्या. ३ । दीवस भूस निस नीदन आमी । दरमण कद करमुं
 । न्या. ४ । प्रेमचारो करणी अति दकर । गरु कहे सनमुखमुं
 । न्या. ५ । न्हे लगाड दइ छिटकाड । अत्र कहो क्या करमुं ।
 न्या. ६ । कोस्या दासी । मड हे उदासी । गत दीवस तरसुं
 । न्या. ७ । गणिका नार । पार उतारी । सनमुख की समगतमुं
 । न्या. ८ । बीकानेर ७३ चोमासो । जडाव कहे जुगतमुं । न्या. ९ ।

श्री मंथीरजीरो स्तवन लीख्यते

देसी असवारीनी छे । खेव बीदेहे वीराज्यां सामी । गुण
 गाड' सीर नामी । जीन हमारी वीनतडी । अवधारो । होजी माने
 भवनीधि पार उतारो । प्रभूजी. । आं० १ । दूर दीसावर अति घणो
 आगो । आवणरो नहीं थागो । जी० २ । दरसण चाड' फिण बीद
 आड' । नीसदीन तुम गुण गाड' । प्र० ३ । लवड बीद्या नहीं
 पांख न मारे । हाजर आड' तुमारे । जी० ४ । पाचमो आरो नहीं
 मारो सारो । अधम अनाथ उधारो । प्र० ५ । चोसठ इंद्र करे
 तुम सेवा । बाणी इमरत मेवा । जी० ६ । धन भव प्राणी ।
 सुणे नीत बाणी । पूरव सुकरत जाणी । प्र० ७ । श्री मंथीरजी
 सुणो मारी अरजी । राखो पूरण मरजी । जी० ८ । उद्रा मेसर

मंगल बासर । बड़ाव जपे परमेसर । श्री० होजी माने जिम बाखे
तिम वारो । प्र० ६ ।

मोटी जगमें मोवणी ए देसी

श्री मचीर-खीनसायबा एक सुशून्योजी अष्टाचारी अरदास ।
बे कर खोड़ी बीनबु । मल बगमो हो प्रभू मुगत बबास । श्री
मचीर खीन समरीए कर खोड़ी हो उगति सुर । कर्म कने संछट
मोटे । सुखसाखा हो पामे भरपूर । श्री० १ । आ० । आप बीराज्या
म्हा बीदहमें । हूँ दुखमी हो आरारे मोए । जनम लीयो खीन-
रात्रजी । मारे पूरी हो दरसखरी बाप । श्री० २ । सबद बीघा
नहीं मां कने । सब पांखज हो नहीं दीनी दब । किछ बीघ आठ
तुम कने । बुरासु हो सारु नीत सेव । श्री० ३ । हूँ कमली
कदगरी । कइ बें खोजी प्रभू दीन दयासु । सेवक बाखी आपरो ।
मारा छट्टे हो प्रभू कम बजासु । श्री० ४ । सबसत्तर में मन्कीयो
हूँ पापी हो अनंती मार । अब तो सरखा आपरो । मुञ्जवारो
हो प्रभू बीरब बीवार । श्री० ५ । बोहत न मागू तुम कने ।
खोटीसी हो कीजे बगसीम । मुगत नगर देखाप हो । तो बासु
हो किरपा बगदीस । श्री० ६ । समत दसे नब आगले । कपीसे
हो सुद कसिक मास । गुरबीजीरा प्रसादसु । पांचमने हो कीनी
अरदाम । श्री ७ । प्रम करी पासासखी । जोमासो हो कीनो
पर पाव । सम ध्यान आर्यादसु । कर खोड़ी हूँ जप बडाव । श्री ८

॥ ढाल ॥

बारी हो जंजुजी बेरामी । ए देसी । प्रथम गुणपर मोरम

सामी । ज्यां गुण नमुं सीरनामी । श्री वीरजीणंदजीन प्रसण
 पूछ्या । भव जीवां हीतकामी । भवी जीन ध्यावो श्री गुणधर-
 जीरा गुण गावो । सीव सख पावो । आंकडी । १ । अगनभुती जिन
 वाय मूनीसर । चोथा वीगट वखाणी । कंचन वरणी देही दीपे ।
 हमरत ज्यांरी वाणी । भ० २ । पांचमा गुणधर गूण कर गाजे ।
 ज्यारो नाम सुधरमा वाजे । श्री वीर जीणंदजी २ पाट वीराज्यां ।
 आतम कारज साज्या । भ० ३ । मडीपुत्र जीन मोरी पूत्र । ए दोए
 ग्यान गेरीठा । आमम वेण सुणी तुम सोभा । नेणा कदय न
 दीठा । भ० ४ । अकपिता जीन आठमा कहीजे । ज्यारो पे सम
 ध्यान धरीजे । ज्याग चरण कवलरी सेवा । चाउ प्रभूजी तुंम
 दीजे । भ० ५ । अचल पिता जीन मुगतना दाता । ज्यारा नाम
 लीया मुखमाता । मेतारज जिन श्री प्रभावे । ए दोए सकल
 वीख्याता । भ० ६ । ए इग्यारह स्हाण कुलमे । आय लीयो अव-
 तारो । माहाण माहण धर्म सुणीने । लीनो संजम भारो । भ. ७ ।
 इत्यादीक गुणधरजीरे आगे । अरज करुं कर जोडी । गरीब
 नीवाज वीरद तुंमारो टालोनी भवनी खोडी । भ. ८ । समत १६
 स बरस बत्रीमें । पालासणी सुख पाया । पुज रतन समदाए
 रंभाजी । तत सिष्यणी जडाव गुण गायां । भ. ९ ।

देसी हरजसनी छे

बण गए वैद आप गीरधारी । आ. । जी लख चोरासी
 फिरता फिरता मीनखा देही पाइ । आरज देस उतम कुल ध्याए ।
 सतगुरु सग सुणी रे जीन वाणी । सु० तज अभीमान भजोजी

गुरु ग्यानी । म० तब । ओ १ । जी गुरुप्रम अगमें नहीं उप
गारी । जीव अजीव बतावे । इ ठपठम कलेप मीटाय । तार दीए
मम अलसे प्राप्ती । म तब २ । जी आहोहेपर थडकर आए ।
संमिती गुरु पाए । बाबी सुबकर मीथ गए इ । लीनो संजम
इपर अग बाप्ती । इ त ३ । जी परदेसी राजा अति पापी । केन्नी
गुरु समझाय । खीम्या करक करम खपाए । तपस्यामें बहर दीयो
नीब राखी । इ त ४ । जी अग्ननमाली मुद्रगर भाली । मनुष्य
इत्या बहु कीनी । बीर बचन सुख समता लीनी । सुत्र में जीन
राज बहाप्ती । रा त ५ । जी जोर पीलायत संपट छूटेरा ।
पापी और गबेरा । इत्यादीक सुख गुरु मुख बाखी । केदएक अय
बरी सिब राखी । ब त ६ । जी गुरु आराधो आत्म साधो ।
तिर एउ ठम प्राप्ती । कइत जबाव खैपुरके माई । खल गद
अनंत सुखारी लाखी । सु तब ७ ।

श्री १०५ श्री रंभाजी म्हाराजना गुण लीरूपते

देखा । गुबकतारा गुब कीयां । प्रगटे आत्म जोत । बीस
बोस्तमाए कीयो । बदि तिरबकर गोत । १ । सात समुंदर समी
कर । सेखय सब बनेराय । गुरुखीमीमें गुब बसा । मो मुख
कसा न बाप । २ ।

बास १ ली । देसी सकजीनेसर सोलमारे सास । अरीइत
सिब समरु सदारे सास । आचारअ ठमझाय । सुबीपारीरे ।
साधू साधवी आनकरे सास । बंदू गुरुखीमीरा पाए । सु । १ ।
सरीया रंभाजी दीपतारे सास । जाणा देस बिदेस । सु गुब

११ ३ ३ ।

17

155

174

- 7 -

□

17

४७४ १

— 7 —

7 1 7

17

— 7 — 7 7 7 7

चारन

१३ । गर्भ

— 11 —

- 7 - 15

- ११५ -

7 77

4

इ बनम ज काइसी । पढ्यो मोए बंजास । १ । साइ दासजी
 वरा । भक्तक सैठ बास । मामारो सगपस इतो । इह बिद
 म्या बास । २ ।

हास २ जी । बेसी आज स्नेह बासी सुरज उगीयो । बाइसी
 निन्दा मती करो । करो नित धर्म प्यान । मोटी सती हो ।
 न सवात्र दीजीए । जोडोनी भारत प्यान । मो फन २ समता
 पाएरी । बारा गुबरो छेप न पार । मो हस्त मरवादा में पालस्यो
 ततो बस फैलेता संसार । मो आंकडी । २ । एह बचन सबने
 सुबी । आपयो मन संतोह । मो धर्म करखरी मनरखी । बाल्यो
 मोहन रोग । मो. प ३ । बंदूजी मोटा सती । कांछरीपारो हस्त
 बंद । मो विरदपसे धाखे रया । बाह मापारे हरक आबंद मो प ४
 न्यारे सिप्यखी दीपता । राम कवरजी म्हासाध । मो दरसख कर
 परसख म्या । अब सारस आत्म कज । मो प ५ । समत्यक
 पोना करे । सुखे नित बाखी हुलास । मो खद हरी चोप्यारनो ।
 एक सीखखरो बम्यास । मो प ६ । सत दीपस सेवा करे ।
 न्यारां बीस बसीयो बेराग । मो हटम सहु समाजपने । आम्पा
 सीनी म्हा माग । मो प ७ । समत १६ से नबाछुमि । बह
 पांचम कगख माए । मो पुअ रतनबीरे सनमूख । संक्रम सीनो
 हुलास । मो प ८ । राम कवरजीने सुपीया । चारे सिप्यखी
 छे सुगीनीस । मो । साधु आचार सीखावन्यो राखन्यो रुडी
 रीत । मो प ९ । गुरु आशामें पालन्यो । दीनी संसारयां
 सीख । मो पंच प्रमाद नीशान्यो । बेगी करन्यो ये गूगत
 नबीक । मो प १० । ए सीखावख बीस परी । करे नीस

को उपगारवी । सु. ६ । फटीमें खेद हुइ गखी कई ।। बीना
 मनेक इलाज । भाया बायां करी बीनतीजी । अठ थाखे बीराजो
 मारामजी । सु ७ । दीलमाण बेठी नहीजी कई । रहबयरी पिर
 नास । आगे बायी नावसीनी । हाल बीचरसु मास दोमासजी
 । स ८ । तन बल बीखो बायीयोजी कई । नेत्रामें पड गइ
 हीस । मन बल सठो राखनेजी कई । व्यासकीयो प्रबीसजी । सु
 ९ । दरसबा दीराबापुरबेननसी कई । बडसु प्यार्या मामाग भाया
 बायां करी बीनतीजी । अर बीचरखरो नही मागखी । सु १० ।
 मायत बीरद बीचरनेजी । मारी कीजे अर्ज मंजुर । तन मन सेवा
 सारस्याजी । सदा रहसां चरब हजरखी । सु० ११ । बार २
 करी बीनतीजी कई । मानी दीन दयाल । तन मन भरता राख-
 नेजी । अर ठोडसु कर्म बंजालजी । सु १२ । बल पात्र अह-
 रनीजी कई । छोडी ममत दियाल । समता सागर जूसवाजी
 कई । ३ बइ तीसरी हासजी । १३ सु० ।

दोहा । तयस्या बीरद प्रकरनी । आमल नेइ बास । सीयासे
 एकसखा । एकज सोमास । १ । अखोदरी वष सासवो । करता
 बार मास । मसबो गुबबो सीलबो एक सुगवरी आस । २ ।

हास ४यी । बेसी भू बीरे भूख अमागखी । प राग । खबे
 इग्यार बीराज्यां । सुकसातासु आपसाखरे । सोखे सत्पारां अदे
 पती । करता बाप ठबाप साखरे । १ । गुरबीजीमाण युग पसा ।
 मो सुख क्याप न जाय साखरे । कोडे जूगां सग बरखवे । सुर

गरु पार न पाए लालरे । आंकडी । २ । सगला मेला सटे नहीं
 कठण साधरी रीत लालरे सखसाता छे मायरे । थे वयुं नहीं
 वीचरो नचींत लालरे । गु० ३ । जतन कवरजीन राखीया । सेवा
 वदगीमाए लाल रे । व्यार करायो जडावने । जेपुरकांनी जाए
 लालरे । गु० ४ । दोए चोमासा वारे कीया । फिर आइ तुम
 पासे लालरे । जीन मारग दीपावीयो । श्री मुख दीस्या वास
 लालरे । गु० ५ । जीम जाणो तिमही करो । मेतो हूवा नचीत
 लालरे । जीन मारग दीपावज्यो । चालो गुग्गु वचनारी रीत लालरे
 गु० ५ । सिपण्यां आपरसावडी । मूडा आगे ठाठ लालरे । रात
 दीवम् हाजर रहे । एक वृत्ताया आठ लालरे । गु० ७ । किरपा
 श्री गरुदेवरी । प्रससे मुनीराय लालरे । चौथा आरारी वानगी ।
 कोइ रह गइ पाचमामाए लालरे । गु० । सिध सरव सेवा करे ।
 धर्मध्यानरा ठाठ लालरे । चदणमालानी परै । सोभरथा वेठा पाटे
 लालरे । गु० ८ । देही जाणी देवालणी । नही करी सार संभाल
 लालरे । अरसालग काडीयो । तप जप रुप्यो माल लालरे ।
 गु० ६० । आउथित थोडी रही । वेढनी कर्म वीसाल लालरे ।
 ते आगे तुम साभलो । ए थड चौथी ढाल लालरे । गु० ११ ।

दोहा । पलक पलकमे पूछता । कतनी छे अत्र रात । पडिक-
 मणो मनमे प्रस्यो । ओर न दूजी बात । १ । स्हाग सुकल
 एरुस दीने । पोर एरु चढ्यो सुरे । कारण पुखीया वाएनी ।
 वेढन मही करुर । २ ।

ढाल पाचमी । राय बडगर ताल लागी रे । जीव, सम प्रणामे
 भोगवीरे । प्रस पणारी खेद । करम लणायत जाणने धूकाया

ध्यात्र समेत । १ । गुरुबीबी ए गुह्य भारी रे । मैमा भरत मजारी
 रे । आकड़ी । करोष मान ध्या पातलारे । माया सोमसु दूर ।
 करम कटक इक्षु भीषणा । इमा सतवादी ने सुर । गु० २ । भोष-
 दरी नहीं आसतारे । सरस नीरसममाव । निज परभातम ठारवा ।
 बेठ छीलभरमरी नाव । गु० । सत्र मीत्र सारखारे । समगिष रंक
 ने राव । संजम पाले सुरमा । ज्यारा दिन दिन चढता माव ।
 गु० ४ । पांचम मुख भीराजतारे । रुचसु छीनो आहार । पचलास
 कराया भी मुखेरे । सरव सत्यां लीयां धार । गु० ५ । म्हा अत पांच
 आलोचनेरे । सरखा ध्यातु छीध । चोरासी लख बीवसुरे खमव
 लामबा कीध । गु० ७ । तीन फरख तीन योगसुरे । त्याग्यां पाप
 अठार । सैगारी अक्षसख लीयोरे । पचक्या वारु इ अहार । गु० ७ ।
 कीसरीक रात गना पछेरे । पोढ्या मुखे समाव । वतखिख पाक्या
 छीया । एक समरख रो उदमाव । गु० ८ । मोरव दोयेरे आस
 रेरे । मजन कीयो भरपूर । पंचपदाने बंदखारे । स्वमुख दीनीसुर ।
 गु० ९ । पाक गया बेठा वझरे । पोढ्या पाकली रत । मनमात्र
 माला फेरता । ज्यारो बीसवा उपर हाव । गु० १० । ध्यान मुकल
 मन ध्यापनेरे । पाप पूज प्रजास । निज आतम नीरमल करी ।
 संपूरख पंचमी ढाल । गु० ११ ।

हास वठी । दयारखमिषो बाजीयो । आगो २ जरनार ए
 देसी । तीत्री बार उपनी हो । पुखीया बाप नीयेद । सुबायो २
 पूरुमता । एक संभारसी उमेद हो । गरबीजी गुह्य सागरा ।
 आकड़ी । १ । पार २ ध्यान पूछीयो हो । तीन हांमरा भास्य ।
 संभारो करत आपन । व सरव लीग्यो मममाय हो । गु० २ ।

तेरे सत्यांरी साखसु । मनमांए सेठी धार । त्याग कराया जडावजी
हो । जाय जीव चोव्यारहो । गु० ३ । पुष नक्षत्र तिथ पंचमी हो ।
सिध जोग गरुवार । मुध प्रणामा सरधीयो हो । संधारो चोव्यार
। गु० ४ । सरणा च्याग सुणावीया । सलेखणारो पाठ । पर-
भाथे पूज पधारीया हो । नर नारच्यांरा ठाठ हो । गु. ५ । त्याग
वेराग हूवा गणा हो । खद कुसील चोव्यार । रंभाजी मोटा सती
हो । कर दीयो खेवो पार हो । गु. ६ । आलोइ नोंदी नीसल
थया हो । अष्ट पोर चोव्यार । सधारो पान्यो सुरमां । ज्यारे दीसे
अलप ससार । गु. ७ । पोम करसन छट सुक्रने हो । चोथा पोर
मजार । सुरगत जाए वीराजीया । जठ वरत्या जे जेकार हो ।
गु. ८ । श्रावग वरग मैला हुवा हो । खरचे होडा होड । निहरण
कीधो मरीरनो हो । पूरया मनरा कोड हो । गु. ९ । गरस एक-
तालीस बीचरीया हो । नव वरस थिर वास । बावीस वरस घरमें
रह्या । सजम पान्यो वरम पचास हो । गु. १० । बोतेर वरसारो
सरय आउखो हो । भोगव्या पुन रसाल । जीन मारग जोर दीपा-
वीयो । माने गीरह खटक जिम माले हो । गु. ११ । गुण गुर-
णीजीमे छे घणा हो । मो मुख रमना एक । पार कीसी बिदे
पामीए हो । नही कबिता गीवेक हो । गु. १२ । पूज विने प्रसादसुं
हो । सफल फली मुज आस । गुण गुरणीजीरा मन वस्या हो ।
ज्यूं फूल बीच वाम हो । ग. १३ । अक्रमर पद हीणो कयो हो ।
रस्व दिरग कोइ पिरुव । ते मुन मीळ्यामी दुक्रडं हो । कवि जीन
कीजो सुध हो । ग १४ । उडलुमे गुण जोडीया हो । बोत हूवा
प्रसीध । पुख नक्षत्र थद बीजने हो । सिध जोग सपूर्ण कीध हो ।

कृतस । पूज रतन समदायमाए । बडा २ हुआ म्हासती ।
 पाटोपर श्री पाट दीपे । कृतमात्रि इदकी रति । ८ १ । तस पाट
 बीजे देख रीति चंदूजी चंदा समा । तसपाट तीजे रामफरजी ।
 तप स्य में हुआ सुरमा । ९ २ । तस पाए बंदू कर्म निकडू ।
 रमाजी मोटा सती । आप पोते पाए बोधे । प्रसंस मोटा मती ।
 प्र०३ । कट डाक बारु राग बारु । सामसती बहु रस हे ।
 प्रसद श्री गुरुदेवजी को । कवि जिन दीजो बस हे । ४ ।
 समत श्री १६ स कदीए । बरस बली ४६ स हे । बे कर बोड
 बडाव बपि । गरबी जिरी गुण रास हे । २ । ३ ।

आत्म निंदयारी ढाल लीखते

देसी भरतजिरी छे । देव नमू आरिदंतने । गरु गिरवा
 भीसाव । बर्म केवलीको भाखीयो । मैतो समस्ति रतन व साद
 बिरडला । तूतो बतन करीजे जेयना । १ । आप रयो तीरजंघमें ।
 पासठ साख बीचार । तप बाबर केव जूयमें । तूतो ममीयो अन
 तीवार । जि० बारो हूख जाख एक केवली । २ । कर्म गस्या ।
 हलबो हुनो । इंद्री पाए होए । बे इंद्री से इंद्री चोंदी । बारी
 अनंत पुन्या होए । जि० तूतो काल संस्यता त्रिहा रयो । ३ ।
 असंती तिरजंघ पिब हुनो । इंद्रीसादी ५५ । पचदे टीक्या मीन
 छरा । बठे सख नहीं पायो रंज । जि तूतो मरमरने उपज्यो
 त्रिहा । ४ । संती बलपर आप दे । उपज्यो म्हेमाए । सीठ उसन
 परबसपयो । सही भूख तिरला जयाय । जि० बारी गरज सर नहीं
 प्राखीपा । ५ । म्यान रहत अम्यानमें । बठे सही बेदना पोर । जि
 कोद नासख नसेगी नहीं । ६ । प्रमाधामी देखा । ज्यारी पनरे । बल

मार देवे एक जीवने । वेतो करे अनंती घात । जि० तूतो पल
सागर तड मही । ७ । तिरर पून्याड प्रगटी । देव हूयो सुभ जोग ।
खमाए खमा करे देयता । जठ पाय्या नमला भोग । जि. तोऽ तिर-
पत नही हूयो जियडो । ८ । भोग अग्र लोडने । भूगंतो मनमांए ।
मरण लीयो परम पणे । उपन्यो देम अनागज मांए । जी. जठे
पुन पाप जाणे नही । ९ । मदिरा माम भक्षण कीया । खाया
आधी गत । पीटा न जाणी पारकी । उल करी पचंद्रीनी घात ।
जी. थारे दया दील व्यापी नहीं । १० । मास भरी लांच लेएने ।
दीना अछता आल मरम मोमा प्रकामीया । परने बोली माठी
घाल । जी तूतो नीया कीधी पारकी । ११ । दगो करी धन
चोरीयो । परपुरुषांग प्यार । थापण गल्ली पारकी । थारे समता
न आड लीगार । जी. तु तो रुयट करी धन मेलीयो । १२ । कल्लो
करी जीव दूरीया । सेव्या कर्माडान । आरभ भेदन बावरो ।
नहीं दीनो मुपात्र दान । जी तु तो मान करी मदमे छक्यो । १३
पापे करी न गोपव्या । लोप्या गुरुना वैण । कर्म उदे जव
आमसी । थारे कोण न दीसे सेण । जी. सहू आप कीया फले
भोगमी । १४ । आत्म भाव न ओलव्या । सेव्या पाप अठार ।
कुगुरु कुदेव कुर्म म । गयो मनुष जनमारे हार । जी. थयो
चोरामीनो पावणो । १५ । चारु गतना चोरुमे भमतो २ आए ।
आरज देम उत्तम कुले । जठे धर्म केवलीरो पाए । जी. तूतो
जोग लयो दम गोलंग । १६ । माग गणायो माधरो । गुणवीन
गुरुजन पाए । मोनाने भग्मायीयो । तूतो धर्मी नाम धराय ।
जी. मारी गरज मरे नहीं भेखसु । १७ । काल अनता तू रुख्यो ।

अब पुद्गलसरे साथ अब केडो कद आबसी, एक बाध भी अग-
नाथ । बी तू तो से सरबो अरीईतनी । १८ । आत्तु नीचा में
करी । पेर करी ओ कोय । पूर कपट जो केसम्पो हो । भीक्ष-
यामी दुकडंग मोय । बी चारे अरिईत सिभारी साससु । १८ ।
१६ से समत मलो । ठपर चोपन सास । जेपुरमाण बडाबजी ।
बोडी भुगतसु डाल रसाल । बी आलो भगसर बड एकदसी । २०

लावणी लीख्यते

पासु जीव बोल राजी । सेलतो कुमत संग बाजी । होय
रखो ममताको मोजी । सुमतकी सेज नहीं साजी । भीष्यामृतमें
झुलतो । सात्पां कुगुलका कन । मव मवमें मटकबसी । चारे
सुसी कुतकी खान । अ घेरा म्यान बीना । तेरा बन्ध इक्ष्मारब
धर्म बीना । तेरा धर्म इक्ष्मारब धर्म बीना । शायी नहीं पत्तो
मव पार गरुका दुकन बीने । आकडी । १ । जीव तू पुद्गलको
रसीयो । बगत बंजालमें कमीयो । कमको कट नहीं पसीयो ।
धर्मसु हर बाए बसीयो । माया माया कर रह्यो । पय रयो रात
और दिन । कोडी कोडी ओढ़ने । मेलो बीचो बन । अ घेरा ।
तेरा धन इक्ष्मारब दान बीने । तेरा दान इक्ष्मारब मान बीने ।
प्रा २ । कया तरी ओढ़ बखी रंगी । पलकमेंगी सुवा मंगी ।
धर्म बिन देए तेरी नंगी । निष्ठामें होय कोय संगी । तप अप
किरया बाकरो । खाया ताजा माल । कर्म उदे अब आबसी ।
चारा नरक पडे इबास । अचे तेरी देय अलखी बेतना । तेरा
बेतन अलखा दया बिना । प्रा ३ मटकौ गिया कटा । तू पर

वार और भाइ । खानेमें सब मेला थाइ । संकटमें होए कोण साही ।
तेरा कीया तूं भोग ले । मन कर आरद ध्यान । अवसरमें चेत्यो
नहीं । थारो गयो हीयाको ग्यान । अंधे, तेरा ग्यान इख्यारथ
भजन विने । तेरा भ. समज विने । प्रां. ४ । जुलम तुं न्होत किया
भाइ । जरासी जदगीमांइ । अब तुं चेत जागेला । देत हे सतगुरुजी
हेला । १६ में एकावने । फागण होली चोमास । जैपुरमांए
जडावजी । करी लावणी तास । अं. तेरा जन्म इख्यारथ धर्म
इख्यारथ धर्म विने । प्रां. ५ ।

सभाय लीख्यंते

देसी जिलारी छे । वारे वारे मति भटको हो । जिवांजिवो ।
आवो ग्यान घरमांए । सु० ग्यानी थाने कया समजाउं हो मना ।
आंकडी । १ । हिंसा परित्यागो हो । जि० । दान दया सुखदाय ।
मूर्ख० । २ । झुठमति भाखो हो । झुठारी दर जाय । सु० ३ । चोरी
मती कीजे हो । जि० । दोन्यु भव दुख दाए । मू० ४ । परनारीसुं
डरीए हो । जि० । पचामे पत जाए । सु० ५ । ममता नहिं कीजे हो
जि० । समतारे घर आए । हटी० ६ । किरोध मान बूरो छे हो ।
जि० । कपट लोभ धो छोड । सु० ७ । रागधेग रुलावे हो । जि० । कल्लो
हो कियांपत जाए । मू० ८ । आल देणो सोरो हो । जि०
भूगत्या छूटको थाए । पा० ९ । पिसुन पराइ हो । जि० परै २ वाद
नहीं भाखे । सु० १० । रत अरत निवारो हो । जि० । माया
मिरखा नै दाखे । ११ । मीथ्या सल साले हो । जि० । समगत सेठी
राखे । अ० १२ । पाप अठारा खोटा हो । जि० । भटकासी भवमांए ।

मू० १३। पापेसु प्रप्यो हो । जि० ताप्या कृष्को बाए । मू० १४
निज मन समझावे हो । जि० झेपुरमाए बडाव । मू० १५। एकबन
होली हो । जि० ओइ करी घर पावे अ १६ ।

स्तवन होलीको

हेसी फगवासी । होलीखेलोरे । हारे होली सुमत्तु दिव-
भासी हो १। आ । सुमत्त गूफासी । करो पिचकारी । समबर
सीस मरो पासी । हो २ । मन मिरदंग सुरत सारंगी । मधुर
२ गाओ दिन बासी । हो ३। नेम धमका दोए मजिरा । सरदा
होर करो प्रासी । हो ४ । म्यान गुलास । अवीर प्यानको ।
आवीर प्यानको । आठ करम करो पूस बासी । हो ५ । स्तस्वार
फिरासी मेरी । चरचा बंग बजाओ म्यानी । हो ६ । एसो फग
खेलो मब प्रासी । सुखे सुख जाओ निरबासी । हो ७ । झेपुरमाए
बडाव करत हे । फगवा बढ बढस बासी । हो ८ ।

राग तंडज

मती होखोरे । हारे मती । नीर मलम बीगडे । म १ ।
आफसी । नीरसु बीर बगत सब जिबे । नईति सोग दुनीया
भरडे । मती २ । रूप मिरतना दाम सगत हे । पासी होल
घारो क्या बिगडे । मती ३। गली गली में फिररे मटको । पके
पडे वो धवा पकडे । मती ४ । माए सुखेरे घारी बेन सजत हे ।
सीरडी तिम कांइ भरडे । म ५ । राख रतसु होलीरे खस्ते

मिसटासुं देइ खरडे । म. ६ । धर्म ध्यानसुं सरम आवत हे ।
 गाल गीतमें आगे अरडे । म. ७ । जीव असंख्या क्या जीन-
 वरजी । चिन मरजादा कह रेडे । म. ८ । आण वैराग त्याग सुध
 कीजे । नहीतर जम ले सीस कटे । मती. ६ । एकावन फागण
 सुद तेरस । सुस करे तो कह अकडे । म. १० जैपुरमांए जडाव
 कहत है । जीव दयासुं जन्म सुधरे । म. ११ ।

राग तेहीज

कीजो २ रे हारे कीजो २ रे । सुक्रत थारे संघ चाले । १ ।
 आंकडी । धर्म करे पिण मरम न जाणे । कुलकी रुढलीवीजाले
 की. २ । धर्मीसुं द्वेष पापीसुं प्रच्यो । ज्याने मारग कुण धाले ।
 की. ३ । मात तात मुतलबका गरजी । मुखमें सीर सबी धाले ।
 की. ४ । आयो अकेलो ने जासी अकेलो । पुन पाप थारे संग
 चाले । की. ५ । सतगुरु सीख मानी नही मूर्ख । सो भव भव-
 मांए साले । की. ६ । तरसत देखी परकी सायबी । अब तेरा जोर
 नहीं चाले । की. ७ । जेपुरमांए जडाव कहत है । खर्ची लायो
 सो खा ले । की. ८ । एकावन फागण सुद पुनम । उत्तम गरु
 मारग धाले । की. ९ ।

राग तेहीज

पीज्यो २ हारे पीजो २ रे । सुगण समतारा प्याला । १ ।
 आंकडी । ममता डाकण बोल बुरी है । सब जगत खाया लाला
 पी० । २ बालपणो हम खेल गमायो । जोवन में त्रियांका वाला ।

पी ३। बूढापे मगर्बत नहीं मजीयो। मूढामें पड़ रही सामना।
 पी० ४। देस प्रदेसमि फिरेरे मटक्यो। माग बिने नहीं मीछे
 गहसा। पी० ५। बनके कछ अनेक मूषा पछे। छोडेसो सिब
 सुख छेला। पी० ६। नरमव पायो तू एछ गमायो। आगे
 ब्याव कइ देसा। पी० ७। जेपुरमाण बढाव कहत है। प्रभू भत्र
 पार छतरपहसा। पी० ८।

राग तेहज

सीओ २ रे हारे सीओ २ रे। धर्म बनको छावो। सी०।
 भाकडी। १। जायो न सुटे चोर न छुटे। नहीं छागे राजरो
 दावो। सी० २। मार नहीं पाको माहो न छागे। मन आवे
 न्यां जेबावो। सी० ३। गले नहीं बिरखा छत बापा। फले बढो
 बिरदामें बढो। सी० ४। कठ न आवे कीडा न सावे। हसी
 पड़े न्या पर बागो। सी० ५। बांर दीपां तिस्रमर नहीं छूटे।
 दान देबखको राखो बावो। सी० ६। १६ स एककन बरसे।
 फगख सुद पुनम गावो। सी० ७। जपुरमाण बढाव कहत है।
 सुखे २ सीखपुर बावो। सी०।

राग तेहीज

दीओ २ र हां २ दीओ २ रे। सुपात्र दान सदा। दी० १।
 भाकडी। दानसु मान बदे इस जगमें। गूखीजन नीत कीरत
 गावे। दी० १। सेठ धनो भी हंसकरजी। सासप्य सुख सीयो
 सगबा। दी० २। संख रामा मेपरथ अपरंती। गोत तिरयकर

बांध्यो सुगणा । दी० ४ । मान बडाइमें क्या धन खोवे । दानमें
कर बरसावो सुगणा । दी० ५ दान दीया थारो धन नहीं खुटे ।
खेत चीणा जीम जाणो सुगणा । दी० ६ । पात्र कूपात्र देखने
दीजे । उत्तम फल लागे सुगणा । दी० ७ । जस कीरत तांइ धन
खरचे । भावे ज्यांवलजाव सुगणा । दी. ८ । १६ स एकावन
जेपुर । फागण सुद पूनम सुगणा । दी० ९ । हित उपदेश जडाव
दीयो इम । नर भव सफल करो सुगणा । दीजो दीजोरे । १० ।

राग तेहीज

मत खावो रे । हारे मत खावो रे । भवक कांदो मूलो । १ ।
म. । आकडी । जीव अनता क्या जीनवरजी । परभवको तूं डर
भूल्यो । म. २ । फाड चीर आचार बणावे । मांए वोत भरे लूणो ।
म. ३ । अंतकाय सखाय मणा बद । सोगनक मनमें फुल्यो ।
म. ४ । बेगण खाय भणीढो बणावे । पाप उदे जब क्यां सुलो ।
म. ५ । धर्मी बाजे खाता नहीं लाजे । ज्यारे सिर पडसी धूलो ।
म. ६ । कादो बादो खाय सरावे । भव २ में होसी लूलो । म. ७ ।
अभख अनत क्या जीनवरजी । सुणतां २ कह भूलो । म. ८ ।
आणे बेराग त्याग सुध कीना । देख देख मन क्यूं हुलो । म.
९ । बास बूरी याको नाम निकामो । खाय खाय चीत क्या
फूलो । म. १० । १६ सें एकावन जेपुर । फागुण शुद उडे
धूलो । म. । कहत जडाव जमीकद त्यागो । नहीं तो निगोदमांए
भूलो । म. १२ । हित उपदेश सुणी भव जीवा । हीर दारी खीड-
की खोलो । म. १३ ।

राग तेहीज

मठ साखो हरि मठी आखोरे । मक्क कया मेरी । म १ ।
 आकडी । मेरी २ करता खोल दुख पाया । या कय ही नहीं हे
 तेरी । म २ । कया रंग फलंग सरीखी । उड़ता नहीं लागे देरी
 म ३ । इससे मोए करे सो भूर्स । खियमें होए मतम बेरी म ४ ।
 इयमें राखनाथ म २ में । खोरासी में दी फेरी म ५ । होए
 नितक कर्म तु बांधे । सुगन्ध में कया न्यासी । म ६ । पूगी
 सुगन्ध नहीं पावे । बीषमें खम से घरी । म ७ । जब निज-
 तासी छुड़ छुड़ासी । नासखन नहीं हे सेरी । म ८ । तप बप
 मार बहाल कड से तो इज्जत रहसी तेरी । म ९ । १६ से
 एककन जेपुर । हित सीलामन हे मेरी । म १० ।

राग तेहीज

मठ पीबोर हरि मठ पीबोरे । तमांसु खनम बिगडे म ।
 आकडी । १ । हाथ बसरबारोभुकरे कलजो । भरद उवासी आबे
 सुगन्धा । म २ । रूप गयो धारा दांत बाढरो । पचकई धूक
 पडे सुगन्धा । म ३ । नाकबरे धारा बीसन बीगाडे । डाडी मूख
 मरे सुगन्धा । म ४ । मुख करे तु साप संतकी । परकी पेंठ पीबे
 सुगन्धा । म ५ । दाह कट बारो घटत कायदे । बदन बूरो
 बासे सुगन्धा । म ६ । बहट बनार हजार मीनधमें । ह कले दुरडे
 सुगन्धा । म ७ । तनक तमाकु मागे मगता जिय । शात्र सरम
 नहीं आबे सुगन्धा । म ८ । इस मयमें इतना अणगुन । पंचामें

पत जावे सुगणा । म. ६ । मान कंयो तु छोड तमाखु । नही
तम नरक पडे सुगणा । म. १० । अगन वरण कर हुको पासी ।
पीछे घणो पीसतावे सुगणा । म. ११ । १६ सें एकावन जेपुर ।
फागण सुद चउदस सुगणा । १२ । हित उपदेस जडाव दीयो
इम । सुण २ त्याग करो सुगणा । म. १३ । इति संपूर्ण ।

ढाल चंदरी

रे रगीला सुडा । सतगुरु दे छे हेला तुं समज २ नै गेला ।
दिल सुं वीचारोने पेलावे । तीरो भव प्राणी । संसार समुद्र
जाणी । ती० । १ । आकड़ी । परभव निस्ते जाणो । थे लीज्यो
धर्मको नाणो । आगे नहीं नाणोरे । ती० २ । मात पिता पर-
वारो । सब हे मुतलब का यारो । दुखमें कोई नहीं थारो रे ।
३ । सु सवरत किया मोटा । जम जोर पडयो किया खोटा । तू
खाय नरक सोटा रे । ति० ४ । पाततणो बोपारी । तुं कर्म
कमाया भारी । सतगुरु की सीख न धारी रे । ती० ५ । इद्वारे
वस पडियो । तु भव भवमे रडबडीयो । थारो आतम कार्ज नै
सरियो रे । ती० ६ । वेम वणावे भारी । तु तके पराइ नारी ।
थे घर की नार बिसारी रे । ती० ७ । भाग तमाखु खावे । तूं
घर वेस्यारे जावे । थने लाज सम नहीं आवे रे । ती० ८ । राजा
जाणो तो डडे । खर चाढे न मिर मु डे । थाने न्यात आतमे माडे
रे । ती० ९ । दया जग नहीं तेरे । तुं नवकरवाली फेरे । तुं
माल वीराणा हरे रे । ती० १० । सतगुरु ग्यान सुणावे । जठ
भुक भुक भोला खावे । वाता मे रात गमावे रे । ती० ११ ।

आतम काय प्रीगाडे । तू पाव पराया नबेहे । तू पड्यो कुतम के
 डेरेरे । ती १२ । कुगुरुको मरमायो । बने हिंसा धर्म बतयो ।
 तु छुब समस्त नहीं पायोरे । १३ । जब के अवसर आयो तु ।
 उत्तम नर सब पायो । बने सतगुरु धर्म सथायोरे । १४ । कागस
 शुद्ध १६ से । जेपुरमें बीसवा बीस । काँइ बडाव दीयो उपदेसेरे ।

ढाल

कटो २ करमकी बेडी । बागो २ रे मूर्ख मन मेरा । क्या
 सुता होय सचेरारे । बा आँकड़ी १ । मजो नाम । प्रभूबिम्ब
 गेहरा जियसु टले मब फेरारे । बा २ । तू बाले यह घर मेरा ।
 पिब हो ए जंगल में डेरारे । बा ३ । काया कपटस ठग २
 छाबे । नितछ करे बनेरारे । बा ४ । धन धन करतो फिरे
 मन्कलो । पिब बिलसे कोइ अनेरारे । बा ५ । कुतम सहु सुत-
 सब का गरबी । अंतसमे नहीं तेरारे । बा ६ । आयो अफलो न
 जासी एकलो । मेन मिथ्यात अ डेरारे । बा ७ । फेव सुधी बाचन
 में बरसे । तीजे बडी गन्ध बोतरारे बा ८ । जेपुरमाँए बडाव कइत
 हे । मान क्या गुरु केरारे । बा ९ ।

राग तेहीज

सीज्यो २ र सगळका सरखा । न्यो जाने मधबस तिरखारे
 । सी । आँ । १ राय सचिती पापी प्रदसी । मेह दीया सन्म मर
 खारे । सी २ । बीह फीहारी जोर बलायती । सुगरतमें अद-
 तरखारे । सी ३ । मध कबर धनोरिखराया । स्वातष सीध अद-

तरणारे । लीज्यो० ४ । साल कवरने रिख अबंतो । आतमें
कारज करणारे । ली० ५ । इम अनेक गया सीवतमें । ज्यांरा
सुत्रमें कीया निरणारे । ली० ६ । जेपुरमांए जडाव कहत हे ।
अव उतम कार्ज कारणारे । ली० ७ ।

राग तेहीज

रहो २ रे जगतसुं न्यारा । ज्यो चावो नीसतारारे । रहो.
आंकणी । १ । बैह रही जन्म मरण की धारा । डुब रया संसारारे
। रहो० २ । आढी रातका पुत्र जायो । सरख्या सहु प्रवारारे ।
रहो. ३ फजर भइ जब गुजर गया है । हाय २ करे सारारे । रहो.
४ । परायो निरख हरखने मुंद्र । माने सुख अपारारे । रहो. ०
५ । आगे काल कपट ले जासी । कोई न राखण हारारे । रहो.
६ । चार दीनाकी है चतुरा । छेवट घोर अंधारारे । रहो. ७ ।
जेपुर रमाए जडाव कहत है । अय तूं जित जमारारे । रहो. ८ ।
१६ मयापन मे वरसे । चेतमास उजियालारे । रहो. ९ ।
वर्ति सपूर्ण ।

देखी पयपाडारी या वारामासीरी छे । पहेलो आलस करम
काठीयो । करे ग्यान की घात । उदम नही किण वातरो सरे ।
पडयो रहे दीन रात । पम् मरीखी ओपमासरे । दीनी व्रीभुवन
नाथजी । तुम समझो प्राणी । बोहत बुरा छे तेरा काठीया । सुण
मतगुरु प्राणी । दर तजोनो तेरे काटीया । आंकणी । १ । काया
माया ब्रह्म भाग्य्या । मात पिता मतभिगता । म्हो मायामें पस रया
मरे । नहीं तिग्गरी रात । ए मय हे मतलब का गरजी । एक न

बाले सापधी । तुम २ । अकड लफड सारखा सरे । अब बड़ा
अवनीत । लोड बढाइनगीस सरे । नहीं गुरु प्रीत । लोक सठ
फिट २ करे सरे । प्रमो होय फभितजी । तु ३ दसमो कलकर्म
कमो मरे । अवनीत जहर समान । बचन बोले असुवावयसरे ।
गुरु नहीं हवे म्यान । कृपा कानरी कूझी सरे । कस्य न देवे मान
जी । तु ४ । मीनप तिरबंज ने देस्तासरे । अवनीत दुखिया होय ।
गलियारगहानी ओपमा सरे दीनी सूत्र जोय । भूख श्रीपा गह्वी
मोमब सर । मव २ दुखीपा होय जी । तु ५ । बोले चास फेरे
नहीं सरे बीगता बावफी तोल । प्रमाही पापी जीयोमरे । गमेगह्वी
रंग रोल । तप सधमरी खप नहीं सरे । हारो जन्म अमोल जी ।
तु ६ । कोधी कुकरनी परे सर । भूस भूम सामा होय । आप
बले परन संठावे । लोक हमबाह होय । तप संजम मव कोच
सु सरे । बल जल मसमी होयजी । तु ७ । रोग फन तन जोझरो
सरे । कस्या होय निराम । तप सजम न कर सके सरे । रुचे
नहीं अनपान । खाट पण्णे तसक करे सरे । गरफने देवे
कानबी । तु ८ । जम कीरत के करब सरे । तरवे घर का दाम
। उल्टी अप कीरत हुवेसरे । लोक के अपमान । सातमो अप-
जम कर्म कठीयो । मास्यो विरधमान जी । तु ९ । म्हाज्यो मत
जोडे नहीं सेर । लीनी टेक सममाय । सठग्या फठग्या ने हुवे
सरे । इस्तने दग सगाय । पकज्यो पूछ गया तबो सरे । मुर्ख
हु साता खाय जी । तु १० । डरफी बात सुख ज्यो सिद्धमर
। मै लागे सिद्ध बार । गुरु संगत न कर सके सरे । आगे संक

अपार । आख्यां सरखा नवी । ज्यारे काजलरो सिणघार जी ।
 तुं० ११ । सुत्र चारीत्र अंतरायसुं । धर्म न आवे दाय । संका-
 संकीसुं करे सरे । मौजी नही भेदाय । काली कामल रंग कसु-
 मल । नहीं वदे तिण मांयजी । तुं० १२ । मन चंचल थिर नै
 रहे सरे । च्यारुं दिस भोला खाय । सतगुरु वाणी वागरे सरे ।
 सुणे न चित लगाय । मन डीगे ज्युं काया डीगे तो । जडा मूल
 सु जायजी । तुं० १३ । भरी समा में बेठ अगाडी । भुक भूक
 भोला खाय । पूछयां साच न कहे । हमारी आख्या नहीं गुलाय
 । वाणी जेलु आपरी सरे । लटका करुं मुनिरायजी । तुं० १४ ।
 समदाणी कर्म काठीयो सरे । कयो तेरमो जाण । धर्म ध्यान नै
 कर सर सके । लग रड ताणो तांण । मोय तंतूस बांधीयं सरे ।
 छुटा पड निरवाणजी । तुं० १५ । १६ सें समत भलो सरे ।
 वरस एकावन साल । चैत कूसन पक्ष अष्टमी सरे । करे काठीया
 नास । जेपुरमांण जडावजीम रे । करी लावणी तासजी । तुं० १६॥

देसी । आज हींदवाणी सुरज उगीयो । ए राग । सात बीमन
 मती सेवज्यो । बीसनारी नही प्रतीत । सुगण नर हो । विसन
 विगूथा मानवी । कडक हुवा फजीत । सुगण० । सात० १ ।
 आकडी । पडुरा यनापुत्र ते पडच पाच सुजाणो । सुजाणो स० ।
 जुवे हारी द्रोपदा । पडी गणी राजमें हाणो । सु० । सा० २ मांस
 रेवंती दुख मयो । म्हा मतकजीरी नार । सु० मंस अहारी पापीया
 खावे नरकमे मार । सु० सा० ३ । मद छकीया वकीया गण ।
 नादव कवर मुजाण । सु० तपसी दोपायण खीजव्यो । दुवारका

बाली आयये । सु० सा ४ । नरक गया पखा आवसी । बेस्यासु
करे प्रसीत । सु० परनारी प्रसगधी । राखइ हुयो फजीत । सु०
सा ५ । हिंसा पधंदी । जीवनी नरक ले आवे ताश । सु० प्यार
बोले करे जीवने । हुव सुम गतरी हाथ । सु० सा ६ । चोरी
पीरावे छाछने । माए मरावे सुख । सु० मसतक कइ सुली दीयो ।
चोरनो बेली कुब । सु । सा० ७ । एक एक दुखीया हुवा ।
साहु सेवे कोए । सु० । ज्यारा इवाछ होसी पुरा । प्रतक सीन्यो
बोए । सु० सा० ८ । बाबन साल बेसाखमें । बह बसमी सुकर
बार । सु० जेपुरमोए अडाबजी । कड़े छोडोनी बिसन बीकर ।
सु सा ६ ।

राग मोत्यारो गजरो

लखचोरासीमें ममीयो । अठ कल अनता कलीयो । नव घापी
फिर आयो । पुन जोग नर मव पायो । सुख मव प्राखी । सम
बावे सुमत सयाखी । आ १ । आनन बसमें नारी । सीयो उत्तम
हुन अस्तारी । दीप आयु वेह नीरोगी । पूरी इहां सतगुरुजीरो
जोगो । सु २ । सुख बोलइयो सुखम । पिख सरदा फरम दुखम
विरत करयो नहीं आव । जीव नर मव अकल गमाव । सु ३ ।
ए इस बोलरो ताखो । प्राखी बार २ मती जाखो । इस प्राखी
कीजो भरमे । ज्यो राखी आखो सरमे । सु० ४ । कूमठ कूपात्र
नारी । घान साग प्राख सं प्यारी । तिखसु कीयो पर बासो ।
बाप्ता मव मव दुख पायो । सु ५ । या छे नार पतारी । फर
हगीया पुरुष हजारी । इलको संग निवारो । बाप्ता सफल करो

अवतारो । सु. ६ । १६ सें ४२ ली सहर आ जीयापुर रसाली ।
दीयो जडाव लवलेसो । निज आत्मने उपदेसो । सु. ७ ।

राग : भांगरा गीतनी

दीनकोर धंधो कर पर नींधा । सुतो रैण जगावे । मोरा लाल
नींदडली खारी लागे ए भजनमे नींदडली । परी जाए वेरण यासुं
नींदडली । आकडी । १ । नींद लेवान प्राणी कुमत बूलावे । थाने
भर भर प्याला पावे । मो. नी. २ । करम कथा के डींग नहीं जावे
। माने भणता गुणता सतावे । मो. नी. ३ । राग रंग में दूरी दूरी
जावे । मारा भजनामे भग पडावे । मो. नी. ४ । ग्यान ध्यानमें
आलस आवे । जठ भुक भुक भोला खावे । मो. ५ । चोर चुगल
भोगी नं रोगी । जठ जाइ २ वीगर बुलाइ । मो. नी. ६ । द्रव
निद्रासु द्रव गमावे । वे तोडण भव में पिमतावे । मो. नी. ७ ।
भाव निद्रामे जे नर सुता । थे तो खराये बिगूता । मो. ८ । कहत
जडाव यातो बोट टगारी । थे तो राखीज्यो हुसीयारी । मो. नी.
९ । अम थासु निद्रा कोल करुं । थू तो मारे नेडी २ मती आजे
। मो १० । ममत १६ मे गरस एकावन । जयपुर सेखे वालो ।
मो. नी. ११ । नींद निवार सुणो भव प्राणी । भांगरी राग
रमलो । मो नी. १२ ।

ढाल

चेतन चेतोरे चे । दम बोल जगतमे मुसकल मीलीयारे
काया न्यारीरे । का. किम चेतन काया कीनी प्यारीरे । का.

आंकड़ी । १ निम दिन तु इसके संग भीनो । पूखी खोए सारीरे
। गढ़ गढ़ अब राख रह । सुख सीउ इमारीर । क्य २ । सुमत
सखी कर बोड़ क्यत है । कर्मासु एक तारीर । सुगत म्बलरी
सुल बटाठ छ सुख भारीर । क्य ३ । रात त्रिषम कुमती बर
बेठो । खेले पामा सारीरे । मरा बजारा भाडो पाइयो । कुमत
छारीरे । क्य ४ । इय क्योसु ममता करने । इम्या बहु नर
नारीरे । अहाव कहे तप अप करो । सिब रमखी त्पारीरे । क्य ५

ढाल

राम । मोन्यारो गजरो भूली । कर मोड़ी सीस नमाठ ।
नीत गोत मजीरा गुण गाउ । अगनभूतो बिन दूता । नील ठठ
करो न्या पूजा । सुख भव प्राणी । गखपर बंद गुखचारी ।
आंकड़ी । १ । बाप सुनी सगदछ । ए तीनुइ सगा माइ । बीग
सुनीसरबंदो । मर मबना पाव निकरो । सु २ । सचमा घर्मना
दत्ता । मंडी मोरी अगमिराता । अक पीठाजी मारा मबसागर
वरखहारा । स ३ । अकल ७ सुख पाया । मेतारद सुगत
सीधाया । प्रमाण प्रमबम डरीया । ज्यरा आत्म करज सरीया
। सु ४ । सगस्तद सुगत सीधाया । नित प्रयसु
न्यारा पाया । एकअन सुख नामो । जेपुरमें होली चोमासो ।
सु ५ । बारस सुख पखमायो । अहावजी सीम नमायो । मै
द दास तुमारी । सुख लीन्यो भरम इमारी सु ६ ।

लावणी लीखंते

चाल गोपीचंदरा ख्यालरी । पखवाडो ली, एकम जीव तुं
 एकलो सरे । बांधे कर्म कठोर । परभो चिंता वावरोस । थाने
 माणस कहू कठोर । अशुभ उदे जव आवसी । तुं कांड करेला
 जोर । जीव थारो अफल जनमारो जावसो पाछो नहीं आवसी ।
 कुछ सुक्रत कर ले सफल दीयाडो लेखे लागसी । आं० २ ।
 बीज कहे सुण वापडासरे । वेठो किम नीरधार । अवसर वीत्यो
 जात हे सरे । चेतें क्यु नी गीवार । बंधी भूठी आवीयो सरे ।
 जासी हाथ पसार । जी० ३ । तीज कहे तू त्रिजा प्राणी । वेठ
 धर्म की जाज । ग्यान दरसण चारीत्र पाठीया खेवे गुरु माराज ।
 भवजल पार उतार सीस । वाने मीले मुगतको राज । जी० ४ ।
 चौथ कहे चारुं गत मांण । रूख्यो अनंती वार । पुन सजोगे
 पामीयो सरे । मानवरो अवतार । दान सील तप भावनास ।
 कोइ लावो लीज्यो लार । जी० ५ । पांचम कहे सुण प्राणीयासरे
 । पंच म्हाव्रत धार । पंच इंद्रीने बस करोसरे । पच प्रमाद
 निवार । पच प्रमेस्टी देवनोसरे । ध्यान धरो सुखकार । जी०
 ६ । छट कहे छक्रायने मरे । राखो प्राण समान । पुत्र सरीखी
 ओपमासरे दीनी श्री वृद्धमान । छ परवी पाप्म करोस । केड देवो
 सुपात्र दान । जी० ७ । सातम कहे सत राखज्यो सरे । सत
 छोडे पत जाय । मतसु रीजे देवता सरे मतसु रीजे राय । सतसुं
 गुरुजी गजी हुवे मरे । मत मुगत ले जाए । जी० ८ । आठम
 आतम बमकरेसरे । धोवो मिथ्या मेल । आठ मद अलगा करो

सरे । ग्यान गरीबी केत । आठ कर्म सुपायने सरे । करो सुगतस्त्री
सहस्र । बी० ६ । नम कह नव बोलनो सरे । निपुन करो
निरधार । बाखपण्ये समगत सहसरे । बाय अज्ञान अ भार । तप
संश्रम सफलता दुबसरे । समगतरा बलीपार । बी० १० । दसम
कहे दुसमरा ठजोमरे मजो प्रमेस्त्री पंच । या समरा पातक जरे
सरे । रहन कुमरा रंच । ध्यान करो एक बीतसु कहे तजो सरब
प्रपंच । बी० ११ । इग्यारस रस पी बीपसरे । जीनबाबी अवधार
। अ ग इग्यारेह मलासरे । वारे ठपंग बीधार । मूल छेदमाप
कीयो सरे । नाम्नीरो निसार । बी० १२ । बारस कहे तु बाबलो
सरे । जूतो धरके भार । कम करे तु एकजो सरे । खावखमें
सब त्यार । सहे नरक में बकनोमरे । समदृष्टि मार । बी०
१३ । तेरस कहे तु तत्पर होजा । आगे नहीं अबसाख । काल
सीराख आवीयोसरे । लेंचे तीर कनाख । तक तक मारे बीवनेसरे
। पलक पलक में बाख । बी० १४ । चपदम कहे चेते नहीं सरे
मूल्यो किरे गीवार । ध्यार दीनस्त्री बालसीसरे । सेकट घोर
अ भार । म्यान दोषक घट्ये नहीं सर । दुबो कालीवार । बी०
१५ । पुनम पल पुरो दुबो सरे । करता हूटी बोड । गद गद सो
आखसो सरे । अगही होडो होड । पुनम प्रमाख सीखा बग्योसरे
। पावो आद्री डोर । बी० १६ । पाप धर्म दिन सारखसरे ।
बीस्यो आवे काल । योग मीन्यो दस बोलनोसरे । बीन्यो धम
बीधार । पासी पच पचने सुपासरे । धमी दुवा निहास । बी० १७
। १८ सें बरस बावनसरे । जेपुर सेले काल । ओड कर बडस

जीसरे । पख्वाडारी ढाल । बढमास मढनो किमन पख्में सातम
मंगलवार । जी० १८ ।

राग पणियारिकी

श्री मंधीर जिन सायना । जिनवरजि हो । अरज करुं कर
जोड । जिनवरजि । आरुडी । १ । सेवक जाणी आपरो । जि०
पूरो हमारी जोड । २ । खेत्र पिढेह गिगजिया । जि० आडा ममद
अथाग । जि० ३ । निखमी मारग छे गणो । जि० नहीं आवणरो
थाग । जि० ४ । निध्याधर मित्री नही । जिन ल्यावे आप हजूर
। जि० ५ । मानीज्यो मारी वनणा । जि० पोह उगंते सुर । जि०
६ । दुखमी आरो पचवो । जि० लीयो भरतमे वाम । जि० ७ ।
ओर कछु मागू नहीं । जि० राखो तुमारी दास । जि० ८ ।
आपो आपरा दामरी । जि० मत्र कोड पूरे आस । जि० ९ ।
हु मरणो लीयो आपरो । जि० करस्यो केम नीराम । जि० १० ।
ओगणीमे एकावने । जि० जेपुर होली चोमास । ११ । वे कर
जोड जडावजि । जि० एम करे अगदाम जि० १२ ।

चोइसी पद ली०

राग रागमे पधारीवाजी वामणः । रिखव अजित सभव नमू ।
अभिनण जिनदेव । मुमत पढम सुवासजि । चंदतणी करुं सेव ।
भवक जिन भावसु ाढो जिन चोनीम । १ । आकणी । सुवध
सीतल श्री हमजि । वाय पुज भगवत । वीमल अणत धर्म सतजि
। जग वरतायो मत । म० २ । कु थ अरी मल्ली नाथजि । मुनीसो
वगत जिनराय । नमी नेम श्री पार्म वीरने । बद् सीस तमाय

। मव० ३ । बिहरमान गवधर सनी । कपली प्रथक कोड ।
 जेपुर मोए जडावधि । बंदे थ कर मोड । म० ४ ।
 रत्न । करहा धाम्ने उवावलो । पगडे भाइ गवध गोर । रिखव अजित
 संभव मलाधि । सुख अमीननख भरदास । सुमठ पदमसुपासजि ।
 कांइ चंद कीयो प्रकासजी । मार दील वसीया चौबीसजी । न्यांरे
 करव नमास सीस । कांइडी । १ । सुवध सखिल भी हंसजी ।
 कांइ वासपुत्र भिनराय । बीमल अशुष परम संतजि । कांइ सत
 करी जगमाए । जि २ । कुष अरी मल्लीनाथजि । कांइ
 मुनीसोवत सुखकार । नेमीसर रीठनेमजि । न्यांन तारी राखल
 नर । जि० ३ । वास २ सारखाजि । सोइ फरया कंपन होए ।
 ए अविच्छाद आपसीजि बीन फम्पां ठारो माए । जि० ४ । बिरबमान
 चौबीसबाजि कांइ सोमहरा सीरदात । सरख आपा न्यांने तारी-
 याजी । माने मूल गया फिरवार । जि ५ । अब बाएया प्रमू
 आपनेजि । मैं जोडया आस जवाल । सरखो छीनो आपरोडी ।
 माने ठारो दीन दयास । जि ६ । खउदस बाबन हुवाजि० कांइ
 गवधर भिन चौबीस । बद् बे कर मोडने । बी कांइ बिहरमान
 भिन बीस । बी ७ । १६ से पकवने बी कांइ । सेपुर सेखे
 कल । बेत महीनो रूपसुजी कांइ । जोडी जडावजी दास । बी०
 ८ । इति संपूर्ण ।

देसी मन मोये हा भिनेमर । बे छो मारा नाथ । मैं हा
 बारा दाम । ए देगी । रिखवइत देवानवा । वीरजीनेसर बंदवा
 । मरक बीन । बेठारे एक रथ मजार । थाप्यार एम बजार । श्री

जीनजीसुं मारो मन मोयोरे । १ । अतसें देखी उतरथां । सचीत
द्रव अलगा करथां । भव० चाल्यारे बेहु पाय वीहार । नरखेरे
श्री जिन दीदार । श्री० २ । समो सरणमें आयने । नीचो सीस
नमायने । भव० । बंधारे जिन मान ज मोड । उभा रे तिहा बे
कर जोड । श्री० ३ । मणी पीठका सुरे करे । फिटकसीधासण
तीणपरे । भ० । वेठारे श्री वीर जीणंद । मुखडोरे जाणे पूनमचद
। श्री० ४ । घाज अवाज सुणी मोरज्युं । हरक्यां चंद चकोर
ज्युं । भव० नीरखेरेये । भर २ नेण । मीलीयारे थे साचा सेण ।
श्री० ५ । फल फूलत थइ देयमें । पानो आयो सथानमें । भ०
भरवारे वली लाण्यो दूध । भूली रेया सगली दूध । श्री० ६ ।
गोतम इचरज पायने । नीचो सीस नवायने । भ० बाइ रेया हम
कीम थाय । सासोजी मारो देवो मीटाय । श्री० ७ । अंगजात हूं
एहनो । काम बूरो सनेयनो । भ० जनम्योरे हु परघर जाय । पूरब-
रेइण बाघी अतराय । श्री० ८ । वीर बचन श्रवणे सुणी । मनमें
अकुलाणी गणी । भ० रोवेरेया भर २ नेण । मीलीयारे मन
माचासेण । श्री० ९ । अब सरणो भगवंतरो । कदय न आवे
अतरो । भ० करस्युरे हिव श्री जीन साथ । सुणसीरे सुख दुख
घात । श्री० १० । पीता परम सुख पायने । उवासी सन मायने ।
भ० लीनोरे बेहु संजम भार । तप कररे गया पुगतमेंकार । श्री०
११ । जननी बछल वीरजी । पु छापी भव तीरजी । भ. पालीरे ज्यां
पूरण प्रीत । आछेरे उत्तमनी रीत । श्री० १२ । १६ सें पचालमे
पालीपीठ रमालमे । भ. धन २ रे आ वीरनी मात । जोडेरे
जडावजी हाथ । श्री. १३ ।

सजाय लीख्यते

झोडो झोडोरे कपटकी कपटयी । बोलो २ रे समन सत बासी
। गल्लो हुजी अगपासीरे । आंकडी । १ । समकितकी सापी
सेनासी । सुगत पुरीकी नीसासीरे । बो २ । बेद पूराय कूराय
बलासी । अतसु खारी खासीरे । बो ३ । पंचामे प्रतिष्ठ बपावे
। होय कर्म पुल चासीरे । बो० ४ । बोपारी धन बचतोन्नावे ।
कटय न आवे हासीरे । बो ५ । नीसबा सुखदेव मीनखरा ।
पावे पद नीरबासीरे । बो ६ । कस्त बडाव वैपुर के माद ।
मूठ सजो मव प्रासीरे ७ ।

चाल तेहीज

राखो २ रे सरम गुरु केरी । बीससु टले मव फेरीरे । रा०
१ । आंकडी । गुरु सम जगमे नही उपगारी । ग्यान देवे हेरी २
रे । रा० २ । कंकरसु संकर देवे । पूजा होए गयेरीरे । रा० ३ ।
नरक दुखासु कर द न्यारो । खोले गुरगतनी सेरीरे । रा० ४ ।
गुरुकी आख धरो सिर उपर । फले होएगी तेरीरे । ० ५ । रा०
जेपुरमाण अडाव जुगससु । सील देवे पेरी परीरे । रा० ६ ।

चाल तेहीज

ताको ताकोरे धर्मकी सरी । मत ताको नार अनेरीरे । ताकोरे
। १ आंकडी । समसु बीब परम पद पावे । बखे उसकी मेरीरे
। ता २ । मव सबमाय होय संगीसी । टाले धार गल फेरीरे ।
ता० ३ । कस्त बडाव जेपुरके माद । मानकमा गुरु करसे । ता ४ ।

चाल तेहीज

मत करोरे मर्मकी जारी । लागे पातक भारीरे । म० आंकड़ी
। १ । मर्मसु सरम जाए परकेरी । प्रीत घटे होए बेरीरे । म. २ ।
छे प्राणी मरीया कुबचना हूड भसमकी ठेरीरे । म० ३ । कहत
जडाव जेपुरके मांइ । मीष्ट बचन सुखकारीरे म० ४ ।

लावणी लीख्यते

चाल जवृजीरी लावणी । स्वारथकी सवइ है दुनीयां । विन
स्वारथ नही ढीग जावे । मुतलबकी सब प्रीत सगाइ । विन गुतलब
नहीं बतलावे । स्वा० । आंकड़ी १ । बाप बेटाकी इथर सगाइ
कनकरथ राजा जाणी । जनम जातने खोड लगाइ । राज रिध
ममता आणी । स्वा० २ । पुत्र पिताकी इथर सगाइ । कूणकने
कुमती आइ । सेणक राजाने दीया पीजरो । कोस लीवी सब
ठकुराइ । स्वा० ३ । चूलणी राणी ब्रह्म दत्त बेटाने । बालगरी अग्या
दीनी । प्रमराम मातासु विरच्यो । लाज सरम सब खोदीनी
। स्वा० ४ । बधव बधव भरत बाउबल । बारें बरस जगडो कीनो
सुरीकथा निज प्रीतमने । भोजनमाए बिस दीनो । स्वा० ५ ।
सीसेण सामासु गिरच्यो । एक घाट पाचमें नारी । लाख मेहेलमें
बाली एकठी । बीसबासघात कगन मारी । स्वा० ६ । बहु सासुरी
इथर सगाइ सुत्र वीपाकमाए देखो । सासु बहु अजनासु
बढली । आल देड काडी एको । स्वा० ७ । पुसरो बहु सती
सुभद्रा । आलदीयो आणी धेको । बहु सुसरो सागर समुद्रमें ।
पटको नहीं आणी सको । स्वा० ८ । देवर भोजाइ बलैकवरने

। पदमाक्षी कीयो खुबारो । येडो कूबकनानो दोपतो । मिनस
मार कीयो संगारो । स्वा० ६ । मामो भाखजो राय उदछ । केसी
बल करने मारयो । कको मटीमो भीपालने । राज भीसट कर
नीकाण्यो । स्वा० १० । इत्यादिक में कहु कछलग । पिन स्वारथ
सगपथ छोडे । ठ व नीच केइ मुतलब करय बीन सगपथ ममत
बोडे । स्वा ११ । संतानीक राजा सांइसु बगडो । करदीवाब
राजा हारयो । ठाकुर चाकुरसुग्रीवादिक । फूट करी राख मारयो
। स्वा १२ । सोन्हेरंती छस कर मारी । बारै एछय सायो ।
रुपदेव मीथीसर छसकर । बामदबनी करी पसो । स्वा १३ ।
१६ सें पचावन बरसे । जेपुर में सेले कसो । केइ गरंमकी सल
दरने । ब्रह्म एह बोली डालो । स्वा १४ ।

अवनीतकी लावणी लीखते

बाल गोपीचंदक स्यालरी । काल हुकसे आनीयासरे । फेट
मरत कज । मेल पहर मारी पढ्यासरे । बाब पायो राज । म्याल
ध्याल री लप नहीं मर बस बेठ म्हराजर । अवनीत गरुना
केडा कडेरे मूर्ख बीबग । भांकणी । ॥ सीखदीया सामा हुबेसरे
। सुसावे भीम सांड । गुरुदेवस सरे । बक उगाडा मांड
। बीसे कीडानीबकसर । १० कसे पामे लांडरे । अर २ । सोड
बडा कय कयदो । राखे नहीं अयाल । बतलायो बाक बदेसरे
। वे क्यु मूडया नाख । पहासांओ समझा नहीं । अब क्यु करो
खेपा ताबजी । अब ३ । गुरु बोले बड आमो गोचरी । ग्याओ
मत ने पाय । मूडा बडाने रोगी गिलानी । तपसी छोटा नाबने ।

ओखद वेखद सुजतो सरे । वेगी देवो आणजी । अव० ४ ।
 थे तो वेठा हुकम चलावो । माने राख्यां दाम । इण भग्नें दुख
 दीसतारे । कसी मुगतरी आम । खासी सोड न्यावसी सरे । मेतो
 करस्यां वासजी अव० ५ । हीमडा तालो जडीयो होसी । वगत
 अदूरी थाय । दिन आयो नही पेरसी सरे । काले सुता खाय ।
 बीना वगतरी गोचरी । समेल्यावा कठासुजाएजी । अव ६ ।
 श्रावक थारा सुमडा सरे । वाता में विलमाय । वायां तो बोले
 नही सरे । जीमे आडो जुडाय । मूंडा देखी तीलक करे सरे । छती
 वस्त नट जायजी । अ० ७ । श्रावग भगता आपरा सरे । जोवे
 थारी वाट । थे तो वैठा वात गणावो । मे गोफां सुत्र पाठ । थे
 कड वेठा वद जास्योस । भारचां मारो पाटजि । अव० ८ । दोरो
 सोरो जावे गोचरी । भन भावे ज्युं लाय । सरस दावनीचै धरे
 सरेम निरस उघाडे आय । कपटी कपट गुरासुं करने मन गमती
 मील खायजी । अव ९ । अणगमतो आगे धरे सरे । गमतो देवे
 छिपाय । जाणे देसी ओग्ने सरे । अथवा आपलीराय । बीनेवंत
 वाजे लोक में सरे मरने दुरगत जाएजी । अव १० । अच्छो
 भावे आपने सरे । मारो न्यायो न आवे दाय । मीलसी जैस्यो
 न्यावस्यांस । काड धरण वेठा जाय । ज्यो भावतो खाय न्यो
 सरे । नहीतर न्यावो जायजि । अव० ११ । गुरु जाणीने करा
 वदगी । थे नहीं देवो जस । ग्यान ध्यान आगो रयोस । बल
 नहीं जीभमें रस । नाम कठी जावा अगाडी । पढीया थारे वसजी ।
 अव० १२ । जावां तो जाण नही देवो । थे कइ खारव्यां दाम ।
 वेठा वेठा वात बणावो । मासु करावो काम । भायांन मेला

करम्यास्यु । बिगड बाणसी मांमजी । अब १३ । असरीसु प्रप्यो
 गयो सरे । धूक दीधी मरबाद । रोख मसकरी । बाला बिगला ।
 करे म्यान दुख याद । मारी कर्मा मेला दुखने । ठपकावे असमान
 जी । १४ । रागीओगुथने गखसरे । सीख न देवे ताम्य । पल
 करे अबनीतनो सरे । होरया आख अजाय । डर नहीं गुरुदेव
 नीसरे । किबरी राखे कसबी । १५ । कुखिल पाचसे परक
 आचारब । कोड दुवा एकंत । सगलद दुवा सारखा सरे । नही
 एकमें संत । बस राखे निब आत्मा सरे । सोइ साथ मईतजी ।
 अब० १६ । झल फटीने कारी लागे । कष्ट गयो असमान ।
 एक ठवे तो संकट आखे । बिगडयो सपसोइ बाख । किख २ ने
 ओलंका देवे । कूवे पड गइ मांगजी । अबर्द्धासी नहीं आबरु ।
 दोन्यु मव दुखदाय । ठस ठम सुत्रमें बाण्यो । बांचो चित
 सगाय । ओक फरक बाला बिगलासु । मोलाने मरमायजी । अ०
 १७ । आप अकेला कर कर लेस्यो । मारे गबारी पूठ । सारे
 नहींका बाप रेस । मै कसदेव बास्यां ठठ । आखे रामदेवच कथा
 । माडी बांछ चुटजी । अब १८ । सगला मारी करे कंगी ।
 पाने लागे अहर । श्पाओ बोली पात्रासरे । मारा पना देंदो
 हेर । न्यारी करस्यां गाथीम । कोइ नही छे पारो खरजी ।
 अब २० । सीखायइ इबमें हीतछरी । बांचो आख त्रिवेक ।
 त्रिनेवत हीरदामें धरम्यो । सुत्र मांप देख । अबनीताने नहीं सुबावे
 । सुख सुख कससी पेखबि । अ २१ । अबर्द्धांसु बीतसके नहीं ।
 मूनकरी मगरंत । बमासी पोसासो देखो । मत चलायो पंथ ।
 पखीया बेठ पाहो पाइयो । कससी कसु अनंतजी । २२ ।

१६ सैं साठो सुखदाड । जेपुरमांण जडाव । चीती जेसी जोड
सुणाइ । नहीं धेपरा भाव । आयो वेतो मिछामी दुकड । ग्यानी
आगै न्यांवजी । अत्र० २३ ।

श्री मंथिरजीरो स्तवन

देसी मोए अपनी कर राखो । मोए चरणामें राखो । मैं
सरण लीयो छे थाकोजी । मो० आंरुडी । १ । पुदगलको रस
पाको । मैं जनम मरण कर थाकोजी । मो. २ । प्रभू श्रीमंथीर
श्रीस्वामी । मोए तारो अ तर जामीजी । मो. ३ । लख चोरासी
फिर आयो । जठे जैन धर्म नहीं पायोजी । मो. ४ दुलभ नरभव
पायो । मैं तप कर तन नही तायोजी । मो० ५ । पुन खजानो
न्यायो । मय एले साथ गमायोजी । मो. ६ । कुमतीकी संगत फेली
। आलममें आतम गालीजी । मो० ७ । मायामें ममता फेली ।
चारुं गत चोपड खेलीजी । मो० ८ । प्रभू थे मुगत्यांरा गामी
। मैं निठ २ समगत पामीजी । मो० ९ । मारो कुमत न छोडे
केडो । थे अत्र तो न्याय निवेडोजी । मो. १० । प्रभू ज्यो मोए
राखो नेडो । भवदु खरो पाउं छेडोजी । मो. ११ । प्रभू आप बडा
उपगारी । कण्णीमे क्रमर हमारीजी । म. १२ । प्रभू कर्मनकी
गत न्यारी । कोड लख न मके नर नारीजी । मो. १३ । प्रभू
अब के ओमर आयो । मैं धर्म तुमारो पायोजी । मो. १४ । प्रभू
ममता में मुगजायो । मैं फिर २ ने पिमतायोजी । मो. १५ ।
प्रभूरीजमउभरपाड । क्रमनकी कथा सुणाइजी । मो. १६ । प्रभू

१६ सैं बरसैं सठे । हुया धर्म ध्यानरा छठसी । मो १७ ।
 भासोत्र मास बढ आठे । र्म बरस सरसाठजी मो १८ । जडाव
 जेपुरके मांइ । करमनकी कया सुखादजी । मो १९ ।

कका यतीसी लीख्यत

बडावजी महाराज कृत । दोहा । अरिइत सिध समठ सदा ।
 सरससी लागू पाय । बरख यतीसी में करू । स्वानिध कीन्यो
 मांय । १ । कका करखी कीजीए । क वरमाओ दान । समत
 रखीने रहे । होजा करख समान । २ । खुखा खिजमत कीजीए ।
 गल्लेबनकी खूब । अबरखिरखो होयगो । नहींछ जासी दुब । ३ ।
 गगा गरब न कीजीए । सुत सम्पतहु बख । ओरो कीसन बुरारजी
 । रया एकका एक । ४ । बचा बेरो कर्मको । लागो तेरी सार
 छह चारासो खुसमें पूमठ कीरे गिरार । ५ । बचा बचा कीजीए
 । ग्यानी गुरक पास । बटमें कर द जानबो । होय मरमरो नास
 । ६ । कजा छेप न लीजीए । होजा आख अजाख । करखी जामी
 आपरी । मत कर खेपाताख । ७ । अजा जीवन जात ह । जेम
 महीको दूर । पोए बरी सिर पापरी । यू मारी घर दूर । ८ । अन्ना
 म्छट पेट चेत बा । मो नित्रा मत छेप । थोड होठ चोरटा ।
 चोखी सतगुरु वेंए । ९ । अन्ना नरमय पायन । मन्यो नहीं
 किरतार । प्यार बीनाकी चानखी । सेकट पाए अ धार । १० ।
 टा टाटी धर्मकी देखे अपखी पूठ । करम किराखो बेचने ।
 साबो सेतो छू । ११ । ठठा ठासी होयन । जामी प्रमद मांए
 । काइ खासी बापडा । करखी लीनी नांय । १२ । बडा

डरजा पापसु । सुखीयो होसी सेण । हंस्यारा फल पाडवा ।
 रोसी भर भर नेण । १३ । ढढा ढील करो मती । दान दयाकं
 माए । काल अचाणक आवसी । पछे गणो पिसताए । १४ ।
 गणा नीरणो कीजीए । देव गुरुने धर्म । सरदा राखो नरमली ।
 छोडो मिथ्या भरम । १५ । तता तिरणो दोयलो । विन सतगुरुकी
 संग । तिरसी सोइ तोरसी । देदे अपणो रंग । १६ । थथा थिर
 कर आतमा । ग्यान गरीबी जेल । थोडा दीनकी जाजली । पछे
 मुगतकी रहल । १७ । ददा देणो दोयलो । साध सुपात्र दान ।
 लाखा खरचे लाजमें । राखे आपणो मान । १८ । धधा धनसु
 भरी । तरसे निरधन लोए । पावे सो खावे नहीं । एह अछवा
 मोए । १९ । नना नाकारो कीयां । कीरत फेले नांय । भूजी
 बाजे लोकमें । पूंजी प्रले जाए । २० । पपा पांचू बस करो ।
 चुगल चोरटा जाण । ठग ठग खावे ठीक विन । चतुर करो
 पिछाण । २१ फफा फिर २ आवीयो । लख चोरासीमांए । फिर
 नहीं फीरणा लालजी । नैसो करो उपाव । २२ । बवा बणजा
 बावलो । होजा जाण अजाण । आरंभ कारज पूछतां । मत बण
 आगीगण । २३ । मभा भारी होत हे । आतम आलसमांए ।
 किण बिधा तिरसी जीवडा । भव दधी भरयो अथाय । २४ ।
 ममा मान बडाइ छोडने । सगहीसु हित राख । दुसमन अपनी
 आतमा । ममता रसने चाख । २५ । या लायो या न्यावस्यु ।
 या मारी घरनार । याया करतो मर गयो । खडो रयो परवार
 । २६ । ररा राजी होयने । आरभ कीया अनेक । बदले
 देता दोयलो । म्यादपू गा फल देख । २७ । लला लाज न

राखीए । दान दयाक मांए । नफो लेता बस पखो । दोन्यू मव
 सुखदाय । २८ । बग्ग विनहु काशीए । राखे सबकी साप्र
 परका प्राण उबारके । आपणा सारे काज । २९ । ससा समपत
 पाएने । छाद खरची नांय । सारे पिश नै ले बन्धो । घर गये
 भरती मांय । ३० । पपा खायो खरचीयो । दीयो नहीं दो हाथ
 दीयो घरमें बानखा । दीयो बाखे साध । ३१ । सदा सफेद
 कर्मकी । करता और न कोय । दोस न दीधे रामहु । बांक आ-
 पखो खोए । ३२ । हवा इस संसारमें । बनम भरख की जोड ।
 जाउ पिश आउ नहीं । एमी पाउ टोड । ३३ । १६ से
 अठारने । कलसामांए पढाव । कलबतीसी करी । केपुरमांए
 बढाव । ३४ ।

पुजजी म्हाराजरा गुण लिख्यते

देसी पंषीहारी छे । भूत हो मोवन गारी पूजनीरे । बाखे
 पुनमर्चंदर । मवि जीन हो मविहु बकोर निहारनेरे । पामे परम
 आखदरे । मूर्त । १ । आंकसी । बंदूरे जंघु दीपरा मर्तमेरे । मठ
 भर देस मन्धारे । सोवन हो सोवन बली गु बावखीरे । उ डा नीर
 अपार १ । मू २ । खर करे खर फलोदी दीफ्तो र । हिंदवाखी
 तप ठजरे । भावक हो २ लोक बसे विहार । देव गुरांसु हेजरे ।
 मू ३ । ओमजर ओस बममें सोमतार । पु गसीर्या बड बातरे
 । रमार २ भी उर ठपन्यार । प्रतापचद्री तातरे । मू ४ । तब
 हुत हो २ मांय अनमीपार । सुम बला सुम बाररे । उद्यव हो २
 बहु विद साबन्धो रे । हरख्यो सो परमारर । मू ५ । बंधव

हो २ च्यारसे हो धरुंरे । येन एक माल रे जनम्यां हो जनम्यां
 पांचू अनुकरमेरे । मात तात कीयो कालरे । मू० ६ । आया हो २
 पाली स्हरमेरे । बहन पटंगो जाणरे । करवा हो २ पेट अजीवकारे
 । च्यारुं चक्रसुं जाणरे । मू. ७ । मीलीया हो पूज कजोडी-
 मलजीरे । पूरब पुन पसायरे । बंधवहो दोन्युं ए ममतो करीरे ।
 दीनो जग छिटकायरे । मू. ८ । गरु मुखरे गरुवीने अराधेनेरे ।
 भणीया ग्यान रसालरे । पछेरे विरोह पडयो लगु भिरातनोरे ।
 बडो कसार कालरे । मू. ९ । थाणे हो २ पूज वीराजीयारे । अजिया
 पुर सुम ठामरे । तप जप हो २ करी सलेखणारे । पुज पधारतां
 धामरे । मू. १० । पाटज हो पाट विराज्या पूजनेरे । बड बंधव
 विनेचदरे । लायकरे नायक चारुं सिंघ नारे तोडे कर्मना फंदरे
 । मू० ११ । समतरे १६ से पचावनेरे । जेपुर सेखे कालरे ।
 दीज्यो हो दीज्यो द्रस जडावनेर । कर किरपा किरपालरे । मू०
 । १२ ।

ढाल

गजरारा गीतरी छे । जी घणा कालसुं बीचारतां । मला
 पदारथा आप । मनवल्लीत पासा दल्ल्या । पूज तणे प्रताप । म्हाराजा
 थारी वाणी प्यारीजी । समज पडे सब न्यारी न्यारी न्यारी । माने
 लागे प्यारीजी । आंकडी । १ । जी सग सरव सेवा करे । धर्म
 ध्यानग ठाठ । च्यारु जोडे दीपता । पूज वीराजे पाट । म्हा०
 । २ । जी स्रमत पग्मत धारणा । भिन २ करो वखाण । रागद्वेष
 नही उपजे । छो अवमरका जाण । म्हाराजा थारी । ३ । जी
 हीए वीराजे सरसती । सुमर कठ सुपियार । सुण फुले पुरखदा

बरसे इमरत धार । ४ । जी इतनी मानो बीनती । कनीरामजीरा
सिस । होली चोमासो कीधीए । जेपुर बिसबा बीस । मा० ५ ।
जी पया परीसा देखने । दरसख दीया दीयास । मारबाइमें मन
बस्यो । परातम्भरो रूप्यास । महा ६ । जी तपस्यां करवा
आपरे । बाया यह उममास । अर्ज करे बडावजी । मानो दीन
इयास । म्हा० ७ ।

चवदा नेमरी ढाल लीख्यते

चवदा नेमें बीतारो । झांझी । प्रथम सचीत लखी मरबादा ।
मिन २ कीन्यो बीप्यारो । इबादिक विथमाण । अनंता । सुतख
पीय्यारो परीहारोरे । प्राप्ती । चवदा० । १ । पांच बीगे रोजाना
नैलीजे । कोइ एक टालो लीजे । पनी पावडी मोजा बगेरे । गिरा
सिद्ध चारीजरे प्राप्ती । च २ । मुख्य खात तम्बोल पांचदे
। विशरी करो मरजादे । कटे कुमम सुर्गचरी गीराती । कीजे मठी
प्रमांदरे । प्राप्ती । च । ३ । बहस गाडी नाब असपारी ।
दिन प्रते गिरा लीजे । महस सेना गुडां कुरसी । रोजीना सख्या
कीजरे । प्राप्ती । चवदा । ४ । बख बेममे पांचूइ कपडा ।
कीमत बख बीचारो । गिराती कर मरजदा बादो । बे गतिरो
संसारोरे । प्राप्ती । ५ । बन्धोपणमें काजल केसर । टीकी
आरिसे निहालो । मरदन पीडी चन्दाभाडी । आधरा फुलारी
मासोरे । प्राप्ती० । च ६ । बम इम्पारमें सीस पासीजे । दिस
मरबादा कीजे । चवदइ राजरी इबरत रोको । नरमव सकल
करीमेरे प्राप्ती । च ७ । नाखय घोवय बेस सरबबी । त्यागो

गिणती आणी । ते श्रावण भर मागर तिरमी प्राण ज्यूं जाणे
पाणीरे । प्राणीरे । प्राणी. । च० ८ । भात पाणी मरजादा तो
लीने । समवेइ पेट प्रमाणे । उतम करसी नेम चीतारी । ते धर्मरो
मर्म पीछाणेरे । प्राणी. । च. ६ । १६ सें जडाव जेपुरमें सावण
वद वावने । दिन दस मीने जोड सुणाइ । नेम चितारे सोधने रे
। प्राणी. च. १० ।

श्री म्हावीरस्वामी को सिली लीखंते

चाल शिलोकारी । अरिहंत सिद्धारे पाए नित लागु । गुरु
श्यानी पासे वीद्याजी मागूं । महावीरस्वामीरो कहस्यूं शीलोको ।
एकण चित करने सुणज्यो मय लोको । २ । मरीछे भयमे
तपस्यां कर मारी । वावे आदेसर हुडी मीकारी । ३ । मा मिरखो
होमी छेलो अग्रतारी । इतनी सुण मनमे फूल्यो अपारी । ४ । मारो
कुल मोटे बोले अहकारी ; फालेदे कूढयो उंचो कुलहारी । ५ ।
कर्म नीकाचित वांच्या तिणवारी । तेनो फल कहस्यूं सुणज्यो
अगाडी । ६ । कालत्र तिहा समकित पाइ । गिणती मेली ना
भवमताई । ७ । थानक वीमुंड पडले भवमाड । सेव्या तिर्थकर
गोते उपाड । ८ । दममा सुरगम उपना जाड । वीसे सागरनी पूरण
तिथपाइ । ९ । मुर मुख मिलमी चप्रिया जिनराय । मान प्रभावे
मागण कुल आया । १० । देवानढारी कूखे उपना । माताजी
देख्यां चवदे सुपना । ११ । वेठा मभामें मुरपत वीच्यारे । कठ
प्रभूजी लीनो अवतार १२ । अउदे प्रजू जी ड्याफोदीनो । नीसचे
करोने सासो मन कीनो । १३ । वीभूवन स्वामी तीरये नाथो ।

पामस कुल आया इपरम बालो । १४ । उपजे कदापी वनम न
 पावे । देव सङ्घटीसु सारन करावे । १५ । हीरकममेपी छे कर
 आयो । बदलो कडीने सुखसत्ता पायो १६ । लक्ष्मीकृष्ण सिंवारस
 रत्ना । राखी विसचारे कृष्ण पदार्था । १७ । हाथ मोडीने सीस
 नमायो । सरो फेरो कर मुरग सिंघायो । १८ । देवानंदा मन
 आरस आवे । सुपना हमारा पूज्य छे आवे । १९ । मत्ता
 विसचारो माग सत्तायो । निन मात्तो पुत्र से बद्ध आयो । २० ।
 म्हास बरोहामत्तयांरी बाली । सटके लू माने सेजे सु बाली । २१ ।
 पोढ्यां विसत्ता दे वल्लती सीरेखी । पोडीसी मित्रा बागे मिरम
 नैखी । २२ । बर देह सुपना ठसम देखे । बर कैसो आगी हरक
 विसेखे । २३ । पाछ करीने हीरकामे धारे । देव गुल्मे परम
 बीतारे । २४ । ठठयां सेजावी धीमा पग ठत्ते । गत्र गती बाले
 बाले मरत्ते । २५ । बखी ठमछ पिब पासे बाल । पोढयां बालीने
 पगावे बाल । २६ । जियेसर प्रमाथी राग सुबावे । निद्रामे सुता
 कंय बगावे । २७ । हाथ मोडीने ठ बी निज मित्र । पूछे म्हाराजा
 किम बाल सुइ । २८ । केठो सिंघासल बीसरामो बालो । खेद
 टालीने कज फुरमायो । २९ । बाल पापी निज आत्सल केठो ।
 बिनो करीने बोसे सुख मीठी । ३० । इपरमपरी सुपना में दोठ
 । सुबतां म्यामीजो लागे बत मीठ । ३१ । बोले म्हाराजा बिब
 सेती माखो । सरवे सुबायो संज मत राखो । ३२ । मसकतो
 मंगल बम्बाडीमांते । इजो बिरखनेसिंघ माख्यां छे । ३३ ।
 बोये सिद्धमीजी म्हाक ब मात्ता । पाये बरबारी पुसपारी मात्ता
 । ३४ । बटे उगतो ससि हर होवे । सैस फिरवाइ मुरब सोवे

। ३५ । आडमें घजा आकासां लेखे । नवे संपूर्ण कलसे त्रिसेखे ।
 । ३६ । पदम सीरोपर कपला कर छायो । खीरे समुद्र हीलो-
 ला छायो । ३७ । देव वीमाण देवा वीराजे । रतनारी रास तेरमी
 छाजे । ३८ । निर्गु अगनी चन्दमें देखे । जल हरती
 जाला चिउदीस लेखे । ३९ । इणपिठ स्यामीजी सुपना में पाया
 । हरखीने गोल्या सिधारथ राया । ४० । तिग्थंकर के चकरीसर
 नाणी । कूखमें आयो उत्तम प्राणी । ४१ । तहत करीने सीम
 चढावे । सीख केडने निज मिद्र जावे । ४२ । उगते सुरज
 सिधारथ राया । मजण करीने सभामें आया । ४३ । इग्याकारीने
 हुकम दीरावे । आठे भट्टासण आगे रचावे । ४४ । पसवाड़े एक
 प्रेचे खंचावे । नमो राणीरो आमण वीछावे । ४५ । मरजादा
 सेती महाराणी आवे । श्रीफल सुपारी हाथमें लावे । ४६ । हल
 वेगा जावो पिंडत तेडावो । चवदे सुपनारो अर्थ करावो । ४७ ।
 हुकम पाडने नगरीमे जावे । सुपना पाट कर्ने ततखिण ल्यावे
 । ४८ । नीरखी हरखीने राय वढावे । आद्र करीने आगे वेठावे
 । ४९ । अणु करमे सुपना मरवे सुणावे । सास्त्री देखीने अरथे
 करावे । ५० । त्रिलोकीनाथो तिलक सरीखो । आय उपन्यो
 म्हारणी खू खो । ५१ । दोय कुल तारक सुरज सामानो । अन
 धन लीछमीम भरसी खजानो । ५२ । भरत खेत्रमें उदयोते
 करसी मजम लेडने भिवरमणी वरसी । ५३ । सला करीने बोले छ
 मोसी । उत्तम सुपनारो चो फल होमी । ५४ । राजा राणी सुण
 भाणद पाया । दान देडने घरे पूछाया । ५५ । श्रीफल सुपारी
 शानाका बीडा । बाटे सभामे करता बहु कीडा । ५६ । जीमणकी

बन्पा मोहन कीना । लौंग मुपारी मूखस सीना । ५७ । निठ
 नरस्ता पदरे बन्पा मूषण । गरम प्रतीपास्ते टाले सब रूपण । ५८ ।
 पुनय प्रमावे ठपमे सुम डोला । पूर म्दाराजा करती रंगरोला । ५९ ।
 म्याने प्रमावे गरम आलाव । धीनो करीने अ ग म कोषे । ६० ।
 माता दुख पावे करती बीषारो । हाने न आले गरम हमारो । ६१ ।
 राजा राणीजी छुंता बह । जीवे जठालग संजम नहीं सेठ । ६२ ।
 बिल २ करती आमुडा नाखे । पग फुरछयो हरण बिसेपे । ६३ ।
 बांटे म्दरा दुबो आखंडो । दिन २ बाध धीम दुबनो पदो । ६४ ।
 चैत सुदीने आदीसी रातो । तगसन जनम्या भी जगनायो । ६५ ।
 छपन ह बारी मंगल गावे । चोमट इठ मिला मेरु पर म्यावे । ६६ ।
 तीरब मेलीने पाखी मगाव । मर मर कस्तमा ठपर पदरावे । ६७ ।
 इठ सगलछ अणुक्रम म्यावे । बासक बय प्रभूजी असस्ता पावे ।
 ६८ । सिध बल ततखिब परम्यो दीयाव । बटी चापीने मरु
 कपावे । ६९ । ग्यान प्रभूमी सरपत बीषारी । जाली प्रभूजी
 मफती तूमारी । ७० । अनंत बलीने सामय बीरो । सक इठ
 नाम दीप्ता म्दारीरो । ७१ । उज्ज्व करीन निब मित्र म्यावे ।
 ७२ । मुषी मलाने मीस नमाव । ७३ । देवी दवा मित्र विष लोक
 भाव । बिबमें अठाइ उज्ज्व करावे । ७४ । दिन ठगे दासी
 दाहीने आइ । पुत्र जनम्यारी दीनी बपाइ । ७५ । सोनारी
 म्दारीसु मायो मवावे । दासीपखाने दूरे करावे । ७६ । हुकट
 बरबीने भावय सारा । बरस म्दाराजा कंचन पारा । ७७ । पुत्र
 जनमारे हरक करावे । चंद्रमा देखी आपस्त सुलावे । ७८ । छे
 दिन ठगा सुरख पूजाव । दसमे दिन सुतक हर करावे । ७९ ।

भाइ वेठा ने न्याती वूलावे । डसोटण करस्यां दुवो दरावे । ७६
 । वांमण वचकसण कंदोह ल्यावो । त्रिविध भांतीरा भोजन रंदावो
 । ८० । कुटुंब कवीलो स्हरका सारा । जीमण वैठा न्याराजी
 न्यारा । ८१ । आदर करीने चोकी वीछावे । सोनां रुपारा थाल
 दीरावे । ८२ । पहली मीठाइ पछे पकवानो । पुरसें सगलाने
 दे दे सनमानो । ८३ । लाडु पेंडा ने घेवर ताजा । भीणा फीणा
 ने खांडरा खाजा । ८४ । वरफी कलाकंद मीश्रीरो मावो । पछे
 दूजाने पहलीयो खावो । ८५ । तहथडा ने जलेवी फीणी । गहरी
 गलेफी खांडज चीणी । ८६ । पेठा डोठा ने नुंगतीरा दाणा ।
 पुरसें माडेणी भरीया छे भाणा । ८७ । गूंजाइमरती सकरपेरा ।
 कर कर मनवारा पुरसें छे गहरा । ८८ । चदकलाने चूरयो
 चकचकतो । सगला सरावे जीमण जुगतो । ८९ । मालपुवा ने
 खीर वणावे मीश्री ने मेवामांण रलावे । ९० । सीरो सावूनी
 भरभरती लपसी । दूध रावडीया पीवेला तपसी । ९१ । लुची
 पूडीने सोटे सुंवाली । छावा ले उवी पुरसणे वाली । ९२ ।
 फीणा बटीया ने पतलीसी पोली । पूरण पोली घिरत जवोली
 । ९३ । दाल सालने केसरीया भातो । मिणज भडीयारो जीमें
 सब सातो । ९४ । सुतक तोलीमीजीम खाणा । लोइतिल्ली ने
 कसकसका दाणा । दाख बीजोरा खारक खीजुर । काची गीरीने
 केला अंजीर । ९५ । कीसमिस चारोली बीदाम पिसता । नुकले
 पचरंगी खावे मत्र हसता । ९६ । पूवा बडाने कचोरी ताजी ।
 पापड फलीयासे सब कोइ राजी । ९७ । दाल सेवाने मोगर

मगावे । मुज्या पकोडी सवनेइ भावे । ६६ । पीणा बबसा ने
 अ बोलमपी । और तरफारयां पुरसे छे केती । १०० ।
 करेकचरिया खीज्यां खारोडी । पापइकी गोम्याने तिलवसा
 बोडी । १ १ । पोल बडा ने राइता म्यावे । ज्यू २ मीठ्य
 दूखी बीमावे । १०२ । आवे अयाखो केरीजीपाको । मागे
 सगलाइ पुगयलो पाको । १०३ । खडी चारसने फासी कैलेवो
 मीठ्य पर छाटी मर कोइ सेव । १०४ । छोला पतासा मीभीरा
 पाखी । म्भरी मरण्याए गिंदोदक द्यखी । १०५ । बीम्यां
 जूटने चतुर्वी कीना । बिबद प्रकरना मूछस सीना । १०६ ।
 बन मुशमस मुशवी आव । कुडवा टोपी ने सांतीपा म्यावे ।
 १०७ । गावे मंगल बाज बाजा । नाम दीरावे सिंघारव राजा ।
 १ ८ । नासारी जागा प्रगण्यो निशानो । गुष निप्यन्न माम
 दियो भिदमानो । १०९ । बस्त्र सुपस ने रुपया रोको । वेइ
 बीदाय सरव मंताको । ११० । पांचे पापां मिल पाले नानडीयो
 । पोड पासर्वाए गावे हालरीयो । १११ । छे महीने खावो
 सीखाव । छोटी पटराकिय रखाव । ११२ । इस खेसने शुडोम्या
 चाले । पडी करवे भांगलीयां म्भले । ११३ । कडा मोली ने
 बांइसीयो छात्र । कंडी दसा ने हार बीराजे । ११४ । कडीयां
 कंदारो गुगरीयां घमक । पाण धाअरयां चाले छे ठमके । ११५ ।
 अगा टोपीने मुलुष सोने । बठगाडोले सगलाइ ओवे । ११६ ।
 तली जलेरी मीभीने मषा । दइ माखय सु मागेकलेवा । ११७ ।
 आडो माईनि रुसथो लवे । माण मनावे मागे ओ हरे । ११८

। चक्री भराने ख्याल तमासा । देखी माताजी पूरे मन आसा ।
 ११६ । लाडे लडावे वैनड भुवा । आटे वरसरा जाभेरा हुवा ।
 १२० । वेला पुल देखी भण्णा ठावे । हुसं करीने जोमीजी आवे
 । १२१ । चादीरो पाटो सोनारो वग्तो । लिग्न लिख पाढाडा
 मुख आगे धग्तो । १२२ । खोट जाणीने कोद चढावे । सोमी
 पाटो ने मामा डरावे । १२३ । ऊंउंकारनो अर्थ कगवे । सुणने
 जोसीडो इचगज पावे । १२४ । याकी बुधीरो पार नै
 पावे । [एमी तो विद्या हमने नहीं आवे । १२५ ।
 थर थर धुजतो उठीने भाग्यो पोथी लेखने मार्ग लाग्यो । १२६ ।
 जोग जाणीने सीनी सगाड । पुत्र परणायो बहु घर आड । १२७ ।
 दाम दामीने डाढजो ल्याड । पचढंदिना मोग मिलसे सदाड ।
 १२८ । पीव द्रमण नामे वेटी एक जाड । परणी जमाली जोग
 जवाड । १२८ । मात पीताजी वारे व्रतधारी । लीनो अणसणने
 दोषण सत्र टाली । १३० । काले करीने उंची गत पाड । सुरगे
 वारमा उपन्या जाड । १३१ । उठासु चप्पसी अनुकरमे दोड । खेत्र
 वीदेहमे मिव गत होड । १३२ । पछे प्रभुजी सजम लेवे । बडा
 भाइजी आग्यानै देवे । १३३ । मात पितारो पडीयो बीजोगो ।
 तू काड भाड लेवे छे जोगो । १३४ । धीरज राखीने ठहरोरे भया
 । बर्म ठोए लग निरलेप रैया । १३५ । लोकिंतक देवा तिण
 वेला आवे । हाथ जोडीने अरजे करावे । १३६ । ओसर आयां
 सजम लीजे । भग्नखेत्रमे उदयोत कीजे । १३७ । इंद्र इंद्रकारी
 बेसरमण आवे । भरीया भडारा दाने दीरावे । १३८ । सोला
 मासारो सोनैयो कीजे । एक कीरोड आठ लाख दान दिन प्रत

दीजे । १३६ । इसहीकोडारो छमछर दानव दीनो । एकएकी
 दिन संवम सीनो । १३७ । दिख्या किण्याण उखव करावे ।
 नरनारी पाछ नगरीमें आवे । १३८ । कुटम सडुने पृष्ठ दीनी ।
 बेसे अनारव इबाजी कीनी । १३९ । गस्त्र छे मफ इठ उवा
 छे आगे । कष्ट गहो छे नुरमें सागे । १४० । हुइ न होवे
 मगईत माखे । कर्म इबासु दूटे नहीं छाखे । १४१ । लाड देसमें
 पादरा आया । बीत्पा परीसा कर्म खपाया । १४२ । बारे छमछर
 ने साढा छन मासो । इमस्त रया बर्स ३० घर बासो । १४३ ।
 उपस्या करीने केवल पायो । तीरथ थापीने सांसथ बरतायो
 । १४४ । गौतम आदीन वरदे इबारो । रहस क्वीसे साववयां
 छारो । १४५ । एक लाखने गुलसत इबारो भावक हुवा
 बार वरत चारो । १४६ । तीन लाखने सइम अठारो । भावक
 हुइ इतनो प्रवारो । १४७ । म्हास इइसपुर प्रसुजी आवे । देवा
 देवी मिल विगडो रवावे । १४८ । सोनारा कोट न रतनारा
 छाया । गावे अमर ने बाजे छे बाजा । १४९ । आकासे देव
 दुदमी बाज । देखी पालांडी दूरासु छाजे । १५० । किंक
 सिंघासथ बीर बीराजे । चपर बीज न छत्र छाज । १५१ ।
 रिलखदत ने देवाजी नंदा । बरसथ देखीन हुवा आर्यदा । १५२ ।
 फुसी काया ने कुटी इचनी धारा । देखीने पाया इचरव सारा
 । १५३ । हाथ जोडीने गौतम पूछे । बाइ सु सगपथ प्रसुजी सु
 छे । १५४ । मगईत माखे ७ मेरी माता । समये सु बीने पव
 सुख सत्ता । १५५ । ऐसा पुत्रनो पहीयो बीजोगो । अर तो

दोन्युं ड लेस्यां में जोगो । १५६ । सजम लेडने करम खपाया ।
 केवल पामीने मुगते सीधाया । १६० । अँसा तो वेटा जनम्या
 प्रमाणो । मात पीताने मेल्या निरवाणो । १६१ । गावां नगर ने
 अनारज देसो । पावापुरीमे चरमे चोमामो । १६२ । राजा
 पिरजाने देवीजी देवा । निमदिन मारे प्रभुजीरी सेवा । १६३ ।
 देस अठारांरा राजाजी आये । चण्डस पत्नीरा पोमाजी ठावे ।
 १६४ । बैठ निमाण सक डंढ आये । देड प्रदिएण सीम नमावे
 । १६५ । इतनी प्रभुजी किरपा क्रायो । थोडीसी उमर
 और बधावो । १६६ । ममम गिरहरो जोर हट जावे । दया
 धर्मरो उदयोत थावे । ६७ । हुड नै होवे ए बाता झुटी । दूडी
 उमर के नहीं लागे वूटी । १६८ । होण पदारथ निमचेड होड ।
 टाल सके नहीं सुरनर कोड । १६९ । कतीबुद अमावम आदीमी
 रातो । मुगत पदारथा श्री जगनाथो । १७० । मिंघचारामे हुवो
 छे सोगो । मोटा पुरमारो पडियो बीजोगो । १७१ । पछे भूरंता
 गीतमजी आया । मोवणी जीत्या केवल पाया । १७२ । सुधर्मा
 स्वामी पाटे बीराजे । तीरथ चारामे सिंध ज्यू गाजे । १७३ ।
 सातसें साधु एक हजारो । च्यारस उपर मझ सतीया लारो ।
 १७४ । करणी करीने कारज सारथा । केवल पामीने मुगते
 पधारथा । ७५ । बर्स चोसठ लगा केगली रक्षा । पाटोधर तीनू
 मुगत्यां मगया । ७६ । बरत्यो केड वस्ते वरतण हारो । सांमण
 चाल्यो बरस एकीस हजारो । ७७ । केड कथाने सुत्रमें धारी ।
 शिलोको कियो ओछी बुध मारी । ७८ । इधको ओछो ने

अकसर हीनो । लीन्यो सुधारी पंडित-प्रविणो । १७६ । म्यानी
माख्यो सो तहत करीजे । मूठरो मिछामी दुकई दीअ । १८० ।
मयो गूखो ने सीखो सगसाइ । मूढे जैबा कर बापीजो माइ ।
१८१ । समस्त १६ स साठरी साखो । सावरा बढ तेरस बैपुर
बरसाखो । १८२ । रतन हुनीरी समदाए छजे । पूढ बिनेचंदखी
पाटे बीराजे । १८३ । बेकरबोही अडाकखी बदि । म्हर राखीजे
बीर बीबदि । १८४ ।

कलस लीख्यते

महावीरसामी भुगत पामी । दीन बाखी दुख हरो । सिधारण
ननरा । अगत बंदख सिधमें सानिध करो । प्रह सेवगने सता
करो । १ । मन बचन कया । पइ पाया । सीसपे दो कर फी ।
अरअ एही करु केही । सेवा चाठ आपरी । प्र० । २ संसार
[सागर । तिरख छारख । विरथ ऐसो जाखने । अग] त्याग दीनो
सरबा लीनो । तर करु खा बाबने । प्र० । ३ । कस्त आइ
अनाइ रुखीयो । चार गत उजाइमें । नबपाट खोटा छाप सेता ।
अब आयो बाजारमें । प्र० ४ । प्रपंच पसीयो । कर्म कसीयो ।
राग बेग बंचख करी । मोए बाध सेछो । जीवटेछो । इबखरी
करखी करी । प्र० ५ । वर माय मोरी बंध तोही करम कलेसी
मारने । बड मीठ डंकर । होय निसंकर । कदिय न बाठ हारने
। प्र० । ६ । से ग्यान ध्यान । खजान साधे । समझि आगे
। राखसु । धर्म जागु बेठी । पार सेछी । अमर अमर सुख पाखसु
। प्र० ७ । दोहा । यह मनोरथ मायरा । पूरो भी सगर्वत ।

बालक हट हाती चट्ट । नही जाणे घरचंत । १ हुं बालक तुम
आगले । हट कर बेठो सु वाम । माएत विरद वीचारने । दीज्यो
मुगत मुकाम । २ । गिन करणी तिरणो नही । ए भुठी अत्रिलाप
। खोटो हीरो वेचतां । कैसे पावे लास । ३ । सुख दुख करता
आतमाने सचे पुनने पाप । नेमाड फल भोगवे । साखी धर छो
आप । ४ । सिध साधिक मीलीया विना । विद्या सिध न कोय ।
कांइयक प्राक्रम हुं करुं । सो पूठ तुं मागी होय । । मन घोडा
तनताजणा । चुप करलीजे ताण । तीनूंड बस राखतां । पावे
पद निरवाण । जनम जरा मरणो नहीं । अत्रिछल सुख अनत ।
क्या जाणुं कड पामस्युं । अखे गुमतरो पंथ । ७ ।

चोइसी लीख्यते

देसी होली काफीरी छे । रिखव अजीत समभव अमिनंदन ।
भव जीवनके मन भाया । बंदो नित नित चोइसड जीनराया ।
बं० । आकणी । १ । सुमते पदमसुभासचद । प्रभु । हरक हरक
परणमू पाया । बंदो० २ । सुवध सीतल श्रीहंस वास पुज । सीव
रमणीसैं चित ल्याया । बंदो ३ । वीमल अणत धर्म सत जीनेसर
। संत करी सहु सुख पाया । बं० । कुथ अरि मल्ली मुनि सो-
ब्रतजी । जनम मरणसुं कपाया । बं० ५ । नमीए नेम पारस
महावीरजी । सिवपुर मारग दीखलाया । बं० ६ । चोवीसैं गुणधार
नमूं नित । बहरमान निसदिन ध्याया । बं० ७ । १६ स
एकावन जेपुर । फाग रागमें गुण गाया । बं० ८ । बे कर जोड
जहाव नमे नित । जिन चरण चीत लपटाया । बं० ९ ।

छंद अढीयल

रिखव अजीत संभव अभिनंदन । सुमत पदम प्रभु । पाप
निर्करन । । सुपातसचद । सुवच सीतल मध । ईस बास पुजे
पद फंकज । २ । बीमल अर्धत धम मत सहायक । कुब अरि
जीन त्रिमुक्कन नायक । ३ । मलीनाथ मुनि सोजत सामी । नमी
नम पारस सिध गामी । ४ । सोइसमा श्री बिरम्प्यात ।
सांसव नायक सुगती दाता । ५ । गोतम आद नमु गुणधारी ।
बहरमान बीस उपगारी । माव सइत बंदो नरनारी । ६ । १६ सें
१६ सुख बासो । जपुरमाण पोस सुद मासो । ७ ।
सिध तेरस रवीचर सुबीजे । बकर ओड जडाव मसीजे । ८ ।
मखो गुखो सीखो सुखदय । ज्यो घर कूमी रह नहि कांइ । ९ ।
कलस । अरिहंत सिध आचार उपाध्या । साधु सकल गुण मातए
। बपू बाप मन बचन कया । त्रिकरस सुख त्रिकरस ए । ।
नक्कर सर संसारमाइ । ओर सरब अंजाल ए । पत्थो जीव मुअ
भूल निअ गुण । जग छर बाजी भ्यालए । २ ।

कजांढीमलजी माहाराजरा गुण लीख्यते

राग हरीजीरो राखो भरासो मारी । पंच परमेसटीरा पद
प्रससु । गण गिरवा गुण धारी । पूज कजोडीरा गुहरी माता ।
गुते गल हारी । पूजगीरो ध्यान परो नरनारी । आंफडी ।
पंच महजत निरमल पाल । खट कया सुखकारी । विधरत गाव
नगरपुर पाटव । मव बीचां दितकारी । पृ० २ । सत्रमेद संभ्रम
पात्ते । तपस्या कठल करारी । दोष बयालीस टाल मसी परम्प्यो

निरदोसण अहारी । पू० ३ । सम्प्रदाय आठमें जुगत वीराजो ।
 गुण खटतीसैं वीचांरी । रतन हमीरेकी गाढी दीपावो । आचारज
 पद भारी । पू० ४ । स्वरमती कवीराजे आजे । भवियण त्रिदमें
 जारी । दिन किर्ण परदेह दीपे । देख देह जाउं वारी । पू० ५ ।
 वाणी सुधारस इमरत धारा । वरसे निरमल वारी । पीता तपत
 भीटे भव भवकी । सुण समजे नरनारी । पु० ६ । ससि जीम
 सीतल वदन तुमारो । भविक चकोर निहारी । सनमुख बोल सके
 नही कोइ । अतसैं आपरी भारी । पू० ७ । मिख सरोवण सारा
 पूजरा । एक एक इदकारी । विनेचंद जिम सरद पुनमको । भूर्त
 भोवनगारी । पू० ८ । सिंध सहुनें सावाकारी । जोग मुद्रा ज्यारी
 भारी । पाटवी चेला पुजरा कहीए । बालपणे विरमचारी । पू० ९ ।
 जसराज जीरो जस अतिभारी । मरुधर देस मभारी । त्यागी
 बेरागी समतारा सागर । ममता कुमत विदारी । पू० १० ।
 सोभाचंदजीरी सोभा जगतमें । विने तणा भंडारी । अंगचेसटा
 यषपूजरी । अहोनिस् अग्यांकारी । पु० ११ । इदकी म्हर रही सुख
 सागर । भर पाहरी जवारी । निज कर जाणो कुरणा आणो । मे
 छुंदास तुमारी । पु० १२ । एक जीम सुं कहुं कठालग । महमा
 इदक तिहारी । तुम गुण सिंधु मुज बुध बिंदू । कहता न आवे पारी
 । पू० १३ । सेखे काल वीचरता आया । पीपाड सहर मजारी ।
 फागण सुद पख होली चोमासी । बारससि सुखकारी । पू० १४
 । समत १६ सैं वरसैं चोत्तीसैं । रंभाजी उपगारी । ज्यारे प्रसाद
 जडाव कहत है । चाउं नित किरपा तुमारी । पु० १५ ।

लावणी ली

दसी । द्रम रख नहीं टले करो कोइ साखा कतुरा । सात
 ६२ की अर बाहर सा । मत धवरापो धीरद रामो ।
 धम करो माइ । धर्म भर मरमें सुखदापर । धर्म० खोरासीक
 फेरा टले । हुगती कीसाइ । सात० आंफडी । १ । सातफ
 क्या डर है माइरे । मा० पुन पापका मोडा अगतमें । हुगते सम-
 साइ । हुटके नहीं होबे कोइरे । मर मरमाइ साये चाले ।
 निज कत कमाइ । सा० २ । नीत अझी राखो माइरे । नी०
 अनित अगतमें बोहत पूरी है । बखी विगड अइ । नीत सु रिजक
 बोहत बाइरे नी० पांशु पंडब राखा हरीचंद गइ संपत पाइ । सा०
 ३ । पापसे दूर रहो माइरे । पा० दान सीयल तप मात्र । पुनकी
 खरबी सखदाइ । खाप करमती खोवो पांहीरे । खा० कइत बडाव
 बेपुर क माइ । इज डर है नाही । सा० ४ ।

पार्सनाथजी की लावणी

ठमी कलाली मर ग्याये प्याला । कासी देम बढो नीको ।
 आनरसिख मोमांको कीको । सोम रयो अबनी मिर टीको । प्यारो
 प्राण हमजीको । तु म माता तु मही पीता तू मित्री तू मिण्ड ।
 तु सरशागत सायबा अग तारण अगनाब । मरखमेंसरख आप केरी
 मर पाम जिन आमरो लगे । १ । अर को तीर सम्यो तीखो ।
 मजन नहीं होय सक नीको । बिपम रस पुङ्गसको पाको । बीवको
 जोर कीयो भंडको । परो सागा कर्मको । प्रबल चार कपाय ।
 प्यारु गलग आकमें । भूयो अतन राय । चिटे किम खोरासी
 केरो । मिट । पा० २ । राग मोय बाध लीयो सैंठो । होपको

बीच पड्यो आंठो । रोक रयो मुक्तीको घाटो । लुंठ लीयो निज
 गुणको लाटो । साय करो तुम मायवा । रहो हमारी पूंठ । सारे
 नहीं इण नीचके । मारु एरुण मूठ । कोम लेउं धरम धन डेरो ।
 को. । पा. ३ । कर्मकी चाल हे न्यागी । उदेको जोर अति
 भारी । निमल है आतमा मारी । सया दुख व्होत अब हारी ।
 गुनगार छुं आपरा । तुंम हो दीनदयाल । टालो मोए मिथ्यात
 सुं । मीटे सरन जजाल । एहड मल सालत है गहरो । एह. ।
 पा. ४ । नाथ अब असरणागत तेरी । राख मोए चरणाकी चेरी ।
 मीले एक समगतकी सेरी । आवता नही लागे देरी । मुगतीकी
 जुगती करो । सुण ए किरपा निधान । बगसो द्योय पग भुमका ।
 कर लेस्यु गुदरान । व्होत जस होय आपको रो वो० । पा० ५ ।
 साठकी माल गड सारी । आइ अब इगसटकी वारी । उमर सब
 आलसमे हारी । लगे नही दूसरी कारी । गड गड सो जाणदे ।
 अगही सुरत ममाल । अवसर बीन्यो जात है । ज्युं अरटतणी गट-
 माल । आउ जल छीजत है मेरो । आ. । पा. ६ । चेत सुध
 दूज मुखदाइ । अजेकी लावणी गाइ । मिले मोए मुक्ती कीसाइ ।
 ओर सबरीज भगपाइ । १६ सें ममत भलो । जेपुर सेखे काल ।
 दीजे दर्शन जडावने । बरते मगल माल । कटे भरम जाल जीव
 केरो । कटे । पा. ७ ।

पूजजी महाराजरा गुण ली०

देमी । मोत्यारो घजरो भूली । पूजपरम उपगारी । ज्यारी सेवा
 करो नरनारी । आकणी । मे तो बीनती कर कर हारयां । तोइ

उपवाड़े पधारणा । बडलुने दीनी टासी । थारी बन्म भोम समाली
 । पू १ । मरा भाया कोसासे आया । न्याने टावर ज्यु जो-
 लाया । मारे होली मोली आमा । मो आप फरी निरासा । पू
 २ । आप तो सहरां सु राजी । कृष्ण राखे हमारी बाजी । मारी
 अर्ज बीनवी मेलो । थारा चेला चोमासे मलो । पू ३ । पूज
 पावन्न कीना । पुज दरसख मोडा दीना । माने त्रसे त्रसे त्रसाया ।
 मैं तो निठ निठ दरसख पाया । पू ४ । सती रमाजी उपगारी ।
 न्यारी बगतमें मैमा भारी । न्याने तो दरसख दीन्यो । मान फिर
 यावर मत कीन्यो । पूज ५ । सब सरीखा कर लेखो । माने
 एक निब कर देखो । मायत निरद बिचारी । मति देखो चूक
 हमारी । पू ६ । ओसंवा सुख लीजो । तो केर सुकृतमें कीजो ।
 रिन्यां तो किरपा कीन्यो । माने बेगा दरसबा दीन्यो । पू० ७ ।
 १६ सें अडवाली । बिचरता सेसे काली । बडलुमें पग चरीया ।
 मरा बंझि कारन सरीया । पू० ८ । गखी बापां बहन लुडा ।
 जडावजी डाल बयाद । सुबने कई बगसीत्र । कलप्ता
 मास रहीत्रे । पू ९ ।

देशी । आज शहरमें रहंआमारु सीपडे । छर सुबटपुरमांए
 बीराजीया । सयठा शुग चोमास । सुगरुजी कम्पोएक्युर हमारो
 नाबेजी । त्रसाबो नीप्रदास । स० । बग पधारो अपुर सहरमें ।
 आंकखी । १ । तुम बिने त्रसे खोय । स नब क्खत सीस सारे
 श्यावजो । सफस मनोरख होए । सु । ब २ । माफी करने को
 मानो बीनवी । बाबी कांसलबास । स बीन्यो दरसख परसख

होएने । पूरो हमारी आस । सु. वे० ३ । आप निरागी हो समता
 रा मागेरु । मोय ममत दीयो छोड । सु० पिणमुज मनडो
 होए ग्यो लालची । तुम सेनारो कोड । सु. वे० ४ । कीनो
 चोमाणो हो चेलारी चायमुं । फिर नही कीनी मंमाल । सु०
 हमतो गरजी हो अगजी कर होस्या । मानो टीन दयाल । सु.
 वे. ५ । होड न होवे हो जेपुर स्तग्नी । चेला हुया थारे पंचे ।
 सु. मनरी वंडी सोलो नाथजी । किम लीनो मन रखे । सु. वे.
 ६ । भूलचूरुने हो अग्रिनय अमातना । करीए रुगड कोय । सु.
 पसीये चमोसी होती जी छमछरी । खमीएमाएत होय । सु. वे.
 ७ । चंद चक्रोरां हो मोग मेहज्युं । बस रया मुज नेण । सु.
 वरसे नीर हो धीरे धरे नहीं । सण सणखकु वेण । सु. वे. ८ ।
 मनरा मनोरथ पूरो नाथजी । दूरो गणो तुम वासे । सु. पग पिण
 वेरीवो आगा खिसे नहीं । लवठ नही मुज पास । सु. वे. ९ ।
 ममन १६ सें हो वरस पचावने । भाटग्वा वड बीज । सु. जेपुर-
 मांए हो द्रस जडावने । दीजे कीजे रीज । सु. वे १० ।

ढाल

रे पनजी मूडे वोले । भांग तमांखुं अमलतिजारो । डणको
 संग निवारोरे खरच अणुंतो कांड फायदो । हीए वीच्यारोरे ।
 वीसन नीवारोरे । वीम, दुलभ मीनप जमारो यू मती हारोरे । वी.
 आकणी । १ । रंग रुप कह स्याद न दीसे । खाता मूडो खारोरे
 । नही मीले जब कइय न सुजे । करत पूकारोरे । वि. २ । माल
 मीले जब मोज करो । बहु मन भाव ज्युं खावरे । कसर पड़े जद

नींद न आवे । मन पिछतावेरे । वि ३ । एक बगानी पैसो पसे ।
 तीजे संगत खोटीरे । अंस करतां बिसन सगाया । काँद अकल
 फूटीरे । वि ४ । आखो मावे नहीं कमावे बेठो दम अगावेरे ।
 सब परकाने खारो लागे । माखी घुररावेरे । वि ५ । नता
 बाहरो नहीं कपडो । मोलत २ चुकेरे । मात कुजस्तरो भिन
 नहीं । मरवावा मूकेरे । वि ६ । इश मथमयि इतना अमगुश ।
 परमब पाप उगाड़ेरे । बिसन बिगूठा होय फजीता इस नरनरोरे ।
 वि ७ । १६ से एकसठ मसखे । पाँचम पल्ल उबवास्तोरे । अपुर
 माँय बडल सुगतसु । कद दितकारोरे । वि ८ ।

देसी । फलफलीया तेरा कटी भी बालपबो हमसेस
 गमायो । मोहन मिया बसको, बूढापामे अरा सतावे । छातां पीठा
 टमकोरे । बूढाया बैरी किच बिद बासी बांसु फूटको । वृ १ ।
 आकडो । भी मोल मद्र नेखाकी मंदी । दाँत पडया सब डीला ।
 नाक करे सुबबामे पाटो । केम मया सब पीलारे । वृ २ । जी
 पोडां हाथ देरने ठठे । कमर करडी कीनी । हाँग पकडने डिगटो
 बाले । सुइ बुदने खो दीनीरे । वृ ३ । भी बडुवा कोइयो काँख
 कापडो । कल मरसी तू हाकी । लाय सफा नहीं पहर सका नहीं
 । होडा का का बाकारे । वृ ४ । भी बोलातो बोलाव नहीं देवे
 । सीख न माने परका । साठी बुइ नाठी कइसरे पडयो
 रहनी मरखारे । वृ ५ । भी दोय पेटकी हाँडी माँय । खीर
 राखडी होवे । बेटां सबडे खीर खाँडने । बाबो दुगदुग बोवेरे ।
 वृ ६ । भी बेठा खावो दुकम अलावो । पर दम अगावो । फुरसां

जेस्यो खायन्यो सरे । नहीत जाय कमायोरे वृ० ७ । जी पीसा-
 पोवा करां रमोइ । टावर टूग गोवे । जाय पुकारो वेटा आगे ।
 मासु काम न होवे । वृ. ८ । जी वेटा वात सुणे नहीं तिल भ
 वैरांरा भरमाया । घरमें वेठा माला फेरो । कांड कमाण आया
 वृ० ९ । जी अठी उठीग धका लाग्यां । पूगे हो गयो कायो ।
 कुण सुणे किणने कहसरे । जाणे काग उडायोरे । वृ. १० । जी
 एरुत खाट पिछोफडे पटकी । कोय न आवे नेडो । कूरा कूरां
 करमूड पचावे । डोमांने मत छेडोरे । वृ. ११ । जी घरसुं रोटी
 करडी आवे नरम खीचडी भावे । दातासुं चात्री नही जावे । मन
 दीलगीरी न्यावेरे । वृ. १२ । जी दोरो खरच चलावां
 घरको । टावरया प्रणाणा । थाने माल मसाला भावे । माने भाग
 नही खाणोरे । वृ. १३ । जी मीख्यो ग्यान गयो गेवाउ । पडे
 ध्यान में घाटो । भग वजारा धाडो पाडयो । लूट लीयो सब
 लाटोरे वृ. १४ । जी पूरवपूजी खाय खुटाड उमर लंगी पावें ।
 जमदूत जग घाटी पकडे अंतममे पिस्तावेरे । वृ. १५ । जी पाप
 करीने माया जोडी । घरका फिर फिर जोवे । रोग असाता उडे
 होय जग आप अकेलो रतेवेरे । वृ. १६ । जी रोया गरज सरे
 नहीं भोला । हुंसीयारीका काम । भव भवमा ए साथे चाले ।
 प्रभूजीरो नामर । वृस १७ । जी ग्यानी होय सो गत सुधारे ।
 मूरख मरण विगाडे । बाल मरणने पंडीत मरणो । केड जीते केड
 हारेरे । वृ. १८ । जी आया जाया सगा सनेइ । चित नहीं देवे
 परणी । दोस नहीं देखो । किसीने । जोबो आपरी करणीरे । वृ.

१६ । जी जीवठहारी मार न पूछी । भिदभिद पाइयां बेला ।
मोबा पत्ते वात खीमावे । रोम द दे इलारे । वृ० २० । जी
शिय सबनीत सुवात्र घेटा । बिरला जुगमें पाथ । जीतब मरख सुघारे
होन्यू ठठसराकख बाबेरे । वृ । १६ ॥ एकसठ माइबे । गो
गानमी बखाम्ब । जैपुरमांए बढाबनोसरे । बरा फीयो नुक्साम्बरे ।
वृ० २२ ।

श्री मधीरजीरो स्तवन लीख्यते

हसी हंजा सीपाएफी । खेत्र भिदेइ बीराजीयाजी । श्रीमिद
स्वामी । होजी मारा अत्र जामी । हु इय मरत मोम्बरे ।
सीकसत गामी । आंकडी । १ । दिन देख्यां मन हुससे बी ।
श्री हो० बीम वात्रिक जलधार । मो २ लखद विद्या नहीं
मा कनेजी श्री हो० पांख नहीं तन मांय । ३ । विद्यापर मित्री
नहीं बी । श्री हो० गिख बिद मेखो याव । सी ४ । वर
दीमावर आप्तोजी श्री हो० बिचमें बिखमी बाट । सी ५ ।
आडाहु गर बने गशाजी । श्री हो० नदियांमो कण्घाट । सी
६ । इय मब आय सङ्ग नहींजी । श्री हो० बनखा उगति बर
सी ७ दिन उत्रगारनी चाकरीआ । श्री हो रखो कपू नी
इजूर । सी० ८ । मबसागरमें मरमनाजी । श्री० हो फरी अनंती
बार । सी ९ । अब तो न्याव निबेडदोजी । श्री० हो बी ममत
ममत गयो हार । सी० १० । मायत जावे जीमबाजी । श्री० हो०
बालक किम रहलार । सी० ११ । आप तो मोव पदारस्योजी श्री
हो मानेइ पार उठार । सी १२ । मबिए हु अमबी हु श्री ।

श्री० हो० सो तुम देवो बताय । सी० १३ । धीरज घर करणी
करुंजी । श्री० हो० मनको भरम मीटाय । सी० १४ । पूरवघर
दृष्टि धराली । श्री० हो० जवन साधुजी सो कोड । सी० १५ ।
चरण लागी सेवा करे जी । श्री. हो. हुं नहीं करुं जारि होड ।
सी. १६ । दूरे रह दर्शण करुंजी । श्री. हो. एसो कीजे उपाव
। सीव. १७ । बार_बार करे विनतीजी । श्री. हो जैपुरमाण जडाव
। सी. १८ ।

बीजे कवरजीरी लावणी लीख्यते

दे धन धन जंबू कवरजी जोवनमे समता लीनी । कछ देस
कसुंवी नगरी । देखता सत्र मन भावे । सेठ धनावो धगकर दीपे
। बीजे कवरजी सुत थावे । बाल ख्याल कर जोवन वयमें । सत-
गरुकी संगत पाइ । सर्व ब्रतामें सील बखाण्यो । बिजेकवर सुण
हरखाइ । किसन पखरा त्यागज कीना । उत्तम काम कियो हदरी
। भर जोवनमे सील आदरयो । बीजे कवर विजया कवरी ।
आंकडी । १ धन सार बलि सेठ दूसरो । तिणहीज नगरीकमाइ
। सुंदर मंदीर रिष संपदा । पुनवंत पुत्री जाइ । चोसट कलावती
सुलक्षण । रुपवत बहु चतुराइ । पूरव पुन संजोग धर्मरो ।
सतियांरी संगत पाइ । सील प्रसंस्या सुणी निज सरवण । सुकल
पख सोगन सबरी । मर० २ । माहो माइ करी सगाइ । मात
पिता सह सुख पाया । जान मान दे बहु आडवर । प्रण पात निज
घर आया । रुपा रेल केल कंवाज्यु । नमन करी सब पाए पढी ।
सज सोला सिणगार सुहागण । पीउ मिंद्रमज आय खडी ।

दोहन दोर घटा चढ़ आइ । अमरमें अमक विचरी । म० ३ ।
 सीस रखडी करना कु डल । नक बसर चूपा चलके । मुख तपोल
 मांग मर मोल । फंघू हार हीये हलके । रतन जडत घूडा अक
 कोक्य । माजूबद बरियां सब क । हुसडी तीसडी चोसरमाछा
 बीच बीच हीरा दमक । करमें मुदडी । औदख जु दडी । सितपट
 बिदली रहफररी । घन घन भावक पुन प्रभाष । बीजे खर ।
 बि० ४ । रिचक मिमक धुपर बमकली । ठमक ठमक पगछी
 भरती मयय मयय कैर मफल । गज गति चाल चली जाती ।
 बदन दीपाती मन ललचाती । मदन दीपनी मदमाती । खदख
 रख रख नेत्रांमें । कामीकी छाती घरराती । सांगोपांग सरग
 चोयानी । मुख आगे ठाडी अमरी घन० ५ । लटक लटक
 करती बडु लटका । मुलक मुलक मुखडो मोटे । मधुर मधुर
 बोले मन गमती । प्रातमसयी नेह छोडे । खडी खडी कपड़ी
 अगहरी । ब्योत कठख तुमरी छाती । हुकम कनो तो सेठ
 बिसरामो । नदीप्र पाखी घर जाती । आट न सोलो मुखे न
 बोली । करकपा कनकसयरी । घन ६ । हम कतलाती ।
 कंध रीजाती । हे बर हीये हुलसाइ । बिज खर कहे कम
 नही मज हे सु दर तु किम आइ । जाव जाव मैं कितन पखरा
 त्याग कोया मन डिडवाइ । तीन दिवस तो दूर रहो तुम । पीछेतें
 आखी जाइ । टूटी आस मह निरासा । अब क्य सार करे हमरी ।
 घन ७ । बिलख बदन देखी करी को । कतलावे मीठी बाखी
 । दिसको दर्द कहे हम सेजी । हे सु दर किम कुमलाखी । जाव
 बीर मैं सुफल पखरो सीलपत लीयो हित आखी । अकतो मारे हुआ

सर्वथा । तुम परणो बीजी साणी । सेठ कहे सांभल सुलक्षणी । तुम
 सरखी मिल गह नारी । तो कुंण आपद लेवे गलामें । समतामे
 सुख है भारी । भली विचारी कर एक तारी । तरी जास्यां दोन्युं
 भवरी । धन. ८ । छानी बात कठालग रहसी । प्रगट हुवा होवे
 हांसी । साध सतीने देसी परीसो । मात पिता बहु दुख करसी ।
 कथ कहे तुं सुणए कामण । मन वच काया बस राखो । धर्म
 ध्यान कर काल गमास्या । अपण मुख सुं मत भाखो । एकण
 सेज्या सील पालस्या । तप जप कर देइ दमस्या । प्रगट हुवासुं
 संजम लेस्या । करणी कर भव जल तिरस्यां । सेठ सेठाणी
 एकमतो कर । ग्यान पढण लागी लिवरी । ध. ६ । जिनदास श्रावक
 सुपनामें । निग दोषण ले अन पाणी । सैंस चोरासी महाश्रमण
 मुनी । प्रतिलाभ्या उत्तम जाणी । जागे तो काइ एक न दीसे ।
 उत्तम फल बीसवा बीसे । बीमल केवली तुरत पधार्या । पुछे कर
 नीचो सीस । भाखो स्वामी अंतर जामी । बुधी निरमल है तुमरी
 ध० १० । नगर कसु बी सेठ घनावा । बीजे कवर विजीया कवरी
 । बाल त्रिमचारी । बेउ नरनारी तुम मीलीया होसी जारी । सुण
 सुख पायो । तुरत सीधायो । कोसभी नगरी आयो । सेठ बुलायो
 नैन जीमायो । तुम सुतको दर्शन पायो । विस्मय थायो । कवर
 बुलायो करणी है इनकी जवरी । ध. ११ । सुण हो पुत्र देवो
 उत्तर । हमने खर नहीं कांइ । दीजे सिख्यां लेख दिख्यां । ह
 बधव ने या बाई । घरमेइ पालो । दोषण टालो । संजम कठण
 व्होत भाइ । नहीं मानो तो जोर नहीं मुज । हे अग्यां जिम सुख

पाइ । परखायां छाँ भीम उखर करने । पर छोड़यो बेटा मठरी ।
 प १२ । गुठ अराबे आतम साबे । तप अप खप करखी कीनी
 । सेठ सेठखी बड़ मर प्राणी । बोझामें मुगली खीनी । १६ स
 बासट फगवाय बड़ । सनीवार नोमी आखी । जेपुग्माए जडाव
 साखी । गाव उगम गुब वाखी । बार बार जिनराज परगमें ।
 बंदखा हे मस्तक नमरी प १३ ।

श्री मधीरजीरो लीख्यत

आबे कर लटकंतो । कनक पत्र महाराज । बडियां अटकंतो
 । ए बेसी । म्हा विदेहमें विराज । प्रभूजी हु इश मरत मोम्हारोरे
 । मर दुख बारा । मुज तारोजी कियानिबस्यामी । १ । भांकडी
 । सैधु माखस कोप न दीसे । ज्वाबे तुम समाचारोरे । म० २ ।
 मन मारो वसन । बिबडो डुलस । देखत तुम बीदारोरे । म
 ३ । सेबक खाखीने सनमुख राखो । सफस हुबे अक्तागेरे । म
 ४ । कहा कळ मै पर नहीं पाइ । पर पिन उडोय न आवेरे । म
 ५ । देव निष्पावर मित्री न दीस । सो तुम माग दीखावेरे । म
 ६ । म्हर करी मुअ मरख मीटानो जनम करा नही आवे २ । म
 ७ । सेजेजसहबमुख सागर । दोन्यू दुख मिट आवेर । म
 ७ । अठमें नाखी ने केवल ग्यानी । नही इश दुखमी आरोरे ।
 म ६ । बीसुइ बीसम रपाजी म्हा विदेहमें । एक दोय अठ
 पदारोरे । म १ । दूर रहु मारो दिस नहीं लागे । राखीजे
 निज सामेरे । म ११ । पाकर होय रहस्य चरखा में न्यो मर
 मर दुख मागेरे । म १२ । किरपा कीसे ने दरसख दीजे ।

मन बंछत पूरीजेरे । भ. १३ । इतनी गरज अरज में कीनी ।
 मायत विरद धरीजेरे । भ. १४ । सेवा चाउं न किण विध आउं
 निस दिन तुम गुण गाउंरे । भ. १५ । प्हो उठीने वे कर जोडी
 । चरणा सीस नमाउंरे । भ. १६ । कर्म कलेसी करत वखेरा । सो
 तुंम दूर हटागोरे । भ. १७ । समरथ सायब साय करीने । पुदगल
 फंद मीटावोरे । भ. १८ । समत १६ स ने म्हा महीने । दूजन
 पख उजगालोरे । भ. १९ । जेपूरमांय जडाव कहत हे । बीनतडी
 अवधारोरे । भ. २० ।

आलूणकी ढाल लीख्यते

देसी जवुजीरा तावनरी छे । हो नाथजी पाप आलेउं आपरा
 । केइ भातरा । दिन रातरा । उंलालो । किया पच इंदी बीणास ।
 मारचा गल देइ पास । घणा खाया मदमास । दीनानाथनी ।
 सुणो वातजी । जोड हाथजी । आकडी । १ । हो नाथजी । लुट्यां
 छ कायरा प्राणने । केइ जाणने । केइ अजाणने । उ० नहीं जाणी
 परपीडा । चाप्यां कंथवा ने कीडा । चाब्यां पाना हदा बीडा ।
 दी० २ । हो बनामपती तीन जातेरी । केइ मांतरी । छमकी हाथेरी
 । उ० छेद्यां पत्र फल फूले । सेक्यां गाजर कद मूले । खाया भरी
 भरी लूणे । दी० ३ । हो० आचार कीना हाथसुं । चीरचां दातसुं
 । गणी खातसुं । उ० माय गान्या है मुसाला । खाया भरी भरी
 प्याला । आया उलणयाका जाला । दी० ४ । हो० पाणी अलु-
 च्या तलावरा । कूवा वावरा । नदी नावरा । उ० फोडी सरव-
 रीयारी पाल । तोडी तरवरीयारी ढाल । वरफ घडा दीयागाल ।

दी ५ । हो० अरु आर्जसारा जेहीया । भर भर मेहीया ।
उना ठंडा मेहीया । उ० अरु अनरु दीया होस । कीनी
अरु अरु गोस । मांए मांही मैसरोल । दी० ६ । हो०
मावसु पुत्र बीझोइया । पखा रोइया । दूधा दूइया । उ० कोस्या
नानहीया सा बास । प्रपेट पाही म्हास । तोड्या पंखीद्वारा मास ।
दी० ७ । हो० अ० माझने माहीया । रोखी राखीया रस्ते
नाखीया । उ० तडके माचा दीया मेल । मांए उना पाखी ठेल ।
आगे होसी पखी हेल । दी० ८ । हो० सीयासु करी खीरा
मरी । बोडे करी । उ० मांए पडपड मरीया बीव । पाप बीया
मस दीव । कीनी नरकारी नीव । दी० ९ । हो० उनाले बाव
बीझोपीया । कुल बीछनीया । बल मिचावीया । उ० कीनी
बागामांए बोट । लाया बूरमा ने रोए । बांही पास वखी पोए ।
दी० १० । हो० चोमासे हल हाखीया । बेस मूला राखीया ।
मर्या आपस्या । उ० फोड्या बसी कथा के । मर्या सांप
सप छेरे । दया नहीं आखी डेट । दी० ११ । हो० जुना नवा
कर बेचीया । सुलीया सखीया । नही सोपीया । उ० अरु बोया
लीया पीसे । इण्या मरी दसपीसे । आगे रोसी देह खीसे । दी
१२ । हो० दूध दर धाज्जालेना । सरबत दस्तेना । केरी
पाकना । उ० बलि गीरत न तेले । दीया उगाडा मेले । कीड्या
आए रेला पेले । दी० १३ । हो० कुद अण्ड छलता किया । अने
राखीया । नही माखीया । नही माखीया । उ० सुए पोले गखी
मुठ । पाडा पाडे लीया मुट । अत्र मत्र मारी मुठ । दी० १४ ।
हो० परनारी घन थोरीया । खेती होरीया । गाइ होरीया । उ०

देख्यां तमासा नेती जे ताल्यां पीटी होड हीजे । घाल्यां गाइ घणी
रीजे । दी० १५ । हो० अगण वाद गुरां तणा । बोल्यां गणा
। असुखा वेणा । उ० दुख दीया मे अग्यानी । निंदा कीनी छानी
छानी । नही धाम्यो अन पाणी । दी० १७ । हो. भोजन मली,
मली भांतरा । आदी रातरा । खावा सातरा । उ० पीया अण छाण्यां
पाणी । मन कुरणा नहीं आणी । पर पीडा न पीछाणी । दी०
१७ । हो. सासु सोरु सुवासणी । पाडोसण मथी । संताड घणी ।
उ० मुख बोली माठी घाल । केड दिया कूडा आल । तपसी रोगी
घुडा बाल । ज्यारी नैरुरी संभाल । दी० १८ । हो. शंशय कीया
में मोटका । कोइ छोटका । हुना खोटका । उ० रुगी छाने राख्यां
पाप । सो तो देख रया आप । मारे थेड माय बाप । दी० १९ ।
हो. स्त्रीसुं भांता पडानीया । गरव गलावीया । जीव जलावीया ।
उ० मारी जूने फोडी लीख । देठो पापीरे नजीक । नहीं मानी
गरु सीख । दी० २० । हो. थापण राखी पारकी । केड हजारेकी
। साउकारेकी । उ० देता कीया सीट पिट । माग्यां तुरत गया
नट । लीया सामूलाइ गिट । दी. २१ । हो. तप जप सजम
सीलगी । देता दानरी । भणता ग्यानरी । उ०. दीनी मोटी
अंतराय । तेतो भुगती नहीं जाय । पडियो करसी हाय हाय ।
दी. २२ । हो. मात पिता गुरु देवा तणो । अग्नीनेपणो । कीयो
घणो । उ०. बसीयो चोरासीरेमांण । ज्यांसु कीयो वेर भाव । खमो
खमो चित चाव । दी. २३ । हो. सार करीने संमालज्यो । मती
विसारज्यो । पार उतारज्यो । उ० समव ओगणीसैं वासठ । भांकी

मती फरो हट । इसण दीन्यो अवे भट । दी २४ । हो भासे-
क्या हम कीजीए । मिछयां दुफडं कीनीए । करम कीजीए । ठं
अपुरमांय बहाव । आशी उमल भाव । दास कीनी घर थाव ।
दी २४ ।

धन्नाजिरी लावणी लीख्यते

राग । गोरी ठो बाली सासरे । तुम कभीतो फिर आना ।
कभी तो कि आता । देसी इश्कमें मीसली छे । बाद भी अरिहंत
सिब सरब साधु । सिब मैं नमन करु निज सीस भावसे बांधू ।
इश्क बंधू दीपमें । नगरी का कैदी सोचे हो । नगरी सिहां म्हा
नामे । मुबारक बाह होमे । एक धन्नानामे । पुत्र रत्न जिय आयो
रत्न । प्रहता है पूरी बतीस । कोड भरमायो । दिसकर दीपे
ससि जिम सुरत सोमागी हो । सु । घन धन्नाजी महाराज बडा
बैरगी । १ । आंकाजी । ज्यारे म्हास बयालीस मोम । श्रीगमिग
जोती । श्री बसा बाली बरोख । भोष लटकता मोती । सुख
लैखी सुदबतीसे परबाव । नारी परयाह बहु दत हाथजो । धन
धन लीकमी ब्याव । ज्यारे सेज सकोमल । बंधवे चतुराह । पखी
सुख बिलसे धन्ना । दोगंध कसुर नार । कहु बोगलयो बिसवार
। इसा अब आगी । इसा धत २ । लीयो जोवन बयमें बोग ।
मोग तज दीनो । मो महावीर समीपे । पंच म्हा बरत लीनो ।
मुनी आव बीब छप भगत । अफिगरो लीनो । अवि निर पाथीमें
धन्न पाल । पारयो कीनो । ज्यो कंकर करदी बह । नेप तज
दीनो । मेह कर तप अप कावयो सार । मरखसे कीनी । एक मन

वच काया । सुरत मुगतसे लागी । मुग. धन. ३ । मुनी भएयां
 इग्यारे अंग सग थेवरने । संग थेवरने । संग, ए सह परीसासुर
 । मार निज मनने । सय कितोय नान मद लोभ । कपट डिढ
 समगत समजमे सील । सुधारस पीनो । श्री वीर संघाये । उगार
 वीहार करंता । वीहार घणा घणा गिराम नगरपुर । पाटणमें
 मिचरंता । रया गजगरीने वाग । अनुग्या मार्गी । अनुग्या । धन.
 ४ । जन गड नधाड । सेणक मन आणंदा । मन. बहु हरक घरीने
 । भेटयां नीर जिणरा । राय सुणी देमना पूछे । सीस नमाइ ।
 सीस नगला नतनमें । कुंड इधक मुनी थाइ । जीन भाखे सेणक
 साध सिरामण सारा । सिरा. पिण रजमांएतज । धन धन्नो
 अणगारा । ऊहो कारण सामी । सुण वानी रुच जागी । इच्छा. धन.
 ५ । नाखे अन हाणी । एवो जाणी काग कुता नही वंछे । लेवे
 हित आणी । जीत्या इद्री पचे । सुण समरण राजा । मुनी गुण-
 ताजा । धना मुनापे जावे । मुनी. देइ प्रदिखणा । लुल सीस
 नमावे । तुम धन हो स्वामी । अंतर जामी । गुणरो पार न पावे
 हो । पाग प्रणाम कराने । आया जिण दीस जावे । द्रसण अवि-
 लाखे । फिर फिर जाके । जैन धर्मरा रागी । धर्मनो. । धन. ६ ।
 नय मडना मारे । मास सथारे । स्वाग्थ सिध अवतारो हो । लीयो.
 चय जामी मुगते । खेव विदेहमे जारो । १६ सें ६२ तिथ तेरने ।
 म्हा महीना माहो । महीना । आ करी लावणी । जेपुर शहर
 सवाड । जडाव कहे जिनराज लाज हे तुमने । लाज. अब वेगी
 कीज्यो । मार तागज्यो हमने । अछती वंछे छती रिध तुम त्यागी
 हो । रिध. ध. । ७ ।

जबूजीको सत्त ढाल्यो लीरूपते

नमस्कार नव पद मणी । होत्रो उगति माख । कमा पयना
साखसु । करस्य सील वलाख । १ । पाप्मापर भीरीरना ।
भी सुपरम गखचार । तेहना सिप्य दुषा दीप्ता । भी वंङ्ग भख-
गार । २ । परम केवली मर्तमें । इख बोझमी अठ । इशमें संक
छे नहीं । माख गया भगवंत । ३ । पाख बिरमचारी परबने ।
त्याग दीवी प्रमात । कुटम सह प्रतबोचने । सीयो आपनी साय
। ४ । सांमलज्यो सहु को समा । बिकषा आलस छोड । बिरला
होसी अगतमें । अंबूरी बोड । ५ ।

ढाल पहेली

देसी सीलबंतीराणे । अंबुदीपरा मरतमें । देस भगव सुखकर
। मनीषख राजगरह अति दीप्सो । देवलाठ अलुहार । म्भी
सुखन्योजी पीरतमुषावेखा । आकषी । १ । बाग वगीचा
बाबडी । गडमिड बाजार । म सेठ बमें सन्यापती । छीवमीरो
अवतार । म सु । २ । रीखसुव एक सठ छे । सोनैया किनमें
कोड । म भजनादिक रिष सोमती । और नहीं ठख बोड ।
म. सु ३ । सेठाखी छे चारखी । सुती सेत्र मोकार । म सुपनो
पूछे मरतारने । होसी पुत्र उदार । फल मडख कुस दीबडो ।
सुबने हरक अपार । सुद्र । सु ४ । दोपख टासे गरमना ।
दोती दान रिचार । म पूर मासे अन्मीयो । अखे देव कुषार ।
म सु ५ । बम म्हीकर मांडीयो । खरप्यो जन अपार । म
कुप सहुनी साखस । संङ्ग नाम कुषार । म सु ७ । बान्त

ख्याल पुनवतना । कहेता न आवे पार । भ. कला च्होत्र पुत्पनी
। सीख थयो हु सीयार । भ. मु. ८ । आठ सगायां सांवठी । देसी
सरीखी जोड । भ. कीनी म्होरत जोयने । पूरे मनरा कोड । भ.
मुण. ६ ।

ढाल दूजी

देसी पनजी भूडे योल । घरम भाभ चढ मुधर्म स्वामी । राज-
गिरीने फरसेरे । घर घर मांए रंग वदाड । हिवडो हरसरे ।
आज रंग वरसेरे । आ भारा सवगुरुजीरा दरसण करसारे
। आंरणी । १ । बहु नरनारी । सज सिणावारी । होडां होडी
जावेरे । मुण जवुजी आणंद पायो । मन उमावेरे । आ. २ ।
मात पिताने पूछ करजी दरसन करवा आवेरे । हाथ जोड गुण-
गिराम करी । निज मीस नमावेरे । आ. ३ । धनणा करने
सनमुख बैठा । जुडी प्रखदा भारीरे । साध साधगी श्रावक श्रावकां
खुली केसर प्यागीरे । आ ४ । पाट वीराजे धन जीम वाजे ।
वाणी इमरत परनरे । स्वात वृद्ध जीम सारी पुरखदा । श्रवणे
फरसेरे । आ ५ । भिन भिन दे उपदेस मुनीसर । दुर्लभ नर
भय पायोरे । तप जप परची लागो ले न्यो । अवसर आयोरे ।
आ. ६ । दन गोलरो जोग माल्यो है करणी हो सो कर जारे ।
दान शील तप भाय भगत कर पार उतर भरे । आ. ७ । तन
धन जोयन आउख छीजे । मूरखने नहीं सुजेरे । पुदगल ठंग
पतंग रंग ज्यू । को गीरला वूजे रे । आ. ८ । माता पिता सुत
वेन भारज्या । सुवारथसु भय प्यागीरे । चिन भत्तलग कोड वात

करे सो । सागे खारी । आ ६ । पाव पसकरी खबर नहीं ।
 हु सीपार हुबे सो आगो । मोह निद्रामें गाफल मत रहो आप
 सतगुरु सतगोरे । आ १० । आधी रातरा पुत्र आयो । हरक
 बधावा गावेरे । फरर मई जब गुजर गया । क्या सुपना आयारे
 । आ० ११ । इत्यादिक उपदेश सुनीने । घर हर मन कपावेरे ।
 बनखा जिह्वा हीसुधी आया । उख दिस आवेरे । आ १२ ।
 धरतां हरबाजो पडियो । मित्री इव गयो डेटर । अइविच सु
 पाछा फिर आया । बाप सत गुरु मेटेरे । आ० किरपा कीजे
 खरबी दीसे । बरत करानो चौबोरे । मित्री मरख अजाबक पास्यो
 । हे जग घोषोरे । आ १४ । बन हो स्यामी । अवरजामी ।
 कष्टी कमरी फाँसी रे । ममस्कर कर परहु आया । बदन
 उडासी रे आ १५ ।

दोहा । मरख सफ्यो मित्री तथो । कह माताजी एम ।
 पुन्याइ बहक्यतथी । हू आयो कुसल एम । १ । पावे हरख
 बधावखा । बाँटो गुल मर बास । मन्म मोक्षव कीजीए । बरत्पा
 मंगल बार । २ । ओलव कडो किय करसे । खिख खिख छीजे
 आव । समे समे मरखो कयो । ग्यामी मीया माव । ३ । उप
 अप संजम मीलनी । खिख एक सफली बाप । काल बनवो बह
 गयो । आरम प्रगरा माँए । ४ । बन साणु बन साजरी । बन
 अरु सैन धर्म । और सहु अंजालने । छोडी मिथ्या धर्म । ५ ।

ढाल त्रीजी

देसी बेरागी थयो मारो बामख असो पीरोरे । हे मात्र
 सरम सत छे रे । पीर नपन प्रमाख । पिख आपखबी किम

निमेरे लग रह घर ले तांगोरे । बेरागी थयो मारो जायो जंवू
 कवारोरे । ते किम राखीए । प्यारो प्राण आधारोरे । वे. १ ।
 आंकणी । कुण घरको कुण पारकोरे । सुतलवकी मनवार । पुत्र
 मिल्लण मिनी मग्गण । थारएकण सातोरे । वे. २ । इम सुणता
 सका पडीरे । डउ डउ भर गया नेण । हे जाया किम बोलतोरे ।
 आज ओपरा नेणरे । वे. ३ । भवसागर में भटकतारे । मिल गया
 सुद्रमसेण । वचन अपूरन साभल्या रे । खुल गया अंतर नेणोरे ।
 वे. ४ । सुणवो ते तो मत छे रे । करवो अवसर देख । सुंजाणे
 तूं नानड्यारे । गेलो आण विवेकोरे । वे. ५ । जाणु छुं सही
 मातजीरे । मरणो पग पग लार । नहीं जाणु किण धानकेरे । किण
 बेला किण नारोरे । वे. ६ । सगपण सहु रांसारनारे । मीन्या
 अनती जीनार । धर्म मामग्री दोयलीरे । दुलव ए आचारोरे । वे.
 ७ । हित बछो ज्यो पुत्रनोरे । द्यो सजमरोजी साज । काल तके
 सिर उपरेरे । ज्यु ज्यु तीतर उपर नाजोरे । वे. ८ । चित
 चमय्यो ठमव्यो हीयोरे । आजनिहेजोरपूत । जाणुं किण भरमा-
 वीयोरे । किम रहसी घर सुतोरे । वे. ९ । खयर नही छे आज-
 रीरे । कुण करे कालगी वात । करणी नासी आपरीरे । कुण
 वेटो कुण मातरे । वे. १० । इम सुणतां धसको पडयोरे । धरणी
 ठली ततकाल । जागीज्यो जाणसीरे । दोरी पेटनी भालोरे । वे.
 ११ । बाल्यो मीतल वायरोरे । चेतनता थइ माए । कां सिरजी
 नही नभटीरे । बिलख वदन बिल लायोरे । वे. १२ । धीरज
 राखो मातजीरे ग्यानी वचन वीचार । मरता जाता नै रहेरे ।

हुन्ना होय हजारेरे । ब १३ । बोली टाकी सायनेर । अमरख
आलीरे रीस । हिरगत्र आवा हु नहीरे परयो बीसवा बीसोर । ब
१४ । पुत्र एक अन्मा पछेरे । करबो थारी बीदाय । पोतो गो
खीसायनेरे । बहुए सगाबो पायोरे । ब १५ ।

दोहा । हे माता प्रसायने कमी पुरस्यो हु स । बोयो मत म
आइरो । आव बीव करसु स । १ । तो पिण मनरी काडवा । सबने
दीयो अताप । ध्यात रचाठ पुत्रनो । ज्यो आवे थारी दाप । २ ।
नित्र २ ता मशी कडे । पुत्रा पत्रसु भाष । अंबूजी पिन ओर
। प्रसवारा पछछाख । ३ । मात पीता बहु हरसु । ध्याप
कीयो तिव्व बार । कोइ नन्याशु डायजो । मरिया ब्रव मंडार ।
४ । प्रय पदारयां पदमण्यां । माता करती कोड । अलीग्रज्यो
सासुजी । अन गोप्यारी खोड । ५ । पीसंग पवरया सांबट्ट ।
चउदिम सटके लुम । वल ध्यान सगायने । बीगी बीम घर मून
। ७ ।

ढाल चौथी

हेमी मोल्पारी गजगे मूली । मिछकर आट्ट नारी । ० तो
मज सोले सिखगारी । गिफम ग्मीमछी आइ । अरुजी नही बक-
साइ । सुखा रडीयासा । मह बोसोनी बचन रसासा । जांझी
। १ । मामोए नही भासे । मव ठपी नीसाया नाके । आइ बैसी
नही आइ । इम ठमी मनने निमगइ । सु० । २ । कोइ गीत मात
नही राखी । आइ प्रथम कउछमे माखी । तो मोजनरीझइ आस ।
सबकीनी आप निरास । सु० ३ । हुस बखी छे हममे । सो रै

गइ मनकी मनमें । चुक नही पिया थारी । करणीमें कसर हमारी
सुं ४ । कोइ सार न पूझी पाती । पिया कठण वोहोत तुम छाती
। चुक होवे तो बतायो । विन कारण किम कलपावो । सुं० ५ ।
गांठ हीयारी खोलो । म्हा सुं हमकर मुखडे वोलो । मैउवी आप
हजुरो । अब आस हीयारी पूरो । सं० ६ । बोल्या विन नहीं
सरशे । बतलाया जीवडो त्रसे । हुकम करो तो वेठां । अब कांइ
मरजी थारी सेठां । सुं ७ । आद्र नही सतकारो । उतमरो नहीं
आचारो । में जरसीसु नहीं आया । थे पकड हाथने लाया । सुं.
८ । त्यागे सो किम परणे । मैतो वेठस्यां थारे घरणे । में लागी
थारी लारे । परणोमो पार उतारे । सु० ९ । म्हाने आडाने किम
प्रणी । वारे हिवडे कपट कतरणी जोमीडे दियो वीसवामो । घर
हाण लोकमे हामो । सु० १० । मत कगे खाचा ताणी । पतली
छाछ खमे नहीं पाणी । दातास सुम भलेरो । वेतो उत्तर देवे
सवेरो । सु० ११ ।

दोहा । उत्तर पेलो जाणज्यो । मुखड न बोले वेण । मामोड
जाके नही । दूजो उतर पीछाण । १ । इम सुणता सासे पढो ।
धारी न रही वीर । गोप २ अंग सालीवो । वचन रुवीयो तीर ।
२ । हे सुख लेणी मुदरी । भोग रोग मम जान । ग्यानी देवा
माखीयो । विष मीलीयो पकवान । ३ । देवतणा सुख भोगव्या
जीव अनती पार । जिणमु दुलब जाणीए । मानवरो अवतार । ४ ।
त्याग्या विन तिरपन नही । निसचे ग्यानी वचन । त्रिणोवेतो
त्वामदो । डिढ राखो निज मन । ५ ।

ढाल पाचमी

दसी घन घन साधुजी सहे परीसा । मीलफर सारी न्यारी
न्यारी । अदसुत कथा पञ्चायमी । पितमन निलमावा कथे ।
कहेतु जुगत जुगायमी । १ । घन घन अणु फर बेरागी । घन
न्यारी अस्तमी । कनकचल सम मन पञ्चायमी । कोष्ट पाये
वाप हजारजी । घन आ० २ । के बाकी कोष्ट नही रह बाकी ।
कहा जोगी हामजी । कयर वे सो तुरत डिग जाव । पिब सुरा
खंडु स्यामजी । ३ । कइसी दे जो आर कहीज । बोलो सुप्रन्यायजी
। ह हतु कोष्ट कहे तो । मारी न आवे हस्यजी । प० ४ ।
मैसिब कहु कोइ कथा अनरी । न्यो सुशो कित जुगायमी
। सगली सनमुख होय फर जोडी । कइतइत बचन पुर
मायजी । प ५ । हेत दिसत्य कइ जुगत करीने
करय न्याय मीलपायजी । रमक कथा ललीतंग ह्वरनी सुष
मन कयायजी । ॥ ६ । कइतां कइसी गर बहु रेखी
कर विधानो म्हेरजी । सुषट पांचसे सारे न्यायो । आयो प्रमो
पोरजी । प ७ । घनरी पेनी बांकी सेठी । मेली मावा मासजी ।
बंबू देखी गर सब सेठी । पग बिपीया कइसलजी । प० ८ ।
पठदिस पेस आर बं देखे । नटा बज संतजी । न्यो सुन फा ठठे
घरतीसु । बाप पुछु निरंतरजी । प ९ । इम कइतां कइके
पग छुट । पडियो माल मंगरजी । आठुनार थर निद्रा बस ।
बागे बंबू ह्वरजी । प १० ।

दोहा । हस्य मोड प्रमो कहे । सामल किरपनाय । पिघा
बहरी आपरी । मे देखी सावत । १ । विन कृपी पाला सुते

। भगत निद्रा थाय । दौय लेह एक थोभणी । दीजे करी पसाय
 । २ । रे भोला समजे नही । विद्या चलावे कूण । ज्यारे धनरी
 चायना । ते करसी टामण दुंण । ३ । विद्या सब संसारनी । भावे
 जाणम जाण । साचा विद्या धरमरी । पावे पढ निरवाण । ४ ।
 नारी नागर सारखी । प्रगरो अनरथ मूल । दिन उगे गृह त्यागसुं
 । देदो त्यां परधुल । ५ । हे सामी किम छोडस्यो । इचरज वाली
 वात । ए घर कंचन कामणी । देव भवन साक्षात । ६ । मात
 पिता प्रवारनी । कुण करसी संमाल । भुर भुरने मरजावसी । दोरी
 मोहनी भाल । ७ ।

ढाल छठी

देसी डफकी छे । मातपीता सुन वेन भारज्यां । मुतलव सब
 लागे पृठ रे । जग भूटो हारे जग० । जाय जनम खूटो । ज० ।
 आकणी । १ । दिन मुतलव कोइ ढीग नहीं वेठे । दिसोदीस जावे
 उठोरे । ज० २ । छिन २ उमर जावेरे छीजती । भजन करी
 भरलो उंठोरे । ज० ३ । नारी सारी जव लग प्यारी धन कमाय
 भरे मूठोरे । ज० ४ । सुखमें सीर पडरे सजनको । दुखमे दूर
 रहे रुठोरे । ज० ५ । भरघारे चरसने हरक करजेले । रीतो
 कर पटके पूंठोरे । ज० ६ । तन धन जोवन पलकमें पलटे । तप
 जप कर लावो लुंठोरे । ज० ७ । जमका दूत पकड ले जासी ।
 किणरे मरोसे गाफल वेठोरे । ज० ८ । धन धन करतो फिरे रे
 भटकतो । घाड धरे धरतीमे सेठो रे । ज० ९ । सुख चावो तो
 सजम लेलो । चोरासीरो तातो टूटोरे । ज० १० । इत्यादिक

उपदेस सुधीने । प्रमो सुप्रद सहस्र ठठोर । अ० ११ । आप गठ
इम सब तुम कला । राखो परब सरब पूठोर । अ १२ ।

दोहा । इम कबता आहु मखी । बोली टटकी छाय । परबन
छुटे पापीया । बोसता न लुझाय । १ । चोर अन्यासारे सिरे ।
न्याय मरे नहीं भीख । आव न जाये सासरे । दे ओरोको सीख
। २ । सात पांच बिसबासन । मूसा मार मझर । मण्णबीरो
नाम ले । म्याठ २ पूकर । ३ । बण्णबी साची कही । मैं पापी
निरवार । दखा किश रिष राखस्यो । मन मोवन मरहार । ४ ।
प्रबोधी बाला सबी । और पांचसे चोर । सांसु सुसरा आइ दे ।
मल सिताबी और । ५ ।

ढाल सातमी

देसी मुर २ कायर को दिबहो परे हरेबी । आंझबी । मोदी
बखाइ एक सिबिआबी । बछ छे अंघू कमारबी । बछ बिसेखे
ज्यांरी कामण्यांजी । मल पिता परबतरबी । कु. १ । बाबा तो
बाबा सरइ सुराबबाबी । कायर हीयाग वे दिलगीरबी । कट्य
परीसा सरस होयसाबी । केतजू कोमल सरीरबी । कु. २ ।
आवे अमस्ता बीम नीसरयांजी । आपा छे मश बमारबी । बाबक
देवे बिरदाजप्याबी । चरंजीबो अंघू कमारबी । कु. ३ । चढ चढ
पोला बोवे कामण्यांजी । मर्के आख्यामें मूडा गासबी । फसे
परबीने सार नीसरयांजी । आहु सुहर सुप्रमालबी । कु. ४ ।
कोइ एक एक नरनारी सुखसु कहेबी । धन २ अंघूकमारबी । बास
बिरमचारी नारी परिहरबी । सफल करे वा अमृतारबी । कु. ५ ।

कोइ एक मूरख माधो धुणनेजी । इणपर मोले अयाणजी । अन
 धन लीछमी वरमे छे घणीजी । नही दे प्रमेसर याने साणजी
 । जु. ६ । मोटे मंडाणे आया वागमेंजी । भेटा श्री गणधरजीरा
 पायजी । दिख्यां दीरागो डील करो मतीजी । सिण एक लासीणी
 सी जायजी जु. ७ । धन धन जंबु कुवारनेजी । चारीत्र लीयो घणी
 चुपसुंजी । पांचसें सताइस जणा लाग्नी धन धन कहे स
 चोरनेजी । तार दीयो प्रवारजी । ध० ८ । नुमती अरावे गुपती
 घोषवेजी । संजम सतरे प्रकारजी । सुत्र सीख्यां पिने अरादनेजी ।
 पूछीने कीया निरधारजी । ध० ९ । वांचणी जवूस्यामनीजी ।
 आजे ताइ चली जायजी । उपगार कीयो भव जीपनेजी । हलुकर-
 मीरी आवे दायजी । ध० १० । सोला वरमारा संजम आदरयोजी
 । करणी करीने काडयो सारजी चरम सरीरी । चरम केवलीजी ।
 पुथ्या छे मुगत मजारजी । जु. ११ । पाट दीपायो श्री वीग्नोजी
 । तारयां घणा नरनारजी । चोथा आरामाए जनमीयाजी । पाचमे
 कीयो खेवो पारजी । भु. १२ । ढाल कथा ने चोपइ देखनेजी ।
 अलप कियो छे विमतारजी । संखा हुवे तो देखीएजी । जंबू पइने
 इदकारजी । १३ । जु. । न्यून अधिक जे मे कयोजी । हस्व दीर्घ
 अयाणजी । मिछामी दुकड तेहनोजी । ग्यानी वचन प्रमाणजी ।
 ध० १४ । समत १६ सें उर्स वासठेजी । होली चोमासी प्रमातजी
 । जेपुरमाए जडावजीरे । नित नित जोडे दोन्यू हाथजी
 । ध० १५ ।

कलस । जवु सामी । मुगत पामी । बंदु नामी । सीस ए ।
 इदक ओछो । कवि सोचो । गुनो करो वगसीस ए । गु० १ ।

आपछरख सिध कीनो । लीनो नहीं मुझ छारए । सेवक बिन दुख
सेव करसी । खोलो मगत दरबार ए । खो । २ । मेहु अपम
अनाथ प्रसूजी । जनम जनमको चोर ए । मम्यो बान् मव चरमाए
। अब आपो तुम ओर ए । अ० । ३ । पाप पुरो आस पुरो । सेवक
सरखे लीजीए । बार बार मेरी अरज ए । असे अमर पद दीजीए
अ ४ । आवस आवस फेर अगमें । कदय न पाठ दुखए । परब
हाग तुम सेव करसु । आपो अविचल मुखए । प्र ५ ।

दीवालीकी ढाल लीख्यते

देसी पीचअरीनी । बीस दीन मुगत गया अिनबरबी । सो
दिन अक बेमासीरे । ऐसी दयारी शीवासी । हे अिन कीमये
बासीरे । ए । आंकसी । १ । दान दीपक समगरी बासी ।
म्यान बोध ठप्रबासीरे । एसी । २ । सत सिनान सिखगार
सीछरो । दीप रुपे रसासीरे । ३ । तप पखान मरमअ मेवा ।
बीमो भर भर बासीरे । ए ४ । लिम्पासी खीबसी । बसअ
भरोअ । बैशारी राखो बासीरे । ए ५ । समरस अहे अकर
पेहो । समता करो पर नारीरे । ए ६ । संजम मरुत मीचपुरकी ।
अट करमने टासीरे । ए ७ । नीद निवार मार निअ मनने ।
फेरम्यो नबकरबासीरे । ए ८ । कदय अबाव बेपुरके माई ।
बरने मंगल मासीरे । ए ९ ।

पारसनाथजी की लावणी ली०

दमी । छोटख करबारी छे । कल अनता दुख सया मागअ
। सुखो प्रसूजी हो । सुखो मारा अहरनामी । अबमासु सयाए

न जाय । केतो सरणे राख्यो । म्हाराज सुं. म्हा. के मारा
मरण मीटाय । जी. । माग पारस प्रभु कर्म भमावे मोय तार ।
आंकणी । १ । नामी चाकर आपरो मा. । सु. मा. । छोडो
किम अ के लगाय । खाना जात गुलाम म्हाराज । सु. मारा.
मेढो मारी भय दुखदाय । जी. २ । चाकर चके चाकरी माराज
। सुं मा. ठाकर करे निरभाय । अगुण गुण कर लेखवो
। म्हा. सु. माग आप छो सरल मभाव । जी. ३ । कुण
सुणे किणने कहू माराज । सुं. मारा. कुण आगे करूं ए पुकार
। और नही तुम मारखो माराज । सुं. मा. दूंद लीयोरे संसार ।
जी. ४ । आम करी लीयो आमरो माराज । सु. मा. सरणे
आयागी राखो लाज । चर्ण ममीपे राख ल्यो माराज । सु. मा.
मीजे माग वलित काज । जी. ५ । मैं अपराधी अनादको माराज
। सु. मारा. देख ग्याछो जगदीश । तारक विरद वीचारने
माराज । सु. मारा अ तरजामी गुनो हे करो जगसीस । जी. ६ ।
१६ सें बरस बासुढे माराज । सु. मारा. म्हा वद नोमी गुरु वार
। जेपुरमाए जडावनी माराज । सु. मा. वीनतडी अवधार । जी.
मुक्त्यारा मैवामी ।

देसी । मतकर मान गुमान ए दिन सदा न रहेगे तियार म.
प्रभुजीवो पास । जीनेमर तुम गुण यनन अपार । उल लालो ।
मुर गुरु निज मुख स्मरनी गावे । तोइय न आवत पार । प्रभु.
। आंकणी । १ । कमट विडारण नागउवारण । समलायो नवकार
। धरण इ द्र पदमावनी दोन्यू । मानत तुम उपगार । प्र. २ । मैं

मठहीन दीन दुख पाउ । ममत् २ गयो इतर । दीन दयाल
दया कर मोये । पापी पार उगार । प्र ३ । पासे पापाखनाम तुम
प्रगट गो मोरी मुखइलार । प्रवरु तु रमेपस्वर पारस । मरो-
दपी गार उगार । म ४ । और न चाठ दरसण पाउ । घाठ तुम
दरबार । डुक मर म्हर को अलबेसर । दीन्यो निप्र इद्वार ।
प्र ५ । मन मंगल सित चंचल चोडा । दोडत फिरत उजाड ।
बेर पर न्याठ निप्र गुहमे । ठहरत नहीं हे सीगार । प्र० ६ ।
१६ में तेसठ तरसने । जेपुरमें बरसाल । तुम गुह माल बडल
ज्यत है । बह पल दीपक माल । प्र ७ ।

पार्सनायजी

देसी । देखो बहजी इश मोरीपारो खजी । मामलदख
पास बिसइजी । मां कोइ म्हर कोरीने सामो बांऊन्यो । को
हु हु प्रभुजी अबम अनाखजी । हु कोइ सरखे आयांरी खन्या
रखन्यो । १ । कोइ एक ध्यात्रे विरमा बीसन महेसजी । को
काइ मैतो बीकण्याठ प्रभु पासने । कां कोइ एक मागे अन फन
सीदमी पीरजी । कोइ कांइ अविचसरेक पदवी दीन्यो दासने
। २ । कोइ एक नाच गंगा जमना तीरजी । को मैतो बीकनाठ
निबजुख नीरमें । कोइ मारा मम २ संखित पापजी । को कोइ
खातोत्री ससास्या प्रभुजीरा सीरमें । ३ । कोइ एकदेरे प्रवत फरबवी
। को कोइ प्रभु विरान्या मसतकलोकरे । वारे मारे आत्म
पिडसजी । बा कांइ मोल्लारे भरमाखा पोये मोखरे । ४ । कोइ
एक चापे पाल पापाखजी । को कांइ जोत अरुपी आप विराजता

॥ थेछो प्रभुजी निरंजन निराकारजी । थे. कांड अखेनी अचल
सुख सासता । ५ । कोइ एक पूजे दीपक चमर दुलायजी । को०
मेतो जीक पूजू तीकरण जोगसु । कोड भावे जीक पूजू तीकरण ।
कोइ एक चोटे पान सुपारी फुलजी । कोड, कांड प्रभुजी निरागी
विपे भोगसु । ६ । कोड एक नाचे घुघरीया गमकायजी । को०
काइ-प्रभुजील लीन रहे निज ध्यानमें । कोड एक गावे ताल मजीरा
तानजी । को. कांड प्रभुजी प्रवीण पदारथ ग्यान मे । ७ । दृढत
२ मीलीयो साचो देवजी । हूं. भव २ जीक सेवा होज्यो आपरी
कांड भ. थेछो प्रभुजी जीवन प्राण आधारजी । थे. कांड लपटीजी
चरणामें करस्युं चाकरी । ८ । १६ स वरस ६३ साल रसालजी
। काड जेपुरमे कर जोड कहे जडावजी । थे छो प्रभुजी दीन
दयालजी । थे. काइ भव जलरेक ह्वत तारो नावजी । ९ ।

गोतमजीरो स्तवन ली०

चाल । नित नाम जपो श्रीनो केडो । वसुधुत पिता पृथ्वी
माता । ए तीनुंड सगा भिराता । पो उंठी नित पाए पडो । श्री
गोतमजीरो ध्यान धरो । १ । धर्मध्यान सुकल घ्यावो वली
समरणको लीजे लावो । आरत रुद्र दूर करो । श्री. २ चिंतामण
चींता चरे । अरु कलप त्रिज बंछीत पूरे । कामधेन पय पान करो
। श्री. ३ । मोन पोरसो घर आवे । विन मीखी विद्यां सिद्ध
थावे । देस विदेसा काड फीरो । श्री. ४ । सींघ सर्प सब भे जावे
। अरु चोर धाड अंधा थावे । चीन्ता आरत विघन हरो । श्री.
५ । दान मान राजा देवे । अरु न्यात जातमें जस लेवे । वैरी

हुसमन पाए पड़ो । श्री ६ । बिस प्याला इमरत यावे । बस रिंग
सोग पर नहीं आवे । सुत पिमाच नही सागे चेहो । श्री ७ ।
गुप्त इतना इश्र मय थावे । पछ सुखे सुखे सुगती आवे । ससार
समुद्र बगतिरो । श्री ८ । १६ सें तेसुट बरसे । सूर केपुरमाण
बडाव कड़े । भजन करी मंडार मरो । ९ ।

सोला सतीयारों स्तवन लीख्यते

रत्ना गोतम नाम अपोजी प्रभाते । सोला सती समरो सुख
दाइ । ज्यां घर आखंड रंग बधाइ । नांव लीयां नब रीद
सीध आव । मय मय संजीत पाप पुलावे । सो ।
आंखणी । १ । आखी सुद्र बोन्नु बाइ । बालपये सुख समकित
पाइ । लीपी अठरा रीलबजी सीखार् । पसीतथीरी पदवी पाइ ।
सो० २ । सीता कुया राजकुल नारी । प्रतबोप्पा रह नेम कुनारी ।
सावसें सखीयां संग लेइ सारी । संभम से खड गइ गीरनारी ।
पीर प्यसाइ सीबगत संमारी । सो० ३ । बनबवाला चेलण्या
राखी । सुत्रमें बिनरात्र बलाखी । बीर बिबंदनी आइ सिपखी ।
सुगत गइ कर ठचम करखी । सो ४ । कोसल्या सेवा प्रभातती
। पदमावती ओलाइबईती । बीर काइ बनमें तब पती । सील
प्रभावे सिब गइ मतर्नती । सो० ५ । सुलसां सुमत्रा सती बाखी ।
छावे सुख कुयाखी ताखी । बंधा पोत उपाइ मली परे । सील
प्रभावे खड सुर बाखी । सो ६ । मरगावती सती सोलमी बाखी ।
भाव सहत बंदो भव प्राखी । ओगखीसें तसठ म्हा महीने । केपुरे
माण बडाइ बलाखी । सो० ७ । पोइ ठठीने कोइ सीध नमावे ।

मन वञ्छीत सुख संपत पावे । जन्म जरा ने मरण मीटावे । पांचवी
गत तणा सुख पावे । सो० ८ । हुड होवे नै बल होसी । ज्यारा
नाव सूत्रमे जोसी । ग्यानी वदे सो मुनीए बखाणे । छदमस्त तो
विवहारथी जाणे । सो० ९ ।

देसी । जीला मारी भोटरो उदीयापुर मालेरे । नव घाटी
उलंगनरे । प्राणी । पायो नर भव सार । जोग लयो दस बोल-
नोरे । प्रा० सो एलो मत हार । चतुर नर चेत जा आछो अवसर
जावेरे । लाखां कोडां खरचतां । फिर पाछो न आवेरे । आंरणी
। १ । घर धंधारे कारणेरे । उठे आदी रात । सोच करे ससारनो
। कोइ नही है तीरणरी वात । च० २ । तन धन जोगन जाएछेरे
प्रा० जेम नदीरो पूर । पोट सीर पापनीरे । भूं मारी घर दूर ।
च० ३ । काचो कुंभ सीसी काचनीरे । प्राणी तिणरो धीम्यो
बीसवास । जतन करंतां जावसीरे । जंगल होसी त्रास । च० ४ ।
तेल जल्यो वाती बूजीरे । प्रा० काया में घोर अंधार । एरण
ठवको मीट गयो रे । प्रा० कहां गया बोलण हार । च० ५ ।
कुटम कवीलो पावणो रे । प्रा० मेलो मढीयो सराय । थित पाका
सब बीखरे । प्रा० जिम आयो जिम जाय । च० ६ । बूढा बडेरा
सब गयारे । प्रा० केइ गया छोटा बाल । देखताड ले चल्यां रे बेरी
। ऐसो कमाइ काल । च० ७ । धन माल धरीया रहारे । प्रा० रह
गया लेण न देण । हम जाणी धर्म कीजीए । आगे कोड नही
थारो सेण । च० ८ । ओगणीसें वरस तेसठरे । प्रा० जेपुर स्हर
मभार । सीख दीनी जडावजी । वसत पंचमी सुकरवार । च० ९ ।

देसी बीजारी । समग्र वे तो बाँकन्यु । बीवाजी । हारे बीवा
मव सल बाक्यो न जाय । कर्म गत बाँकडी । बीवाजी । क० ।
बाँकडी । १ । मासक वे तो राखसू बी हा बीवा मन बस
राख्यो न जाय । २ । साँकस्त व तोड न्यु । बी० हा० बीवा
त्रिसना मोडी न जाय । क. ३ । मोडो वे तो मोडसु । बी हा
बीवा । ममता मोडी न जाय । क० ४ । डोरी वे तो खेच न्यु
। बीवा हा बीवा० बीवा मवतिथ खेची न जाय । क० ५ ।
अन बन लीक्ष्मी बैछ दू । बी हा बीवा बापदा बैछी न जाय
। क० ६ । छोटो वे तो छोलदयु । बी० हा बीवा होत कटन्यो
न जाय । क० ७ । चालु वे तो गालदू । बी हा बीवा गरब
न गान्यो जाय । क० ८ । बाँदयो व तो छोलदयु । बी हा०
बीवा नह दूठा खोन्यो न जाय । क ९ । सेनो वे तो तोल
न्यु । बी हा बीवा न्हे लागो तोन्यो न जाय । क १० ।
हीरो वे तो प्रलम्पु । बी हा बीवा न्हे लागो तोन्यो न जाय
क० १० । हीरो वे तो प्रलम्पु । बी ११ । बीवा भम न प्रलो
जाय क० ११ । पाखी वे तो पाग न्यु । बी हा बीवा म्यालरो
वाग न पाय । क १२ । कस्यो केतो मनाय न्यु । बीवा०
हा बीवा भरता राख्या न जाय । क० १३ । लडीयो केतो
खमाय न्यु । बी हा. बीवा हंम ठठो नरहाय । क. १४ । पाव
सगे तो भूसीए । बी० हा० बीवा कू वचन सुण्या न जाय ।
क. १५ । पकळयो केतो छोडदू । बी० हा० बी हा बीवा
छलदयु छोडयो न जाय । क० १५ । बैरी केतो बीकन्यु । बी

हा. जीवा म्हो क्रम जीत्यो न जाए । १७ । सींघ सपने वसे करुं । जी. हा. जीवा आत्मा वस नही थाए । क. १८ । कागद वेतो वाचलुं । जी० हा० जीवा कर्म न वाच्या जाए । क० १९ । मुगत मीले तो जांचतु । जी. हा. जीवां और न आवे मारी दाए के. २० । पोस मशोनो तेठे । जी. हारे जडाव कहे जेपुरमांए । क. २१ । पदमप्रभुजीसुं वीनती । जी. हारे तुं तो वेगी कीजे साय । क. २२ ।

मुनीराजना गुण

दोहा । आद नमूं अरिहंतने । म्हा वीर जिनचंद । गुण करवा मुनीराजना । म्हो मन इदक आखंद । १ ।

देसी । हरीजीरो राख भरोसो भारी । ब्होत दीनाकी थी अवीलाखा । बाट जोता नरनारी । म्हर करी करुणानिध सागर । पूरी आस हमारी श्री जीरी सुरत लागे प्यारी । मुंद्रा मोवनगारी । म्हाराजारा द्रसणरी बलीयारी । में वारे ब्हार जाउं वारी । श्री जी. आंकणी । १ । बीचरत गिराम नगरपुर पाटण । ब्होत करो उपगारी । मालव देमपे कीम्पा विसेसन । जेपुर केम विसारी । श्री. २ । पाटे वीराजे छाजे घाजे । सींघ ज्युं शब्द उचारी । चरचा चिमकीत बीजरी चीउदीस । ग्यान घटा चढी भारी । म्हा. ३ । बाणी सुधारस इमरत धारा बरसे निरमल वारी । मीथ्या खार पुपे आत्मको । समअंकुर उगारी । ४ । ससि जीम सीतल वदन तिहारो । भविक चकोर निहारी । भरत अमीरस हीवडो मीचत । फूली पुरखदा सारी । श्री० ५ । सीतल ब्हर चली

समताप्री । तिसना तिरछा चुम्कारी । दिछ दातुरने प्रेम पपड़यो ।
 पिठ पिठ करते पुकारी । श्री० ६ । महिमा मोरनि होर फ्यत है
 । निरत रच्यो है भारी । म्हे भावो २ भावक सनमुख । सुख रर
 केसर क्यारी । श्री० ७ । भिन रितु बाइल बीअ भमके । गांघे
 पट्टा बढीकारी । अतसे भारी । शुभ तुम भारी । कहाँ लग कर
 बीसवारी । श्री ८ । पोसठ सास बडाव जेपुर में । केत एकम
 उझीयारी । सुख बासी हरकसी हीयामें । बडाव दख छवी भारी
 । म्हा ६ ।

साध बनणा लीख्यते

दोहा । सासब नायक समरीए । प्रियमान बीनचद । धर्म
 आचारब आद दे । बद् सरब मुखद । १ ।

देसी रासकी

आद नहु अरिहत्ने । सिध सकल गुण हुवा प्रसीध तो ।
 गुण छी सखी राजता । आचारजनमता नवे निधतो । १ । न्यां
 पुरसाने मारी बनखा । दोबो २ दीनमाँए शर हजार तो । मत्र २
 सरखोजी आपरो । और नही सुखे कोहर आचरतो । बन २
 मोट्य सुनीसर । २ । बोख हो पद उग्रकायजी । मत्र फी निब
 नहु बी सीसतो । अ गद्यमारा आद करी । मत्र ५ मशाबे ।
 गुण सोमे पचबीसतो । न्यां० ३ । साध सकल पद पंचमें ।
 दीप अहदने पनरेजी खेततो । गुण सतवस बीचरता । ब्रसख
 देखी ठरे सुख नेत्र तो । न्यां ४ । फेर नहु सरबे सोएने । ग्यान

दसण गुण साधे अपार तो । धर्म आचारज मांएरा । गुरणीजी
 संजम ग्यान दातार तो । ज्या. ५ । श्री श्रीमिंद्र आद दे । चव-
 दसे वावन नमुं गुणवार तो । अनंत चोडसी आगे थइ । जेहना
 केवली सरत्र अणगारतो । ज्यां० ६ । सासण श्री त्रिधमानरो ।
 नरत्यो छे वरते न वरतण हारतो । केइए मुनी मुगते गया । कं
 एक भव कर जावण हारतो । ज्या० ७ । चवदे पूरव धर कंउली
 । अवद नाणी मन प्रजव धारतो । थेवर थिर करी आत्मा । तप
 करी तिर गया भव दधी पारतो । ज्या० ८ । आद जिण्ड आदे
 करी एकसो पुत्र न पूत्रीजी दोवतो आट पाट श्री भरतना हस्तीरे
 होदे माताजी सीध होय तो । ज्या. ९ । कपील मुनी हुवा मोटका ।
 पांचसे भीलाने दीयो प्रमोदतो । नमीए नमाड निज आत्मा ।
 एक समे हुवा च्यारु प्रति बोधता । ज्यां० १० । गोतम तिर
 गया तीरपे सोलइ ओपमा सोभे मीरीकारतो । वउ सुरती च्यारु
 सीधमें । सारण वारण धारण हारतो । ज्या० ११ । पेसमे प्रणाम
 कीजीए । हरक धरी हरकेमीन पाए तो । चीत मुनीसर चीत
 धरुं । एकुं करे आद छउं मुनीराय तो । ज्या० १२ । आहेढे
 पर चढ आवीयो । संजेतीराय भेटया गुरु पाए तो । संजम लेड
 सुत्र भएया । एकले ब्यार कीयो मुनी राय तो । ज्या० १३ ।
 खत्री हो राय चरचा करी । डिड करे समक्रीत देड दिस्टंततो
 । जीन मारगमांए दीपता । कुण २ सत हुं वा महंत तो । ज्या.
 १४ । दसाणभदर बीर बंदता । मान गाल्यो सक इंद्र देवतो ।
 सजम लेइ सामा मडया । हाथ जोडी करे चरणारी सेवतो । ज्यां.

१५ । राय करकंड़ी आइ द । करख देखी मने घरघोरे बेरागतो । चक्री से दम झुगत गया । भरीयां मंडार रमख रीन त्यागतो ।
 न्यां १६ । आइइ करम खपाएने । आइइ राम लीयो सुख मोघतो । सोलह देसारे सायबो । राय उदइ मन घरयो संतोष-
 तो । न्यां १७ । सुगरीब नगर सुबाबयो । राज करे बसभद्र रायतो । मिरगावती फटखी । पुत्र बापो बहु आखद बायतो ।
 न्यां १८ । खोबननी मय बाबने । व्यावर्षियो देखी सरखीबी जोइतो । महलामें सुख भोगबे । दास दासी राख्यां पूरे मन कोइ तो ।
 न्यां १९ । एक दिन मख छे बालीयां । आबता दीअ क-
 क्यारा नाब तो । रुप देखी बिसम थया । आती बो समरख आखी पाइली बाबतो । न्यां २० । बिह पढोरे ससारने । राग छोडी मने घरयोरे बेराग तो । मात पीताभीसु बीनवे । अनुभव दीबीण । मज बडा भाग तो ।
 घ २१ । बाब जमाखी बीम नीसरग । मनम मरख दुख कटवा पाम तो । संभ्रम छे सुत्र मय्यां । तप कर पामीयो सीनपुर बास तो । न्यां २२ । सुनीए अनाबीखी मैटीया । सेवकराय तिहा समझित पार तो । बबुडी हुवा करम कदली । पाछे सु जड गया मोख दवारतो । न्यां २३ । और मनेक केइ हुवा । तेरह हल्लामें मखो बीसवारतो । मात पीता भिनरावरा । मुगत गया केइ समझित पारतो । न्यां २४ । मूल इकर बे मै क्यो अलप बुद्धि नहीं अकसर ग्यान तो । माफी करी गुनो पगसीए । ग्यानीरा बचन कल प्रमास तो । न्यां २५ । तेसरा सास सुहाबखी । गूपी छे मुनीपतखी गुब मास तो ।

जेपुरभांए जडावने । चरणारो सरण होवो त्रिकाल तो । ज्यां०

दसाणभद्र राजानी ढाल लीख्यंते

दोहा । निमसकार नव पद भणी । होज्यो वारंवार ।
उतराधेन अढारमें । दसाण भद्र इदकार । १ । कैसु ढाल बणा-
यने । सुणजो चित लगाय । हारथां नही सुरपत थकी । टीनो
जग छीटकाय । २ ।

ढाल । कर असवारी राय संचर्यारे । आयो वन मझार हो ।
सुंजाण नर । विरामण इत उत डोलतोरे । भरमायो निज नार
हो । सु० कोइ चतुर वीच्यारी ने चेतजोरे । १ । नरप पूछे तू
किम भमेरे । कहनी थारो भेद हो । सु. हाथ जोडी कहे रायनेरे ।
रुसगया हम देव हो । सु. को. २ । भेद सुणी नृप चितवेरे ।
देखो इणरो राग हो । सु. तिरण तारण बीतरागनेरे । हुं भुल
गयो निरभाग हो । सु. ३ । देव रागी गुरु लालचीरे । खरचे
लाखां कोड ह । सु. गाढी इणरे आसतारे वनमें भटके घर छोड
हो । सु। ४ । नीरागी निर लालचीरे । मारा श्री गुरु देव हो ।
सु. तो हीव ढील करुं नहीरे । जाय करुं ज्यांरी सेव हो । सु. ५
। चतुरंगणी संन्या सजीरे । अंतेवर लेइ लार हो । सु० आडवर
कर आवीयोरे । करवा जीन दीदार हो । सु. को. ६ । हरक
हीणमावे नही रे । धरतो धरमनो राग हो सु. चरण मेटथां जिनरा-

बना हो । मारा मोटा माग हो । सुजाय नर । को ७ । सन
 मुख बेछा बीरनेरे । बोले ब कर ओड हो । सु. माजी मैं किबान
 बंदीपारे । हुस २ करे मुख होड हो । सु को ८ । सक इद्र
 मन धितबेरे । फोगट पर अभीमान हो । सु गरब गस्तु हिम
 एहनोरे । किब बीष रहसी गुमान हो । सु को ९ । देवे सीन्या
 बीसतारनेरे । आप आप्या सुर राय हो । सु आप्या मानव छोकमेरे
 । इल बादल लीपो छप हो । सु को १० । इद्रतबी
 रीष देखनेरे । तुरत पाप्यो भीमतछर हो । सु मल रहे किम
 मापरेरे । छेयु संजम मार हो । ११ । आबो देवा सेवा करोरे
 । सतगो हमारी बोड हो । सु हु रीष त्यागू आपसीरे । पत्नी
 करो मुज होड हो । सु को १२ । या तो सगल न मापरीरे । बे
 मानी मझाल हो । सु० छरपयो संजम लीपोरे । गरब हमरो बीपो
 गस्त हो । सु को १३ । और करो तिमही करेरे । ये सुव
 मस्तक मोड हो । सु. मैं हारयो तुम बीसपोरे । पाए पडयो कर
 ओड हो । सु० को २४ । जन श्री गुरु म्हाबीरबीरे । जन २
 चारी माय हो । सु निज अपराध सुमापनेरे । आपा किब हीस
 आप हो । सु को १५ । तसट सल्ल बडाबजीरे । जेपुर सेले
 छल हो । सु प्रथम चेत गुड़ी सप्तमी करी संपपूज डाल हो ।
 सु को २६ । ओछो इफको जे क्योरे । सुत्र सेवी विरुप हो ।
 सु मीछामी इकड तेहनोरे । कबीजन कीज्यो सुध हो । संग्रास
 को १७ ।

मेगरथराजाकी लावणी लीखंते

देसी गोपीचंद्रा ख्यालरी छे । मंतनाथ भव पाछले सरे ।
 मेगरथ नाम भूपाल । समगत धारीपर उपगारी प्रजानो प्रतीपाल
 । सरणे आयो न मूकीए सरे । लीमी प्रग्या भाल हो । मेगरथ
 माराजा । पर उपगारी तारी आत्मा । धन धन म्हााराजा । जिनपद
 पायो प्रमातमा । आंकणी । १ । सक डंड मोना करीसरे । धन
 मेगरथ राजान । जीव दया ज्यारे दिल बमीसरे देवे सुधात्र दान ।
 दोय देव नहीं सरधीया सरे । आया धर अभिमान हो । मे २ ।
 एक बणयो पारेबडो सरे । कुजो हंमकथाए । लारे लागो आनीयो
 सरे । आगे पखी जाय । मै भिरात मरणा थकी सरे । धसीयो
 खोला माय हो । मे. ३ । धुंजतो ढरू राखीयो सरे । देखिर मारी
 थोट । ततखिण आयो पाग्धीसरे । करना लागो चोट । हलकारा
 सामा हुवे सरे । ले हातामें सोट हो । मे० ४ । धीर पसु
 समजाय धो सरे । नहीं जवरीरो काम । ज्यो चावेमो मागल
 सरे । मत लइणाको नाम । कोल देस्यामू मागीयो सरे । लेले
 हमपे ढाम हो । मे० ५ । भख माहरो पंखीयो सरे । छोडो चक्र
 सुजाण । गणा कसटसु लावीयो । मारे नहीं ढाम सु काम ।
 भूखा मरता वापजीस । मारी नीकल जायली जानजी । मे० ६
 लावो मेवा सुकडी सरे । ओर घणा पकवान । तिरपत होयनेजीम-
 ले सरे । हम बोले म्हीराण । सरणागत किम दीजीए सरे । ए
 मुज जीवन प्राण हो । मे० ७ । नहीं न्यू मेवा सुखडी सरे । नहीं
 भावे पकवान । मंस आहारी कुल आचारी । किम छोह म्हीराण ।

ज्यो नही जोडो एहने सरे । तब डेम्पु मुज प्राणजी । मे० ८ ।
 फांसमंस मगाय दोसरे । छोड हमारी केड । करमा पच पूयापरे
 सरे । मठ कर इहारी छेड । म्हा जीर्णता नही मीनस । ज्यू प्रवत
 अछ तेड हो । मे० ९ । दयावत तू नाम धराय । करमैन्या
 प्रयव । मंस परायो धामसा सर । सरच न लागे अस । कठखा
 कर साचो तुज बाणु । दूनी धारो मंसजी । मे० १० । मली
 बीचारी मोलीयोसरे । मुज इतिहारी बोस । न्यायो कठरी पाछसो
 सरे देड मंस मुज जोस । इस कर हंसक बोलीयो सरे । सेठ
 बराबर तोलजी । मे० ११ । न्यायो राजूतकजी सरे । पंखीघर
 हो मांय । कट २ ने मांस आपरो तकइयो दीयो मरत्य । नमी
 न डांडी दोस्तता सरे । पछी नीचो जण्डी । मे० १२ । देय हमारी
 घर दूसारी और नही मुज बोर । सर लोक सब मेला दुने ।
 करवा सान्या सोर । देय कान कड पा सरे । ए ठग बाजी पोर हो
 । मे० १३ । अतिर बिल बिल करे सरे । राख दासी दास ।
 आयो कठसु पापीयोसरे । कर हमारो नास । सरा लोक सासे
 पड्याम । अब छिमी जीवसरो भाउजी । मे० १४ । बिच
 बिच कीनी पसखा सरे । बलीया नही लीगार । देय रुप प्रग
 वया सरे । सुरजनो बलघर । हाय जोड पार पड्या सरे । बन
 तुम छो अन्तारजी । मे० १५ । सुरपउ प्रसमा करीस । मे मानी
 नही लीगार । अकस्या करवा आपरीस । मै दीनो दुख अगाड ।
 सुबीया जैसा देखीयासरे । लमो लमो मुज अपराधजी । मे० १६
 । दब गया दिबलोस्मै सरे । करवा बै बै कर । संगसयी सुधया

गणासरे । हुवा ज्यो समगतधार । सक इंद्र आगे कह सरे । तुम
साचा मीरदार हो । मे० १७ । काल करीने उपना सरे । सुवारथ
मीध मझार । तेती सागर पूर्ण सुख पाया । तिरथंकर पद सार ।
हथ्यापुरमें संजम लेने । पूंथा मोक्ष मोजारजी । श्रीसंत प्रमूजी
संत करी जे सरवे देसमें । मे० १८ । १९ स तेसठ भलो सरे ।
जेपुरमाए जडाव । फागण सुद पुनम प्रभाथे । सिध जोग गुरुवार ।
वे कर मुगत पद मागे दीजे तुम दीदार हो । मे० १९ ।

उपदेसी लीख्यते

देसी चेतन चेतोरे । चे० दसवेल जगतमें मुसकल मीलीयारे ।
दिल दीली सु चले सोदागर तन मंडलमें आयारे । मोल अमोल
तोल नही । एसी चीजा न्यायारे करो दलालीरे धर्म दलाली
सुत्रमें चाली । जीनमत वालीरे । करो० आंकणी । १ । हितका
हीरा प्रेमका पना । नेमनगीना झालीरे । मन निरमल । चित
माणक मोती समग प्रवालीरे । क. २ । दान सील तप भाव
खजाने । धर रोकडरी थेलीरे । मन मंजूसमें माल भरो । द्यो
मूनकी तालीरे । क. ३ । ग्यान दुकान सडक पर कर जतनारी
जालीरे । गुणकी गादी ततखका तकीया । सत सरापहवालीरे । क.
४ । मूनी महाराजा तपे तकनपर दीपे रुप रसालीरे । ग्यान ध्यान-
रुजगार चन्या । श्रावक लेवालीरे । क. ५ । जसकी जाजम । ग्यान
गलीचो । प्रेमका पडदा रालीरे । साच सीपाइ । प्रमू नामकी
हुंडया चाली रे । ६ । क. । चले दुकान जैनकी जगमें । गयो
अनतो कालीरे । तीन लोककी आरत आवे । दुकान भरी नहीं

वासीरे । क. ७ । सोसठ साल अडाव जेपुरमें । द्वा येत
मम्भरीरे । बिना दाम कोइ मास से जावो । सतगुरु बोपरीरे ।
करो दसासीरे । क. ८ ।

धरजीकी ढाल लीख्यते

राम मेदारी छे । बी और सोखावे बोस पोछडा । महाराजा
सुत्रकी बाखी । सामीजी सुत्र बांचोजी । सुखवानबख्शरी
आंखी । १ । बी और बतावे अलीयां गलीयां । महाराजा
हुगली सेरी । गुबर्बता । २ । बीआ बग्घाट विपम पंच फन्के
। निबसर अलम बैरी । बुबर्बता सु० ३ । बी और बतावे बाग
बनीया । महाराजा सु० बसर्बता ४ । बी और बतावे स्दल
सपाट । महाराजा हुगली सेरी । तपसी १० । और बतावे तीज
वमाथा । महाराजा सु सामी० ६ । बी और बतावे मोग मबानी ।
महाराजा सु बस ७ । बी और बतावे सरह म्बसकी महाराजा
हु । बुच० ८ । बी पूरव सकल पुन्य करीने सेव मीसी गुरु केरी ।
गुब ९ । बी बागायारि सांखी बायांरो लसकर मारी । म्हा०
१० । बी सोसठ साल जेष्ट जेपुरमें पड़इ अरख हे मेरी । सामीजी
सामाअखोजी बायांमें तपस्यां गहरी । गुब ११ । बी ब
कर बोड अडाव करत है । ग्यान देबो हेरी हेरी । तपसीजी हाथ
प्रसोजी । बायांमें तपस्यां गहरी । बुच० १२ ।

देवीलालजीरा गुण लीख्यते

देसी । गहरो फूजो हो हजारा गैरो बागमें हो । बलीपारी
हो हुनीबरजी बारा ग्यानजीजी मनडो मोयो मारो देख ब्य

वराणसीजी । बाणी डमरुत रम परमावे । मुखमुकरमें जीम
 द्रमावे । सुण २ रम २ हुलसावे । व. । आंकणी । १ । संप्र-
 दाय श्री दुरुमनरीजी । श्री श्रीलाल पूज प्रतापी । आत्म मंजममें
 थिर थापी । कुमन क्लेशनणी जड कापी । व. २ । देवी लालजी
 दीवाकर लोफेजी । ज्यारी मरुत सदासिध मोहमेंजी माणक ।
 माणक ग्यान नगीना । बंधव दोनू मात मगीना । चुनीलाल
 जडया जिम मीना । व. ३ । मामी सुमती अराधे । गुपती गोपवेजी
 । निगमल पंच महावन पाले । दोषण अहार तणा मन टाले ।
 जिन मागने जोग उजाले । व. ४ । कोई स्वमत परमत धारणाजी
 । महुनिध आगम अरथ पिछाण । निधसे भिन २ करे वराण ।
 गाले पाखंडआरा मान । व. ५ । ज्यारी जोग मुद्रा हृद सोवणीजी
 थारी सावली परत मनमोदणीजी । देख भवकजिन आणंद
 पावे । निरस्त नैण तिगपत नही थावे । सुरगुरु आप
 हरक गुण गावे । व. ६ । दीपे सवि जिम सीतल
 आत्माजी । नित ध्यान धरे प्रमातमाजी । गुण गभीर दया निध
 धीरा । निज कुल माय अमोलक हीरा । संत सरन प्यारा प्रभूजीरा
 । व. ७ । देखो उडीए पुन्याइ जेपुर स्हर कीजी । मीलीया मुनी-
 वरजीरा त्रिंद । द्रमण मीठा मीश्री रुद । दिन २ भरते डेदक
 आणद । व. ८ । ममन १६ में चोमठ भलोजी । लाग्या
 धर्मध्यानरा ठाठ । तपस्या पायामे गेघाट जडाव जनम मरण दो
 काट । व. ९ ।

मुनीवरजीरा गुण लीख्यते

देसी । प्यारा लागो सुद्रमा स्वामी । मुनी गुण सतावीस
 धारी । नित ले नीरदोषण अहारी । छती रिध सपदा त्यागी ।

११ । प्यारा लागे सँत सोमागी । आंकडी । सतरा मेदी सत्रम
पाळे । नीचो देख देखपग डाले । परमाख बचावख रागी ।
प्या० २ । तप तेज करीने दीपे । सामा आर्षा प्रीसा बीपे । सुरवीर
बडा बेरागी । प्या० ३ । ज्यामै ग्रानादिक गुण मारी । तीरथ
सारख पर उपगारी । सुम ध्यान घरे म्हामागी । प्या० ४ ।
बडाब जेपुरमै गावे । सुख भविकप्रियावे मन भावे । मै तो मुगल
रीजमै मागी । बाला० ५ ।

देवीलालजीरा गुण ली०

देसी । फनम्ही मूढे बोले । बडी पुन्याष्ट सिध सरपनी ।
बंझि करज सरसेरे । म्हर करी मुनीकरवी पधारणा दीली । सड
सेरे । आज रंग करसेरे आज रंग । म्हासो बाखी सुख २ हीबडो
हुलसेरे । आ० आंकडी । १ । पाट बीराज घन भीम गात्र ।
बाखी इमरत बरसेर । स्वाग बूद जिम सारी पुरखदा । भवश
करसेरे । आ० २ । बाबो प्यारी न्यारी २ जिम दरपखमै दरसेरे
। सुख २ भावक प्ररन पूछे । बडी कदरसेरे । आ० ३ । तपस्या
मारी । बहु नर नारी । कर कर कया करसेरे । भव भव संचित
करम छपावे । सिध रमखी बरसेरे । आ ४ । जिन बाखी सुख
सर सख पाव । भव कल पाव उतरसेरे । जेपुरमांण बडाब कहे ।
ओ मन बस करसेरे । आ ५ ।

फका चतीमी ली०

दूहा । सोरठो । बे कर ओड बडाब से सरखो बगनायरो ।
कठ कतीसी फेर । बिगम व्याप दूरा हरो । १ । फका कद कर

चल्यो । लेसी कांड लार । धधामे धायो फीरे । जामी नरभव
हार । १ । खखा खाली जात हे । विगतामें दिन रात । निन
मुतलव बोलो मती । याद करो जगनाथ । २ । गगा चुप रहीजी
ए । दोष पराया देख । जोबो अपणी आत्मा । ओगण भरथा
अनेक । ३ । घघा घर तेरो नही । तूं घरको नहीं होय । घर
घर करता चल गया । राजा राणा जोए । ४ । डडा रडके कांर्रो
। आंख डाढके बीच । कूचन रडके कालजे । कूकर्म रडके नीच
। ५ । चचा चतुराइ करे । सागत निभन कोय । छेडो लेता
सीदडी । मूह कुत्ती जोय । ६ । छट्टा आने राखसी । कितव
अपणा कोए । माडे उगड नावसी । तसकर हुंवा जोए । ७ ।
जजा जुलम करो मती । दुरल दुखीया देख । थिर नहीं समपत
सायवी । बैरी होए अनेक । ८ । भक्ता भक्तु मारो मती । गली
गलीकमांए । लंपट बाजे लोकमे । इजत रहवे नांय । ९ । नना
निजपर आत्मा । एक सरीकी जाण दुख कियने देखो नही । दया
भाव दिल आण । १० । टटा ठालो किजीए । नीच कुपात्र देख ।
मत छेडो पत जावसी । ओगण होय अनेक । ११ । ठठा ठग
ठग खात हे । माल पराया आण । मारी पडसी आतमा । जम लेसी
बिच ताण । १२ । डडा डायो होएने । कीनी काय सयाण । पूंजी
खोइ पाछली । नवी न करी अयाण । १३ । ढढा ढिग वैठा नहीं
। सत संगतमें जाय । धुकतो तोले बाणीयो । ए ओखाणो थाय
। १४ । गणा नेण मुलायने । सब जग लीनो मोए । समपत
बेस्यां सारखी । सुध बुध देवे खोय । १५ । तता तिरणो अपणे
हाथ है । ज्यो सब राखे मन । सतगुरु साखीदार हे पावे सिव

सुख भन । १६ । बषा पापो उठावलो । खिच २ आठ आय ।
 करखो दे सो अबही करले । पाखी अदवीष माय । १७ । ददा
 दोरीनाकरे । दह तप जप मांय । लाखे पीखे पहरखे । सारा पइसी
 जाय । १८ । पषा धनके करखे । मठके बेर ह्वेर । मारे ठग न
 चोरदा । पटक ठ डी मर २० । नना नोपत मरखी पत्र रा
 प्पाठ सुट । पेरो साम्यो कमको । किख बिधि खासी छुट । २१
 । पषा पीडा पारखी । सुखी न जाये कोय । बीते सोय बेदहे ।
 अकरु ज्यो जोय । २२ । फफा फटा फुरा । बदल बीयी
 अनार । तीनू फटा अस्तबुरा । नेत्र कक कुनार । २३ । बषा
 बबजा बावरो । ज्यो बषे कसेस । सैंखो बोले समझ बने । देवे
 हित उपदेस । २४ । ममा मती होत है । निस दिन आठ कर्म ।
 हस्तकी करले आत्मा । ज्यो गल्ली जावे सर्प । २५ । ममा मुरखी
 राखीण । मस्तपिता बड मिरास । तीन बिसेपे बाबीष । दण्डु
 अपखो नाथ । २६ । याया अगमें देखलो । अपखो सगो न कोय
 । सुखमें सब कोमी रहे । दुखमें दुरा होय । २७ । ररा रेखा
 कर्मकी । ठवे हुवा दुखदाय । राजा रंक फकीर औसीया ।
 । सगहुदे सुपशाव । २८ । सहा सेखी मागती । कर्म
 कतेपी बाध । रोपाह नही छुत्सी । सेसी पन्नां ताव । २९ ।
 बग बडा न बाबीण । सूरगी पकर पाट । तससी अदविष सेलमें
 । फेर काडसी छोट । ३० । समा संक राखने । कीबे कम बिचार
 । दिन संक बिगडयां गया । कुसिप कुनार नार । ३१ । बषा
 इस इस बापीया । कर्म निख पित खू । दिन दुगत्यां किम

छुटसी । जासी प्रभव हूव । ३२ । १६ सें अठावने । जेपुर कटले
वास । कका वतिसी करी । दुतिय सावण मास । ३३ ।

देवी लालजीका गुण लीख्यते

देसी । मानव भव लादो राज लादो । भूल मत जाज्योजी
गुरु माने । विसर म० मैं अरज कराछा थाने । भू. । आंकडी ।
१ । जी आठ पहर हिरदामें राखु । चित वसीयो चरणामें । जी०
म्हर करी मुनीवरजी वेगा । दरसण दीज्यो माने । भु० २ । जी
जिनमारगने जोर दीपायो । संपरयो संता में धर्म ध्यानका ठाठ
कराया रंग रंग छे थाने । भु० ३ । जी हरक हीयामें जवइ
होसी । आयां सुणस्या थाने । तेड सरज भलो उगमी । वाणी
सुणस्यां काने । भु० ४ । जी दील दरीयो भरीयो तुम त्रिहे ।
खारो लागे माने । अंतराइ पूरवली आइ । दोस नहीं कोइ थाने
। भु० ५ । जी संत सोभागी मैं निरभागी । याद करे कुण माने ।
जैपुरमांए जडाव अछता । दीया ओलंवा थाने । भु. ६ । जी
खमो २ अपराध हमारा । माफी दीजे माने । खिम्या धमं तुमारो
स्वामी । धन धन सब संताने । भु. ७ ।

समाइकका बतीस दोषरी ढाल लीख्यते

राग । सुण चंदाजी श्री मंधीर परमात्म पास जावजो । ए
देसी । सुणो आवकजी दोष बतीसुं ढाल समाइक कीजीए । चित
लायकजी समता रसरा प्याला रुच रुच पीजीए । आंकणी । १ ।
बिना फैम घरसुं चाले । जीवादिकने नही नाले । ओ इरज्या में

टोटो घालेधी । १ । मु विन पूज्यां आसण धटे । जीव वन
 दब बाए हटे । ए राजतली काढ धेते । सु २ । मोडा आवे
 साज सुमे । इत्यावइ नही पडिकमखे । यो पडिकमखो प्रमाद गम
 । सु ३ । नाम समाएक पदफलए । फण ओगरी खबर नही ।
 या सामायक किश रीत मइ । सु ४ विन फरण इठ ठठ बोले
 । विन मावन मंछ खोले । ० विन पुत्री घरती बोले । सु ५ ।
 आरत छ प्यान भरे । घम सकल कुस याद करे । संसार समुद्र
 केम तरे । सु ६ । मखबो मुखरो नही सुधावे । बाता विगता
 सग बावे । याने सीखता शिछ आव । सु ७ । विन समज
 भाषा बोले । सावज निरवध नही ठोले । ए अश्रमे कीचड बोले ।
 ए केसरमे गोबर गोले । सु ८ । इव समाएक सुच नही । माव
 समाएक मान लए । या विन माता बेटी जए । या पिता विना पुत्री
 बए । सु ९ । एक मोरब नित सब कीजे नरमसरो लावो
 सीजे । मत्ता दुगतीरी सए सीजे । मत्ता दुर्गतरा वात्ता दीजे ।
 सु० १० । बडावडी वेपुरमाइ । हित सिम्प्यारी डाढ कडी । वे
 समज सीज्यो बाइ माइ । कोइ राग वेगरो काम नही । सु ११

पालाणो लीखते

बसी । मारी रंगरली । नेणारी नीद किसनकी इरी । जनक
 विधारव । विसछात्री माण पालखो धंभान गयो इरल ठछान ।
 हीरासास बडयांजी । जुनीलास बडयो । प्रहृषीरो पालखो ।
 अमर पडयो । आंकडी । १ । रतनारो पालखो न रेसम बाख ।

मांए पोढावे प्रभु जीन आण । हरा. २ । सोनारा संवटा ने
मोत्यारी लूम । किलक २ जाणे तोड लेउ झुम । ही० ३ । पन्नारी
पनडी न पाटूरी डोर । रीमजिम २ नाच ग्या मोर । ही. ४ । देदे
हीडोल्या झुलावळलाल । गाव हालरीयान होय रया ख्याल ।
ही० ५ । घन २ तुं तिसलादेजी मात । गोढ खीलाया व्रीभूवन
नाथ । ही० ६ । जेपुरमांए जडाव कहे । दिन उगे प्रभुजीरा
चर्य ग्रिह । ही ० ७ ।

मुनीराजना गुण लीखंते

दोहा । पच पद प्रणमी करी । गोतमजी गुणवंत । गुण करावा
मुनीराजना । मो मन इढकी खंत । १ । देमी । हारे मारी धर्म
जीणद संलागी पूरण प्रीत जोए । जाउ रे हुं जेने घर आसा
करीरे लोए । हारे इण म' मडलमें पूज श्री रतनेसज । हुवारे प्रतापी
। मुत्र केवलोरेलो । हान' ज्यारो नान सण्यो नहीं देख्यां नेण ।
निहालजो म्हमारे मण । हरके रुग्रावलरेलो । १ । हारे ज्यारे
पाट वीराजे पूज श्र 'नेवळजो । सातल माभाग चण्ण वनारे
लो । हाजो ज्यारी म्हर नीजरसुं मोलोय मुन त्रिंदनो । दासे
रे यो स्हर मदा रलीयावणोरे लो । २ । हारे काड घन दीहाडो ।
वडा हमारा भागजो । तीनूडरे सप्रदा समागम एखटोरेलो । हारे
एकलेण वीराजे पाट । पुरखदा ठाठजो । स्मतरे सुव वेला लाग्यो
चोमटोरे लो । ३ । हारे काड सास्त्रधारा वरसे इमरत नोरजो ।
पीतारे त्रिपत नहीं होवे आत्मारो लो । हारे निज श्रवण सुणता
प्रगटे प्रेम वैरागजो । समकितरे नीरमल । प्रखे प्रमातमा रे लो ।

४ । हारे कइ दीपइ जीम कसी गोतम जोइजो । १ । हरि ससिरे
 मानु एक्य मंडलरेसो । हारे काइ प्यार तीरथ बैठ सनमुख
 आए सो । इलीरे पालंडी दूरापी टलेरे सो । ५ । हरि सुखी
 समोप्रबद्धी चरषा मोत बपानजो । तोपिखर हीसे थोडीसी
 बानगी रे सो । हारे काइ तन मन हुससे । देख मुनी हीदारजो ।
 बीगसरे अ ग कषा सुखी गरु ग्यानसो रेसो । ६ । हारे काइ बीमी
 पुरखुदा । उठ सके नहीं कोएजो । आसारे लगइ जिम
 बाजीक म्दनी रे सो । हरि काइ नंदी सूत्रमें सुरता चरदा मेइजो ।
 बु गा जीम वूपे रम बाखो जेइनीर ल । ७ । हारे काइ सरल
 समता । हीसे बोल सुलामजो । गत्र गतिरे बाषामें बाए । फल
 कीपोरे सो । हारे मुनी म्यान गुफामें करता बोइत उपाजजो ।
 माखेरे सादूसो सिध बाइकीपोरे सो । ८ । हारे न्यारी कंठकलसु
 पीयार म्यान मंडारजो । बाबीरे मुहाली कीरनु रे सो । हारे
 काइ परमधीर गमीर गुखरी खानशा । निरमल नीरागी गंगा
 नीरनु रे सो । हाजी बरिरो तप अप संजम अख रहो आचार सो
 । दीपजो जिन धर्म कर्मसु जीतनेरे सो । हार मं तो अमिमानी
 अम्यानी निज हृषाए सो । जिम सिम बी तमिजे सो अवनलने
 र सो । १० । हाजी मैतो कष लम गाठ । गुख अनंत अपारजो
 । मुगलरे पोते जो पार न पामीए रेसो । हाजी मैतो अलप पुषी ।
 अयास मान मद जोइजो । सूस २ रे कर जोइ चरय मिर
 नामीए रे सो । ११ । हरि कइ बिन धर्मरी सदा अलंडत मोत जो
 । रहजोरे सुख साता प्यार सीधमेंरे सो । हांजी काइ बैपुरमाए

जडाव गुंथी गुण मालजो । पहरोजी बुधवंता सोभ अंगमैरलो ।
। १२ । कलसः प्रमाध श्री गुरुदेवजीको । गुणवतारी दासए ।
म्हर कर मुज मुख उपर । दीजै मुगत निवासए । १ ।

मुनीराजना गुण लीख्यते

राग पीचकारीनी छे । सुमत सीख हिरदामैं मेली । कुमत
कुपात्र दुरी ठेली हो । माराजा थारी कीरतडी गरणाइहो देसा छाई
वो० आकडीः । १ । कीरतडी थारी च्यांरु दीस फैली । कोड
जुगां जुग रहलीहो । मा. २ । ज्ञान गुप्त थारो ग्यान अपुरव ।
मीप सुडारुनीमेलीहो । मा. ३ । आतम साधै । प्रवचन अराधः
छोड दीयो प्रमादै हो । मा. ४ । संजम पालो सब दोषण टारो ।
जिन मारग उजगारो हो । मा. ५ । ६४ सालनै भरघोरै भाद्रवो ।
हरक २ गुल गावै होः । मा. ६ । वे कर जोड जडाव जेपुरमें ।
चरणा सीस नमावै हो । मा. ७ ।

सभाय लीख्यते

देसी । जीन रे तुं सील तणो कर सगः जीव रे तुं मत कर
आरत ध्यान । पिन भुगत्यां नहीं छूट सीरे ए निश्चे कर जाण ।
आ. जी. १ । बाधै सोइ भोगवैरे । कर्म सुमासुभ दोए । सुख
दुख रेखा आपणीरे । टाली टल्ह न कोए । जी. २ । हस २ कर्मज
मचियारे । पर भव जाए बलाए । अब तुं आयो सांकडैरे । नास
कठी न जाएजी । ३ । पोपी अपणी आतमारे । प्राण पराया लूट
पडलो लेमी चोगणोरे । किण बिद जासी छूट ।-४ । कर्म करै तु

एकलोरे । सबही नर सुवाए । सुखमें सबको सीरछरै । दुखमें दुरा
बाय । बी ५ । निम्न बाण निकारणरै । छूट्या छ अयसा प्राण
। सब सपने सतावसीरे । फरसी छायाताण । बी ६ । रोयाइ
छोठ नहीरे । कर्म कलेसी आण । काण न राख केहनीरे । छेसी
पल्ला टाय । बी ७ । परफदे आओ नहीरे । उदह दुबा दुख-
दाय । फरक बाण केनसीरे । कोए न आओ बाय । बी ८ ।
येपुरमांए बडावसीरे । छसठ बड बैसाख । हम समजाव बीचनेरे ।
निज आप्तमरी साख । बीच० ६ ।

वीनती लीरूपते

देमी । बग पपारो म्हासपी । बेग पपारो हो म्हा मुनी ।
दीज ब्रम दयाल । तारक विरद बीन्धारने । बेगी फरजो संमाल
। ब आंफरी । १ । गात्र अवाज दुबा बक । हरक दादर मोर ।
इद्रके भाव नहीं । मुइ मचायो सोर । ब० २ । कीनो अमीनय
असातना । हे छ अयारा नाब । पजीण बोमासी ने कमछरी ।
खमाठ ओढी हाथ । ब ३ । मुरख माय माफी करो । अवस
पपारो आप । बालक दुखदुख दुबे । फरक नही मा बाप । बे १ ।
बडा बीचत बडो करे । देखे नहीं परदोष । अकगुण सब अलगा
करे । उपजावे संतोष । ब० ४ । आवसरी आसा पखी । फेर
करे । उपजावे संतोष । ब० ४ । आप्तखरी आसा पखी । फेर
पखे नही छेर । पर उपगारी आप छो । फरसो जेपुर छर । बे०
५ । बोडा में गखी बीनती । मानो धनु सुमाय । जेपुरमांए
बडावन दीजो दरसण आय । बे ७ ।

चनणमलजी म्हाराजाना गुण लीख्यते

देसी प्यारा लागो सुद्रमा सामी । मुनी वीचरत जेपुर
 आया । सारा सतनकुं संग लाया । कर जोडी पढ नित पाया ।
 अथ आणदरग वरसाया । आंरत । भव जीपारे मन भाया ।
 आं० १ । म्हाने वस २ वसाया । इतना मोडा दस दीराया ।
 देखी रोम रोम हरखाया । आ० २ सेवग न कइए विमारो ।
 ऐसो निरध नही छे तुमारो । प्रतिपालक नाम धराया । आ० ३ ।
 कीरपा कर नाणी मुणावो भव २ की तपत मीटावो । नरनारी
 व्होत उमाया । आ० ४ । जडाव जेपुरके माड । दरसणकी दोलत
 पाइ । छामठ साल हरख गुण गाया । आ० ५ ।

पार्मनाथजको स्तवन ली०

देमी पनजी मुडे बोल । भामा सुत पत राख हमारी । हुं छुं
 सेनक थारोरे । भव दुख भंजन । नाथ निगजन । व्रीद वीचारोरे
 । १ । पार्म प्यारोरे पा० एक पलक न विसरु नाम तिहारोरे
 । पा० । आरुणी । तु मुज मान तान बढ भिराना तुं राखव
 सिरदारोरे । तूं प्रमेम सुण अलवेसर । द्रड हमारोरे । पा. २ ।
 काटो कर्म भर्मकी वेडी । जीम हुवे छुटकवारोरे । लीनो गरणा
 चरणको प्रभुजी पार उतारोरे । पा० ३ । आठ पहर हिरडामे
 राखुं ध्यान एक प्रभु तोरोरे । तोड न रीजे भीजे प्रभु । तु निपट
 कठोरोरे पा ४ कामण गारो । जगतसुं न्यारो । मनहर लीनो
 मारोरे । ल्हो चमक जिम प्रीत लगावे । कपटि ठगारोरे । पा. ५ ।

पतली छात्र समे नही पाखी । रह न सके मन मारोरे ।
 बीसपी ठ प नीच केर मोल् । आ संगायत धारोरे । पा० ६ ।
 पाकर पिन हु ख करे पाकरी । पिन पाकर पत केरोरे । हम बाखी
 मोए हात्र राखो । कर काम मलरोरे । पा० ७ । गरु मुख नाम
 मय्यो प्रमु तेरो । अब कीबे दीदारोरे । महर करी मुअ सामी
 सायब । निअर गुदरोरे । पा ८ । सुच पख साबख पहलो प्रमुजी
 । बेपुरखर मबारोरे । छसठ साल अकाल करे निव । मजन
 तुमारोरे पा० ६ ।

जीवाजीरी ढाल ली०

देसी । मैं अमल रोपण लीयो । हारे बीबा दीन गमायो
 खापन । तु तो रात गमाव सोपरे । जनम प्रमादे हारीओ । तु तो
 फटो फलंदर होयर । केत सके तो चेत आ । धारो बीडीया चुगइ
 खत रे । चेत तोन सतगुरु इत्ता देखरे । ये० । आकखी । धारो
 इन्म बय्यो सब स्वारधी । धारो पुन खजानो खतररे । रीतो कर
 छिटकवसी । धारी कोए न पूछे बावरे । ये० २ । हारे याने
 जोग मीन्योरे डस बोसरो तु तो पुनगल मर्म मीन्यपरे । दुलम
 नर भव पामीयो । धारे पडीयो पासे धाररे । ये ३ । अतो
 पाच पची दोह मीली । तीजा मीलीया के पाप अछररे । दगो
 करी धन छु टसी । धारी कूब चढसा बाहररे । ये ४ । तु तो बीस
 क्वाए करपावली । तु तो भावना मन सुच भापरे । समगत सुच
 अराध से । धारो जनम मरख मीट बापरे । ये० ५ हरि बीबा
 मोए निद्रामाण पडो । धारे सतगुरु चोकीदाररे । हेसा देए अगा-

वीयो । तूंतो अण्ड चेत गीणारे । चे. ६ । हारे तोने धर्म
चिंतामण पामीयो फलीयो कलप विरछ चिता वेलरे । ग्यान
दीयो घटमें कीयो । यातो तेल जीतैड खेलरे । चे. ७ । थारे
सरधा सुध परुपणा । यातो किरियामांए कमुर । तीनूड सुध अराध
ले । थारे सिन सुख नही छे दुररे । चे० ८ । ओगणीस वरम
छासटे । वद पर साङ्गमाएरे । जेपुरमांए जडावजी । इस आत-
मने समजाएरे । चे० ९ ।

सुमति कुमतिको चोढाल्यो लीख्यते

ढोहा । देव नमु अरिहंतने । सिध संकल भगवंत । आचा-
रज उवभायने । प्रणमूं संत म्हत । १ । सुमत कुमत ढो'अस्त्री ।
प्रीतम चेतनराय । मांहो माड जगडती । समकित साख भगय ।
२ । राग । कोयल वीलीजी हजारो ढोला वागमे । घर आवोजी
वाइजीरा म्हलमे । ए देसी । सुमती घटमें आवे । या भात २
प्रचाव । पिण मूलदाए नही आवे जीवन । समाजवोजी मारा चेत-
नराजा जीवने घर लावोजी मनमोवन स्वामी जी. । आकणी ।
१ । सुमत सीउ नही लागे । यो ८८ २ ने भागो । या रुपती
प्यारी लागेजी । सम. २ । आठ पहर रग भीनो । ना जाणु काड
कीनो । या भव २ में दुख दीनोजी. । स. ३ । छाने २ आवे ।
या चेतनने भरमावे । आ नरगनीगोद रुलावेजी. । स. ४ ।
पुन खजानो खाती । या पुदगल कर सराती । आ उलटी चाल
चलाती जी० ॥ सम० ५ ॥ या ले कामणगारी ॥ केड ठगीया नर
संसारी ॥ सीखावण दे दे हारी जी० ॥ सम० ६ ॥ धोको दे बिल

मावे ॥ मो मदका प्यासा पावे ॥ आ बंदर जेम नचावेजी० ॥ स०
 ७ ॥ कुमठ लपटा लेती । सुगतीसु घाले छेती ॥ में वेठ सीखावण
 फटीजी० ॥ सम० = ॥ कुमठ कुमटनी कु डी ॥ या पटके दुरगत
 उ डी॥ आ अकल सीखाव भू डीजी० ॥ सस ६ ॥ अडाव जेपुरमें गाव
 ॥ निज जेवनन समझावे ॥ जीत जालमराम रमावे जी० ॥ स १० ॥

दोहा ॥ ठकड मडक कुमटी कहे ॥ करने धाम्प्यां सास ॥ या
 कु ख अह पापसी ॥ तू बठो घर में घाल ॥ १ ॥ बाध्य मागती
 आयने ॥ बख बठी पटनारा ॥ नीकल मसा घर बकी ॥ नहीतर कठ
 सुबार ॥ २ ॥ परखी पिठडो स्याहीयो ॥ पांच पंचारी साख ॥
 मासु किरतवयाणरा ॥ किम बोखे ठचे नाक ॥ ३ ॥ मुख मीठी
 हिरद कडस ॥ नही धारी प्रतीत ॥ बाप माह छोड नहि ॥ फिर २
 हुइ कजीत ॥ ४ ॥ अतन कर सुमती सुखो ॥ कार्य सीखाठ तोप ॥
 मव छडो पत जावसी ॥ खम सोमा होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

घोडो तो अह बाता डममें म्हाराजा ॥ ए देमी ॥ आहलु अरज
 कर्ना जगसी ॥ ननजी ॥ आप दो जतुर सुजाय हो ॥ सुखबंदा ॥
 एसा काम न काजोर माराज ॥ लोक हांसी घर हान्य हो ॥ बुध०
 ॥ कुनव संग छोड दो जतननी ॥ आहली ॥ १ ॥ परखी परखी
 काइन ॥ ये कुमठसु कर रया कलहो ॥ गु ॥ पित बोरी मन
 लेणीया ॥ म्हा इससु रया मन मलहो ॥ पु ॥ ६ ॥ २ ॥
 पा सु बी घुल पुरसीयो ॥ म्हा में सु पुरस्यो तल हो पु दोस न
 दीजे भोरने ॥ पीत परापल बडरो खेल हो ॥ मव० ॥ ३ ॥

कुमतीरा भरमावीया ॥ चे० क्यूं छिटकाड मोएहो ॥ चो० पिन
अवगण पीया परहरी ॥ चे० भलाहनकेसीलोए हो ॥ बु० ॥
कु० ४ ॥ जोड जनमी आपरे ॥ चे० तेतो व्हन कडाए हो ॥ गु०
परीए परणावो एहने ॥ चे० आगी सासरे जाए हो ॥ म० ॥
कुं० ५ । फिर परणाउ' दूसरी । म्हा० समकित छोटी बेन हो ।
गु० । हिलमील रहस्यां दोए जणी । चे० आप उडावो चेन हो ।
गु० । कु० । ६ । कुमतीरी संगत छोड धो । पी० आवो हमारे
म्हल हो । गु० सरगमें सका नही । चे० करो मुगतकी सहल ।

। गु० कु० ७ । ज्यो थारा घरमें पदमणी । पी० तो किम
परण्यां मोएहो । गु० बीना बीच्यारा जे करे । चे० लोग हमाइ
होएहो । बु० । कु० ८ । जडाव कहे जग जे वडा । पी० माने
सुगुरुनी सीख हो । गु० त्रीयामें तीरसी घणा । चे० कारसी मुगत
नजीक हो । बु० । कु० ९ ।

दोहा । म्हो राजानी दीकरी । कुमती एनो नाम । आठ थफी
लारे पडी । छोडां होए कु नाम । १ । बाप भाइने भाणजा । काका
वावा पूंठ । ज्योवा जाए पुकारसी । तो लेसी खजानो लूंठ । २ ।
मती मटावो नाथजी । तुम घर रहो निसक । धरमराएसो कोपमी
तो काडे इणरी वक । ३ ।

ढाल तीजी.

देसी । सीख सुध मानोरे सतगुरुकी । वीलख वदन कुमती
कहे हो । चेतनजी । मारा भव भवरा भरतार । सार अव कीजे
हो । पीतमजी । १ । पहली लाड लडावीया हो । पी० अबकुं तोडो

तार । समस्त सख दीज हो । च । २ । कये हमारे बालता हो ।
 । चे० बे छ्दीय न सोपीकर । सार से बालो हो । पी० । ३ ।
 प्यारी लगती आपने हो । चे० क्यए मुमतीरा काम । नाम
 नहीं सेवो हो । पी० । ४ । मीछी मोहन भीमता है ।
 च० य करता सनग संग । पाग मत खावो हो । पी०
 । ५ । दुग सपारी एलची हो । चे० धारा दरपस रखती
 हाथ । साथ नहीं छोड़ हो । पी० । ६ । रंग म्हात्तमें पौडता हो ।
 । चे० बे करता मनरी बोल । सोरु क्यु लाया हो पी० । ७ ।
 पोपड वासा खेतता हो । चे० में जाती तुमसु बीत । प्रीत नहीं
 छोड़ हो । पा । ८ । बरु बरोखे बालता हा । चे० में रहती
 सदा हज्ज । दूर नहीं खाउ हो । पी० । ९ । गायक था सो उठ
 गया हो । कुमनीजी । खाली पड़ी दुखन । बिग्या मतरुकोहो ।
 ह० । १० । इतना दीन बाखी नहीं हो । ह० पृ बनड में धीर ।
 सीर धारी चूको हो । ह० । ११ । गुरु सुख बाख बडावजी
 हो । च आ करमी रंग बीरंग । संग मत कीजे हो । चे० १२ ।
 सुमत सुपात्र मन्त्रि हो । चे० राखा जिबसु रंग । म्यान रस
 पंज ह । पा । १३ ।

॥ ढाल चौथी ॥

दमी । गोनीचंड लडका ल ल फहीरी तअ द राजन । कर
 ह्मीयारी चेतन मारी । कीयो सील सीखगारी । कर फैयरीया
 उरदोया नव । कुमली बाए पुकरिजी । सुख बाप हमारा ।
 समती भरमायो प्रीतम माणरो । इर नहीं राख्या कोर पाएरो ।

सुण पीता हमारा सु० । आं० १ । मो मछराल दुष्ट इम बोले ।
 करने आख्या राती । देख हगल करुं चेतनमें । धुजावे किम
 छातीजी । सुण सुता हमारी मान मोहू ए चेतन रायरो । सुण
 पुत्री हमारी गरब गालु ए चे० । २ । सात कर्मसु सला वीच्यारी ।
 राखीज्यो हुसीयारी । देखो अग तुम हाथ हमारा । कैसे करा
 खुबारीजी । सुण भिरात हमारा मान मो० ३ । क्रोध मानका दीया
 मोरचा । तिसना तो पधराड । पाप अठारा दारु गोला तोपा दीनी
 भराइजी । सुण० ४ । राग धेग सिन्यांका नायक । लोव मुमाय
 पलारी । कपट उकील तुरत भीजवायो । करो वात सग जारीजी
 । सुण० ५ । पुत्री हमारी केम वीसारी । दुजो परण्या नारी
 । सनमुख आवो । चूक बतावो । देवो सवृती सारजी । सुण
 चेतनराजा पुत्री प्यारीरे मारा जीउसे । ६ । कुमी हमारी परण्या
 नारी । करस्युं मनको जाणयो । हुस हुवे तो चडकर आवो ।
 चुकला नहीं टाणोजी । सुण दुत भुतडा जाजे सुदोरे कहीजे
 स्वामने । ७ । ज्ञानका घोडा घोडा चीतकी चावक । वीनय लगाम
 लगाड । तप तरवार भावका भाला । खिम्या ढाल बधाइजी ।
 सुण नाग हमारा हुटरे चडाड चेतन रायरी । ८ । सत लजमका
 दीया मोरचा । कीरीया तोप चडाड । मभाय पंचका दारु सीसा ।
 तोपा दी वीचलाइजी । सुण० ९ । राम नामका रथ सीणगारथा
 । दान दीयाकी फोजा । हरख भावसे हाथी होदे । बेठा पावो मोजाजी
 सुण० १० । साच सीपाइ पायक पाला । सवरकी रखवाला
 धर्मराय का हुकम हुवा जब । फोजा आगी चालीजी । सु० ना०

धर्मराय तो भाग बाणी । पाछे चतन राजा । म्होराएकी फोज
 हटाय । बाने बसक्य बाजाजी । मु० ना० १२ । कम्पर या सो
 कम्पय सागा । सेठ सुरा धीरा । हुमती हुमसाणी हम मोले ।
 मरपां बाप ने बीराजी । सुख नाथ हमारा । भास टूटी नीसासा
 नाकनी । १३ । तीरब चारु तीर चलाया । सबबा २ सखशात्रा
 । मरपो मादलीयो । गोठ बीखरी बरतय सुखसाठाजी । सुख नाथ
 हमारा बीत हुडरे चतन रायनी । १४ । पहला हसीयो म्होम्हीपतने
 पछे सल्लु मध । बीपय बीनी बरमरायजी । फेरी सरब दुबधनजी ।
 सुबना । १५ । कर्म हसीने केवल पाया । सुगत गया तठक्य
 । बडाव कडे ममती चेत नर । बरस्यां मंगल मासजी । वें सुबो
 मव बीना । सुमती बरापो गुफती गोपबो । १६ ।

। कन्तस सुमत हुमत नही बह कीनो । नही लीबाप्यो
 पीर । असत कलपना सबंध बोडी । समजापो नीज बीबए ।
 । स । १ । द्यसटसास । चोडाएल बोडी । जपुर चर मबराय
 तृतीए साबब सुच पखनी । तेरसने स्वीबराय । ते २ ।
 अकसर पदक्य डाख गाथा । बीना बीबारो कोरये । आपो
 वे तो तियराय बोणे । मीळया हुकड मोरये । मी ३ ।

॥ राखीको स्तवन लीख्यते ॥

देसी । गोपीचद्रा क्पास्ती छे । समगत साची बेन माबजी
 । केवल सोम्पो बीर । तीज राखडी बाबसी । मारे क्पास्ती
 सन्यां बीर । सतक्य सल्लु बाटसु । बीमाठ छाया खीररे । मरा
 केवल बीरा इस २ नांय मारे राखडी । बांकसी । १ । रक्यांकी

राखी करु सरे । तपस्यांका नारेल । संमताकी सुपारी मेलुं ।
 लूग एलची फेर । चुंप करीने चोपडो सधर ल्याउ न करुं देररे
 । मारा के० २ ।। एमी संजोउ आरतीसरे । करुं सील सिणंगार ।
 पहर ओडने पीयर जाउं । केवल वीरो लार नेम धरमकी नावतीराउं
 वेठ उतर जाउं पार रे । मारी समगत वाइ चाल मीलाउं भुत्ती
 माएसे । ३ । धीरजकी धरती करुसरे । चारीत चित्रभाल ।
 दया दलीचो गुणकी गादी जेणां जाजम ढाल । मंगल घाउं वीर
 वदाउं । भर २ मोत्यां थालरे । मारा के० नीत नीत आवो मारे
 धारणे । ४ । समज सार सेवा बट्टसरे । वीया वीवेक बीच्यार ।
 समरसीरो लापसी सरे । ग्यान धीरत गुणकार । आट करमको करु
 चूरमो । मइमा मग दस बाररे । मा० ५ । खीम्यारी करु खीचडी
 सरे । संजम चावल दाल । गुपतिका गूजा भरुं स रे ।
 करणी करु कसार । जीमें मारा भाइ भतीजा । सुमती को
 परवाररे । मारा. ६ । ऐसा बांदो राखी फुदा । तीलक चडावो
 सीस । पांच ग्यानकी मोर असरफी । वेनड दे आसीस । दान
 सील तप भावानास । कोइ पूरो मन जागीसरे । मारा. ७ । वेन
 भायांरी अविचल जोडी । कदीयं न होए बीजोग । मीली २ ने
 बीछडे सरे । ए करमारो रोग । अविचल थान सुगतपद पावो
 । कदीय न करणो सोगरे । मारा. ८ । ओगणीसें वरसं छासठ
 सरे । जेपुरमें वरसाल । दूजे सावण सुद पख पुनम । करी
 संपूरण ढाल । जडाव कहे ए भाव राखडी । करता मंगल
 मालरे । मारा. ९ ।

॥ च्यार सरणा लीख्यते ॥

दास्त इद्रसुतीजीरो लीखे नाम । परसा मंगल भरिहंत देव ।
 चोसठ इद्र सारे सेव । मज्जो दीखायो सुगती पथ । सरथ तुमारो
 भरिहंत । १ । चोत्तीस अतसें पांजीस पाव । सदा सासतो केवस
 नाथ । पाती कर मारो कीपो अंत । सरथ २ । राज वजी म्हा
 भरत लीया । दोष अठाग दूरा कीया । पारे दीपे मगर्त ।
 सरथ ० ३ । समोसरबाकी रचंना मली । देख्यकी आवे मन
 रली । दस सख केवली सो कोडी संत । सर ३ । जगन तीर्थ
 कर बीस कया । ठठकट्य सब राखो मया । सेवमने वारो पर
 संत । सर । ४ । मंगल दूखो । वास्त मंगल देसजरे । राजगीरी
 नमरी मली । दूजे मंगल रे । सिध अस्त गुख माजीया । अट्ट
 ओ गुबारे । बेतमें ओत बीराजीया । केवस म्यान बरे । लोका
 लोक प्रकसीया । लोक लोक प्रकस कीनो । नही कोइ आत्म
 बाध । आठ करम लुपाए सीधा । सेवो सरथ सुबाध ५ । से
 १ । तीजो मंगल । वास्त आदप आद । आद जिखे सई । ए
 वास्त छे । तीजप तीजप साध अंततो । गूख सतछस दीपताए ।
 साधप साध सुगतनो पथ । कट्य परसा बीतताए । बीपर ५ २
 आरब देसके आप तीर परतारवाए । उलाखो बीचरे आरब देस
 माई । दीपावे जिब धर्मने । सिम्या आप संतोष संजम । लोहे
 आई करमने । लोहे । विने अरुभी ज्ञान लीजे । दीजे सुपाव दान
 ५ । दसा मुनीको सरब सेता । पावे अविचल धान ५ । पा.
 १ । चोयो मंगल । वास्त दूखो मंगलरी छे । चोयो मंगलरे परम

दयामें भाखीयो । भव जीवारे सेठो हीयामें राखीयो । अणु कंपारे
समकित लकसण जाणीए । करुणा कररे धर्मी पुरस पीछाणीए ।
लीजे पोखधरे कीजे खतम खामणा । च्यारु सरणारे पलक पलकमें
लीजीए । अभए सुपात्ररे ।, सब प्राणीने दीजिए । उ, अभए
सुपात्र दान मोटा । केनली भाख्यां दोएए । जेपुरमांए जडावकु
। सरणा नित नित होए ए । स. १ ।

श्री मंधीरजीरो स्तवन लीख्यते

देसी गुजराती तागारी. । धन धन खेव वीदेह प्रभुजी जडड
बीराजे सायब श्री मींद्र हो राज म्हा राजा । जठ, वारे पुरखदारा
ठाठ । प्र. नाटक नाच देव पुलंदरुं हो राज । म्हा. १ । सीरपर
बीरख आसोक प्र. फीटक सिंघासण पगतल छाजतो हो राज
। म्हा. २ । बाणीरा धुकार । प्र. जाणु भार्दवो गहरो गाजतो राज
म्हा. २ । सुण समज भव जीव । प्र. देखी पोखडी दूरासु ला-
जता हो राज । म्हा. ओडी मूल मीथ्याते प्र. हाथ जोडीने
सेवा साजता हो राज । म्हा. । ३ । दरसणीरी अवीलाख । प्र.
दाणी पुणवाने तसे जीवडो हो राज । म्हा. । हुं छुं अधम अनाथ
। प्र. भाग बडाने मीलसी पीपडो हो राज । म्हा. ४ । नही
जाणुं तुम माग । प्र. सनन मुख आइने सेवा किम करुं हो राज
। म्हा. मारग ओगट घाट प्र. नदीए पूराणी । पाणी किम
तीरु हो राज । म्हा. ५ । वालम रया परदेस । प्र. सार सेवगनी
बोलो कूण करे हो राज । म्हा. हाजरने दीया तार प्र. दूर रहेसो
कोनी किम तीरे हो राज । म्हा ६ । इच्छा हमारी एम । प्र.

बाँय पकड़ने न्याठ माफने हो राज । म्हा राजा पर्व म्हालीने रह
 या फने हो राज । म्हा अपर्छदो बननीस । प्र दुरबल हो-
 मागीरी सन्या आपने हो राज । महा० ७ । खमन्यो भुव
 अपगव । प्र० माफी करीने मानो बीनती हो राज । महा० नहीं
 मागू रुजगार प्र० सिब सुख दीखे डील करो मती हो राज ।
 महा । ८ । सबसुन साल रमाल । प्र समत १६ से जेपुर
 सहरमें हो राज । महा बे कर जोड बडाव । प्र गाढ़ सावख सुद
 ठंडी सहरमें हो राज महा । ९ ।

श्री मधीरजीरो स्तवन ली०

। देसी क्षेत्र विदेह बीगभीपाजी कांइ भो मित्र जिनराए
 । श्री मरुत क्षेत्रमें में बस्याजी माधु आयो किय विद बाप । जी
 गुणवता प्रमूवी । मा पर महर करीन्योबी राज । किरपा कर दर
 सब दीजोबी राज । आरुणी । १ । प्याठ तीरव आपरबी कड
 । कड नेडा कड दूर । जी कड मानइ गीसतीमें गीसो हो राखो क्यू नी
 बमूर । जी २ । नग यात्र नेह गहोबी । थोरे दूर न आव
 दाय । दोस नहीं प्रभु आपरोबी । मार पोतारी अ न्तरायबी । ३ ।
 गुणवताने तारस्योबी । नहीं इदक्यरो काम । पापी पार ठसरसो ।
 पारा रहसी जुगा जूग नाम । जी ४ । आठ पहर हीरदामें राखु
 । मूछ नहीं खीस मात । दरसख किम देखो नहीं । या इपरज-
 वाली बात । जी० ५ । रोगादी मुदर्या तिरहाबी कांइ । अनम
 मरबकी जोड । भारत छत्र आवे नहींजी कोइ ऐसी बसामो

ठोर । जी. ६ । सडसट साल सखा वणीजी । कहे जेपुरमांए
जडाव । और कलू मागूं नहीजी । थारा दरसणरो गणो चावजी । ७ ।

उपदेशी लीख्यते

। देसी तूह २ याय आवजी द्रदमे० जोयोजो ज जगतका तनक
तमासा । हे तन, जूठ सव आंसा हे तन, सपन के सारासा जोवो
आं. १ । देहथ लेजो परण पदारो । दे. अदवीच होए गया जंगल
वासा । जो. २ । पूरे मासे पुत्र जालायो पू. भूम पडंता नीकल
गइ सासा हे भू. जो. २ । पावडीए चडता गिर पडीयो । उड
गया हस पडी रही आसा । हे उड गया हंस धरी रही आसा ।
जो. ३ । जुगत करी जीमणने वेठो । भू. रह गया हाथका दाथमे
गाग्य हे० ४ । कार्या माया वादल छावा । का. गले मीले जिम
पाणी पतासा हेग. ५ । अंतकाले एक सरण धरमको अं. प्रभूजी
समर ले सास उसासा हे प्र. ६ । जो. कह सडसट साल जडाव
जेपुरमें । कहे. देख देह मोए आमत हासा दे दे. जोजो. ७ ।

पुज्यजी महाराजका गुण लीख्यते

देसी कूण नाणे पराया मनकी । मनकी तनकी लगनकीजी
कुंण जाणे पूज थारा मनकी । आकणी । मैं अरज कराछा थाने
अब दरसण दीजो मानेजी । कूण. ११ । थे ग्यान गेले होए आजो ।
थाका सीरब संग लाजोजी. कूण. २ । थाने चार वरस होय
आया । माने व्रस २ व्रसायाजी कूण. ३ । कांइ आप बड़ा उपकारी

करबीमें कतर हमारीजी कु ४ कांर वारक बीरद बीवारो ।
 मारा अकगुस मतीय बीवारोजी । कु ५ । मैं गुनेगार क पारा
 ये मज्जत वारकहाराजी कु ६ । मेंबाड माझरो प्यारो । जेपुर
 किम हागे खारोजी । कु ७ । ये समी सरीखा राखो म्दाने
 एक नीत्रर कर आको जी कु ८ । पारा दरसबकी बलीहारी
 बाने पाद कर नरनारीजी । कु ९ आये पुत्र या ९ । वन बाणु
 कीरपा भारी । पूरीत्रे भास हमारीजी । कु १० । बडाव जेपुर
 के मद्र । नित करुं दरसब तापजी । कु ११ । इतिरूप्यं ।

। चौवीसी लील्यते ।

दे प्रमत्त ठठ श्री संत बीरद क इरक २ गुण नाठ । रीखव
 अन्ति संमद अमिन्दब । सुमत परम ठर प्याठ । सुपारसर्षद
 सुवच सीतल जी । करबा सीस नमाठ । प्र १ । ईस वासजी ।
 बीमस अकत जी । धर्म संत दीस प्याठ । कु १ अरीमसी बुनि-
 सोर तबीक । दरसब नित ठठ नाठ । २ । नमी नेम पारस म्हा
 बीरबीरी । तिरपर आंश बराठ । अरमान गुणपर गुणमात्ता ।
 वफा पाप पुत्ताठ । प्र ३ । सब समुद्र में ममठी पाद । कर्म जा-
 ठाठ । हाक इह सतगल उपपारी । आत्मा पार पोछाठ । प्र ४ ।
 खु भी कर्म कीच में प्रहजी । उनस कीच बीच नाठ । नी जेपुर
 माए बडाव कइत हे । तुम गुण सागर नाठ । प्र ५ । इति